Government of Telangana

Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation

When abused in or out of school.

To save the children from dangers and problems.

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY 24 HOUR NATIONAL HELPLINE

When the children are denied school and compelled to work.

When the family members or relatives misbehave.

1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

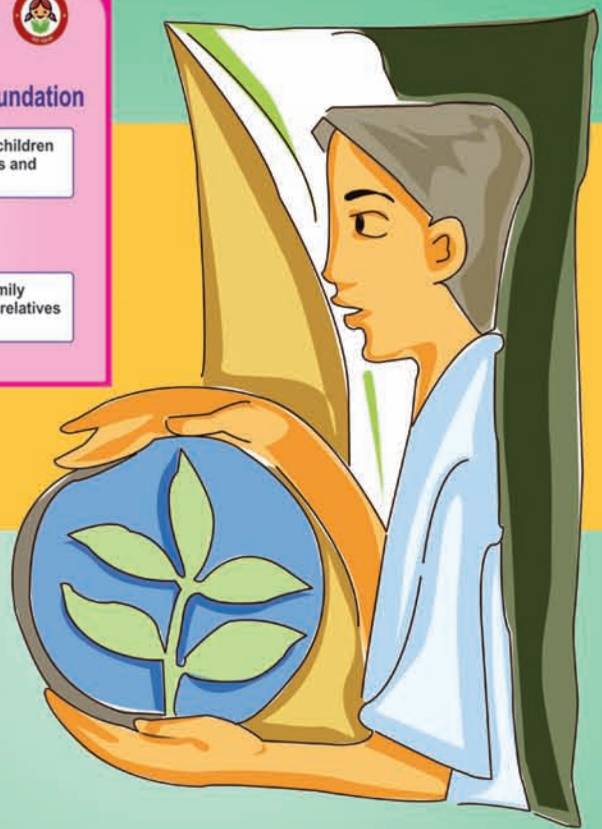

VIII Class Hindi First Language

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

FREE

बाल-वसंत -3

कक्षा आठवीं
प्रथम भाषा हिंदी

Hindi First Language
VIII Class

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

SCERT TELANGANA

बच्चो! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* पाठ व अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। इनके अतिरिक्त 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण का चित्र दिया गया है। इस चित्र के माध्यम से आप सबसे पहले संज्ञा शब्दों, क्रिया शब्दों और सोच-विचार के वाक्यों द्वारा चर्चा करनी चाहिए ।
* हर पाठ में 'सुनिए-बोलिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार के देने चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे आपकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'पढ़िए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। पढ़ो अभ्यास का उद्देश्य आपमें पढ़ने व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है।
* हर पाठ में 'लिखिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए। इसे हम 'स्वरचना' भी कहते हैं। आपको अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करना चाहिए।
* हर पाठ में 'शब्द-भंडार' व 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे आप व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।
* हर पाठ में 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक, लिखित अथवा प्रदर्शन (अभिनय) के रूप में देने चाहिए जिससे आप में भाषा का सृजनशील विकास होगा।
* स्वमूल्यांकन के लिए 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' शीर्षक से एक तालिका दी गयी है। आपको अपनी भाषाई क्षमता की जाँच स्वयं करनी चाहिए।

पाँव हैं नन्हें तुम्हारे
हलका तुम इन्हें न समझो।
सवालों के बादल पर चढ़कर
बूँदें तुम ज्ञान की चख लो।

अब शिक्षा है हर बच्चे का अधिकार।
क्योंकि अब आ गया है शिक्षा के क़ानून का अधिकार।।

SCERT TELANGANA

बाल-वसंत - 3

कक्षा - 8 हिंदी (प्रथम भाषा)

Class-8 Hindi (First Language)

संपादक

प्रो. टी.वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली
असोसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

सलाहकार

श्री सुवर्ण विनायक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
हैदराबाद

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त भाषाविद,
भारतीय भाषा आधार पत्र संपादक,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद,
हैदराबाद

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस. याडारम, मेड्चल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, हैदराबाद, तेलंगाणा

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्री ए. सत्यनारायण रेड्डी
निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
हैदराबाद

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विभाग,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
हैदराबाद

श्री बी. सुधाकर
निदेशक,
सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस,
हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से बढ़ें।
विनय से रहें।

क़ानून का आदर करें।
अधिकार प्राप्त करें।

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana State, Hyderabad.

First Published 2013

New Impressions : 2014, 2015, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana State.

This Book has been printed on 70 G.S.M. SS Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by T.S. Government 2020-21

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana State.

— o —

SCERT TELANGANA

आमुख

बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप से करते हैं। इस बात के अतिरिक्त व एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई-2009, ए.पी.एस.सी.एफ-2011 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यपुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सुझाती है कि बच्चों के जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने के प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये क़दम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सिखाने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह और समय की आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गयी सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों को अनदेखा किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सृजन और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनायें, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक़ का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हक़ीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनःनिर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री तथा सुवर्ण विनायक और पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसाइटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है। एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस पाठ्यपुस्तक के विकास में अनेक विद्वतजनों का सहयोग प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्राप्त हुआ है। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इस पाठ्यपुस्तक में जिन लेखकों और कवियों की रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं, उनके एवं उनके प्रकाशकों के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता में सुधार हेतु राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद आपके सुझावों का स्वागत करेगी।

निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा

SCERT TELANGANA

शिक्षक से...

- यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर तैयार की गयी है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। यह भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है।
- पाठ्यक्रम के चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। इसके लिए भाषा-शिक्षण की प्रचलित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, बाज़ार, इतिहास इत्यादि के प्रति विद्यार्थी को जिज्ञासु बनाने का प्रयास किया गया है, क्योंकि भाषा की भूमिका सर्वत्र है।
- हिंदी में अनेक बोली-भाषा और क्षेत्रीय प्रभावों का समावेश है। ये भाषा संसार के पोषक अंग हैं और धरोहर भी। इसलिए पाठों में आंचलिक पहचान के साथ लोक प्रचलित शब्द, मुहावरे, क्षेत्रीय परिवेश आदि का चित्रण है।
- पाठ्यपुस्तक के सोलह पाठों में विविध विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। इनके अतिरिक्त केवल पढ़ने के लिए दी गई पठन सामग्री का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक की सर्वांग आपूर्ति करना है।
- इस पाठ्यपुस्तक में मुद्रण एवं टंकण की दृष्टि से विविध प्रकार की प्रचलित पद्धतियों का प्रयोग किया गया है ताकि छात्र इनसे भी अवगत हो सकें।
- **कबीर की साखियाँ, सूर के पद** और **सुदामा चरित** जहाँ भक्तियुग के लोकप्रिय काव्य के उदाहरण हैं तो सुमित्रानंदन पंत की कविता **बरसते बादल**, रामनरेश त्रिपाठी की कविता **अरमान,** भगवतीचरण वर्मा की कविता **दीवानों की हस्ती** आधुनिक कविताएँ हैं। इनका उद्देश्य विद्यार्थियों में अन्य भाषाओं के साहित्य के प्रति रुचि एवं सद्भाव का विकास करना है।
- कबीर की साखियों में स्वबोध, सूर के पदों में वात्सल्य, 'सुदामा चरित' में मित्रता, 'बरसते बादल' में प्रकृति सौंदर्य व प्रेम, 'दीवानों की हस्ती' में देशप्रेम व उत्साह तथा 'अरमान' में सेवाभाव आदि मूलभाव निहित हैं।
- कहानियों में कामतानाथ की कहानी **लाख की चूड़ियाँ** शहरीकरण और औद्योगिक विकास से ग्रामोद्योगों के उजड़ने की पीड़ा को चित्रित करती है। यह कहानी नाते-नेह में रचे-बसे गाँवों के सहज संबंधों में बिखराव और सांस्कृतिक ह्रास के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है। इस्मत चुगताई की कहानी **कामचोर** में ऊधम मचानेवाले बच्चों से होनेवाली परेशानी की रोचक प्रस्तुति है। कहानी **बाज और साँप** एक बोधकथा है जिसमें गहरा सामाजिक सरोकार है।
- सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचना **बस की यात्रा** यातायात की दुर्व्यवस्थाओं पर व्यंग्य करती है। अरविंद कुमार सिंह के निबंध **चिट्ठियों की अनूठी दुनिया** में संवाद माध्यमों की विकास यात्रा का रोचक विवरण है। ललित निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध **क्या निराश हुआ जाए** विभिन्न दुर्व्यवस्थाओं और चारित्रिक मूल्यों की गिरावट के बीच सकारात्मक तथ्यों को रेखांकित करता है। प्रदीप तिवारी के निबंध **जब सिनेमा ने बोलना सीखा** में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध मूक सिनेमा के सवाक् सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है जो शिक्षा की नज़र से भी अर्थवान है। सुप्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ की अंग्रेज़ी से अनूदित रपट **जहाँ पहिया है** में स्त्री-सशक्तीकरण का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। रामचंद्र तिवारी का कथात्मक निबंध **पानी की कहानी** हिंदी में विज्ञान विषयक लेखन का एक उदाहरण है जिसमें पानी का मानवीकरण करते हुए उसकी विभिन्न अवस्थाओं का विवरण दिया गया है। 'केवल पढ़ने के लिए' में एक सामान्य व्यक्ति के अदम्य साहस और कार्य को रेखांकित करती रोचक जीवनी **पहाड़ से ऊँचा आदमी** है।
- विद्यार्थियों में शब्दकोश देखने की प्रवृत्ति का विकास करने व उनकी अर्थबोध संबंधी कठिनाई के निवारण हेतु पाठ्यपुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है।
- 160 शिक्षण कार्यदिवसों को दृष्टि में रखकर इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है।
- आकलन के लिए निरंतर समग्र मूल्यांकन प्रविधि का उपयोग किया जाए।
- पुस्तक में चार इकाइयाँ हैं। कुल सोलह पाठ हैं। प्रत्येक इकाई में चार-चार पाठ हैं। प्रत्येक इकाई के अध्ययन के दौरान एक-एक रचनात्मक आकलन हो। दो इकाइयों की समाप्ति पर एक संकलनात्मक/सत्र परीक्षा का आयोजन हो। प्रत्येक वर्ष में कुल दो संकलनात्मक/सत्र एवं चार रचनात्मक परीक्षाएँ आयोजित होंगी।

SCERT TELANGANA

- पाठ का अध्यापन करते समय 'प्रस्तावना प्रसंग' से 'क्या मैं ये कर सकता हूँ' तक समान महत्व दिया जाये। इन सभी अभ्यास कार्यों को छात्रों द्वारा ही करवाया जाये। अध्यापक केवल मार्गदर्शन करें।
- सभी बच्चों की सहभागिता का विशेष महत्व है। छात्रों की विविधता को ध्यान में रखते हुए उन्हें सहभागिता के अवसर मुहैया कराएँ। बच्चों को विविध संदर्भों के विषय में बातचीत के अवसर दें। उनसे प्रश्न पूछें। उन्हें भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों ही प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग करें जिससे छात्रों में सहभागिता एवं सहयोग की भावना का विकास हो।
- **प्रस्तावना प्रसंग** का शिक्षण में विशेष महत्व है। ये प्रत्येक पाठ के आरंभ में सचित्र दिये गये हैं। प्रस्तुत प्रस्तावना प्रसंग के प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करवाते हुए पाठ के शिक्षण का आरंभ करें। यह मौखिक होना चाहिए।
- प्रत्येक पाठ में **परियोजना** है। इसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार करना है।
- **'क्या मैं ये कर सकता हूँ'** में बच्चा स्वयं अपना आकलन करे, जिससे वह अपने सीखने के विकास से अवगत हो सके। अध्यापक इससे उसके सीखने में आने वाले अवरोधों के विषय में जानकर सुधार के प्रयत्न कर सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तक में अभ्यासों के उद्देश्य स्पष्ट करने हेतु अपेक्षित कौशलानुसार अभ्यास-कार्य दिए गए हैं। प्रत्येक अभ्यास क्रियाकलाप संबंधित कौशलों के विकास के साथ-साथ बालक को सोचने का अवसर प्रदान करता है। आठवीं कक्षा में अपेक्षित कौशलों को सात बिंदुओं में विभाजित किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

सुनिए-बोलिए- इस कौशल का उद्देश्य बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना है। यह अभिव्यक्ति बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। अतः इस कौशल के अभ्यास में पाठ के संदर्भों पर बालक को विविध दृष्टिकोणों से सोचने और अपनी बात कहने का मौका मिले।

पढ़िए- इस कौशल का उद्देश्य विद्यार्थियों को पाठ बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित करना है जिससे वे पाठ को बेहतर समझ सकें, साथ ही वाचन कौशल का विकास भी हो। ध्यान रहे कि वाचन से अभिप्राय है- भाव समझते हुए पढ़ना।

लिखिए- इसके अंतर्गत बच्चों की लिखित अभिव्यक्ति के विकास पर ध्यान दिया जाए। यह अभिव्यक्ति भी बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। इसमें बच्चे के स्वलेखन की झलक हो। बच्चा जो कुछ भी किसी तत्व के बारे में जानता हो उसे वह अपने शब्दों में शुद्ध, मौलिक व सुव्यवस्थित रूप में लिख सके।

शब्द भंडार- इसका उद्देश्य शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि के संदर्भोचित प्रयोग की योग्यता का विकास करना है।

भाषा की बात- इसका उद्देश्य छात्रों को भाषा संबंधी नियमों के बारे में जानकारी देते हुए उनमें भाषिक संरचना की समझ का विकास करना है।

प्रशंसा- इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सके। ज्ञान के सटीक व संदर्भोचित सामाजिक उपयोग करने की योग्यता उत्पन्न करना इस कौशल का उद्देश्य है। वह प्राप्त ज्ञान के महत्व को समझते हुए उस ज्ञान के प्रति प्रशंसा का भाव रख सके।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति- बच्चों में कल्पनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न दक्षताएँ निहित होती हैं। उन्हें अपने विचार मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे अपनी खुद की कहानियाँ, गीत, संवाद, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचनाएँ, विज्ञापन, नाटक आदि का सृजन कर सकें। पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, चर्चा, भाषण आदि बच्चों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को इंगित करते हैं।

शिक्षकों से आशा है कि वे पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करेंगे और आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे। परिषद पुस्तक के परिष्कार हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत करेगी।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्ल कुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम वतन हैं, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्तियाँ (LEARNING OUTCOMES)

हिंदी (HINDI FL)

कक्षा - आठ (Class-VIII)

बच्चे--

- विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे-पाठ्यपुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई सालिम अली की किताब पढ़कर चर्चा करते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनाते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों जैसे-जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं, जैसे-अपने मोहल्लों के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना।
- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे-अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं- रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती?
- विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यपुस्तक की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष विषयों को खोजते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।
- विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- किसी पाठ्यपुस्तक को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे-शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।
- पढ़ने और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते /अभिव्यक्त हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे-कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे-स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फ़िर अपने गाँव के मेले के दुकानदारों से बातचीत।
- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन ने विविध तरीकों से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे-सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि।
- विविध कलाओं, जैसे-हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे-कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति।
- अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं, जैसे- कविता, कहानी, निबंध आदि।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस याडारम, मेड्चल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा राज्य

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, तेलंगाणा राज्य

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
पाठशाला सहायक हिंदी,, एस.आर.जी.,
जी.एच.एस. (जूनियर कॉलेज़),
भुवनगिरि, नलगोंडा

सुश्री ऋतु भसीन
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस दोड्डि अलवाल,
मलकाजगिरि, रंगारेड्डी

श्री मोहम्मद सुलेमान अली 'आदिल'
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक
जी. एच. एस. फॉर डेफ एंड डम,
मलकपेट, हैदराबाद

श्रीमती जयश्री लोहारेकर
जी.एच.एस. काचीगुड़ा,
हैदराबाद

डॉ. एम. गोपीनाथ
जेड.पी.एच.एस. कुरुपम,
विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
जेड.पी.एच.एस. कुरमेड, नलगोंडा

के. रघुवीर गौड़
डाइट, करीमनगर

ले आउट & डिज़ाइन - श्री कुर्रा सुरेश बाबू एम.ए., एम.फिल., बी.टेक.

SCERT TELANGANA

विषय सूची

इकाई	क्र. सं.	पाठ का नाम	विधा	माह	पृष्ठ सं.
I.	1.	बरसते बादल	कविता	जून	01
	2.	लाख की चूड़ियाँ	कहानी	जून	07
	3.	बस की यात्रा	व्यंग्य	जुलाई	14
	4.	दीवानों की हस्ती	कविता	जुलाई	21
	उपवाचक	खेल जहाँ, मैदान वहाँ	कहानी	जुलाई	27
II.	5.	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया	निबंध	अगस्त	31
	6.	अरमान	कविता	अगस्त	38
	7.	कामचोर	कहानी	सितंबर	42
	8.	क्या निराश हुआ जाए	निबंध	सितंबर	50
	उपवाचक	थैंक्यू निकुंभ सर	कहानी	सितंबर	57
III.	9.	कबीर की साखियाँ	कविता	अक्तूबर	60
	10.	जब सिनेमा ने बोलना सीखा	निबंध	अक्तूबर	64
	उपवाचक	दो कलाकार	कहानी	अक्तूबर	70
	11.	सुदामा चरित	कविता	नवंबर	74
	12.	जहाँ पहिया है	रिपोर्ताज	नवंबर	79
IV.	13.	पानी की कहानी	निबंध	दिसंबर	87
	14.	हमारा संकल्प	एकांकी	दिसंबर	96
	15.	सूरदास के पद	कविता	जनवरी	102
	16.	बाज और साँप	कहानी	फरवरी	106
	उपवाचक	पहाड़ से ऊँचा आदमी	कहानी	फरवरी	113
		शब्दकोश			115

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इस पाठ्यपुस्तक द्वारा अपेक्षित दक्षताएँ

सुनना-बोलना
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, आत्मकथा आदि में कही गई बातें अपने शब्दों में बता सकेंगे। उनके बारे में चर्चा कर सकेंगे।
- ज्ञात विषय के बारे में चर्चा कर सकेंगे। उसके पक्ष-विपक्ष में अपना मत रख सकेंगे।
- संदर्भानुसार बातचीत कर सकेंगे। अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।

पढ़ना
- अपने स्तर की कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि का उचित आरोहावरोह के सस्वर वाचन कर सकेंगे।
- अपने स्तर की कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि का मौनवाचन कर सकेंगे।
- अपने स्तर की कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि पढ़कर उसका भाव समझ सकेंगे। भाव स्पष्ट कर सकेंगे। समान भाव की अपठित सामग्री पढ़कर तुलना कर सकेंगे।
- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकालय की पुस्तकें आदि पढ़ने में रुचि लेंगे।

लिखना
- ज्ञात विषय के बारे में लिख सकेंगे। अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से लिख सकेंगे।
- पढ़े व सुने हुए विषय (पद्य व गद्य) का सार लिख सकेंगे।
- पढ़े व सुने हुए विषय (पद्य व गद्य) का विस्तार व व्याख्या लिख सकेंगे।
- अपने लेखन में विराम-चिह्नों का समुचित प्रयोग कर सकेंगे।
- बिना किसी वर्तनी दोष के अपने विचार लिख सकेंगे।

शब्द-भंडार
- परिचित शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का संदर्भोचित प्रयोग कर सकेंगे।
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का अर्थ समझ सकेंगे।

भाषा की बात
- विशेषण-विशेष्य, विशेषण के भेद, संज्ञा के भेद, शब्द के रूप परिवर्तन, कारक विभक्तियाँ, शब्द शक्तियों के व्यावहारिक प्रयोग, मुहावरे, प्रयोजन विशेष से बनने वाले शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, स्वरदीर्घ संधि, संज्ञा और उनके विशेषण रूप, द्वंद्व समास, अतिशयोक्ति अलंकार, क्रियाओं से भाववाचक संज्ञा बनाना आदि भाषिक तत्वों के प्रयोग समझ सकेंगे।

प्रशंसा
- स्वबोध, वात्सल्य, मित्रता, आशावादी चेतना, देशप्रेम, सेवाभाव, कर्मठता, घरेलू उद्योग, ग्रामीण परिवेश, भारतीय संस्कृति, बचपन, साहस, सहयोग, मानवता, भाषा, महिला जागरूकता, पर्यावरण, विज्ञान आदि का सामाजिक एवं नैतिक महत्व समझ सकेंगे। अर्जित ज्ञान का महत्व समझते हुए उसके प्रति प्रशंसा का भाव रख सकेंगे।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, आत्मकथा, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, सूक्ति वाक्य आदि रचने का प्रयास कर सकेंगे।
- कविताओं का गायन, भाषण, पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, साक्षात्कार आदि क्रियाकलाप कर सकेंगे।

SCERT TELANGANA

इकाई-I

1. बरसते बादल

- सुमित्रानंदन पंत

प्रस्तावना प्रसंग–

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. मीठे गीत कौन गाती है?
2. हमारे जीवन में पानी की आवश्यकता क्यों है?
3. मेघ हमें पानी किस प्रकार देते हैं?

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

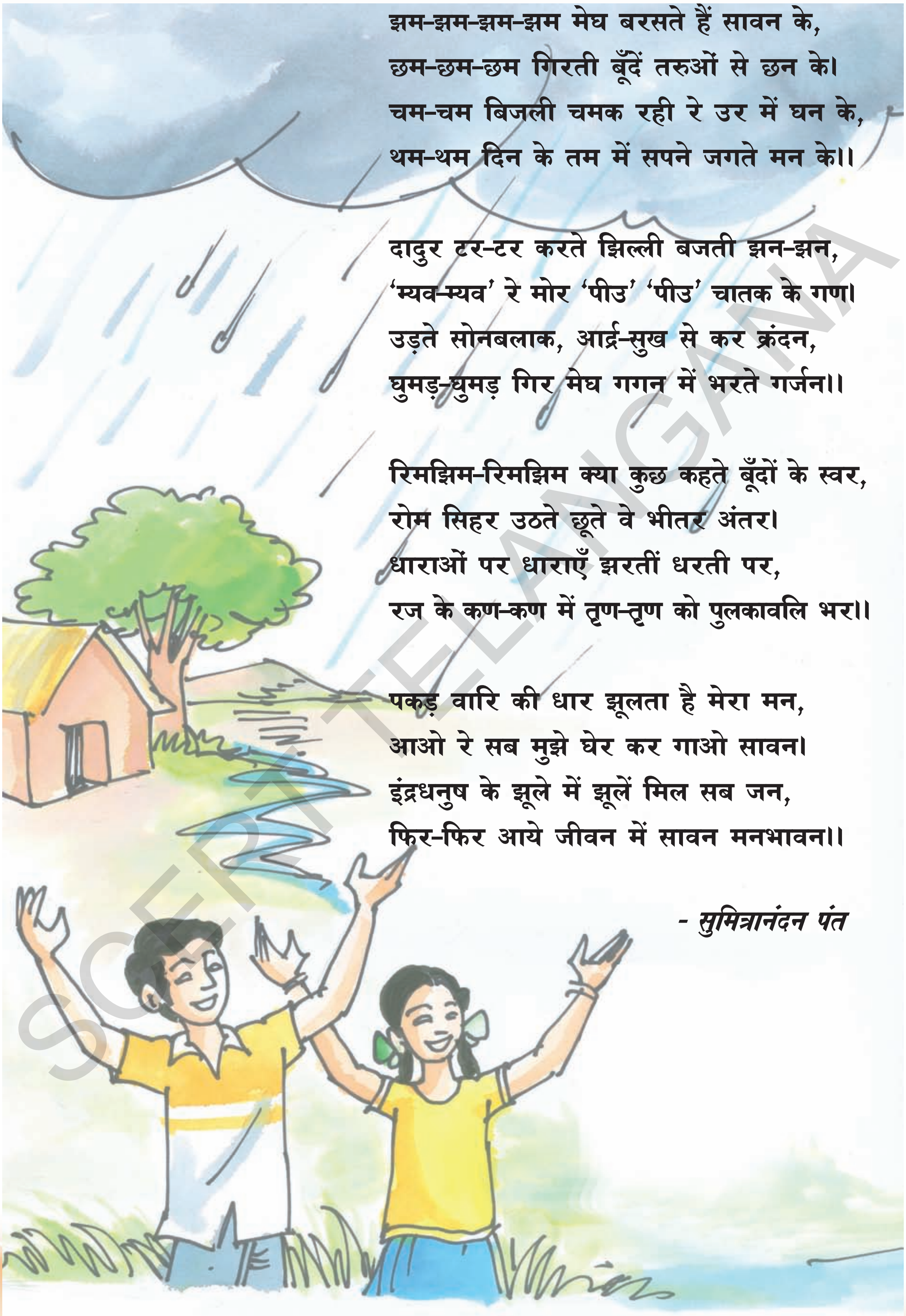

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।
चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के।।

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,
‘म्यव-म्यव’ रे मोर ‘पीउ’ ‘पीउ’ चातक के गण।
उड़ते सोनबलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रंदन,
घुमड़-घुमड़ गिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अंतर।
धाराओं पर धाराएँ झरतीं धरती पर,
रज के कण-कण में तृण-तृण को पुलकावलि भर।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।
इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन,
फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।।

- सुमित्रानंदन पंत

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. धरती की शोभा का प्रमुख कारण वर्षा है। इस पर अपने विचार बताइए।
2. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. वर्षा ऋतु में नदियों के सौंदर्य पर अपने विचार बताइए।

पढ़िए

I. वाक्य सीधा कर के लिखिए।

1. हैं झम-झम बरसते झम-झम मेघ के सावन।
2. गगन में गर्जन घुमड़-घुमड़ गिर भरते मेघ।
3. धरती पर झरती धाराएँ पर धाराओं।

II. नीचे दिये गये भाव की पंक्तियाँ लिखिए।

1. बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा है।
2. मिट्टी के कण-कण से कोमल अंकुर फूट रहे हैं।
3. कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार-बार आए और सब मिलकर झूलों में झूलें।

III. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बंद किए हैं बादल ने अंबर के दरवाजे सारे,
नहीं नजर आता है सूरज ना कहीं चाँद-सितारे,
ऐसा मौसम देखकर, चिड़ियों ने भी पंख पसारे,
हो प्रसन्न धरती के वासी, नभ की ओर निहारे।।

SCERT TELANGANA

1. इसमें अंबर के दरवाज़े बंद कर दिए हैं-

(अ) आकाश　(आ) सूरज　(इ) चाँद　(ई) बादल

2. पंख किसने पसारे हैं?

(अ) चिड़िया　(आ) मौसम　(इ) धरती　(ई) सितारे

3. पद्यांश में आया युग्म शब्द है-

(अ) बादल-अंबर　(आ) सूरज-चाँद　(इ) चाँद-सितारे　(ई) धरती-वासी

4. धरती के लोग किस ओर निहार रहे हैं?

(अ) चिड़िया　(आ) नभ　(इ) बादल　(ई) चाँद

5. पहले पढ़ी गई कविता व उपर्युक्त कविता का विषय है-

(अ) प्रकृति　(आ) सूरज　(इ) तारे　(ई) अंबर

लिखिए

I. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

1. वर्षा के समय सबकी अनुभूति अलग-अलग होती है। बताइए आपकी अनुभूति कैसी होती है?
2. वर्षा के समय प्रकृति बहुत ही सुंदर दिखाई पड़ती है। इस समय मेघ, बिजली और बूँद की क्या विशेषता होती है?
3. वर्षा की बूँदें धरती का रूप बदल सकती हैं। कैसे?

II. इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

1. प्रायः सभी लोग सावन का बार-बार आना पसंद करते हैं। क्यों?
2. कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

I. इन शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

1. सावन

2. सपना

II. इन शब्दों के तद्‍भव रूप लिखिए।

1. गण

2. वारि

भाषा की बात

I. रेखांकित शब्दों के बीच का अंतर समझिए।

1. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर।

2. इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन।

II. रेखांकित शब्द के वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. धाराएँ झरतीं धरती पर।

2. पकड़ वारि की धार झूलता है।

प्रशंसा

मेघों से बरसने वाली वर्षा की बूँदों से क्या लाभ हैं?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

मेघ की आत्मकथा लिखिए।

SCERT TELANGANA

परियोजना कार्य

नीचे हिंदी महीनों के नाम दिये गये हैं। पता कीजिए कि किस महीने में किस तरह का मौसम होता है। उनके बारे में दो-दो वाक्य लिखिए।

हिंदी महीनों के नाम	
1. चैत्र	:
2. वैशाख	:
3. ज्येष्ठ	:
4. आषाढ़	:
5. सावन	:
6. भाद्रपद	:
7. अश्विनी	:
8. कार्तिक	:
9. मार्गशीर्ष	:
10. पौष	:
11. माघ	:
12. फाल्गुन	:

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. कविता का रसास्वादन करते हुए गा सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ की अनुभूतियों को आत्मकथा के रूप में लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-I

2. लाख की चूड़ियाँ

-कामतानाथ

प्रस्तावना प्रसंग–

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है?
2. कुम्हार क्या कर रहा है?
3. कुम्हार क्या सोच रहा होगा?

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

सारे गाँव में बदलू मुझे सबसे अच्छा आदमी लगता था क्योंकि वह मुझे सुंदर-सुंदर लाख की गोलियाँ बनाकर देता था। मुझे अपने मामा के गाँव जाने का सबसे बडा चाव यही था कि जब मैं वहाँ से लौटता था तो मेरे पास ढेर सारी गोलियाँ होतीं, रंग-बिरंगी गोलियाँ जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें।

वैसे तो मेरे मामा के गाँव का होने के कारण मुझे बदलू को 'बदलू मामा' कहना चाहिए था परंतु मैं उसे 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका कहा करता था जैसा कि गाँव के सभी बच्चे उसे कहा करते थे। बदलू का मकान कुछ ऊँचे पर बना था। मकान के सामने बड़ा-सा सहन था जिसमें पुराना नीम का वृक्ष लगा था। उसी के नीचे बैठकर बदलू अपना काम किया करता था। बगल में भट्ठी दहकती रहती जिसमें वह लाख पिघलाया करता। सामने एक लकड़ी की चौखट पड़ी रहती जिस पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता। पास में चार-छह विभिन्न आकार की बेलननुमा मुंगेरियाँ रखी रहतीं जो आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं। लाख की चूड़ी का आकार देकर वह उन्हें मुंगेरियों पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता और तब एक-एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ बना चुकने के पश्चात वह उन पर रंग करता।

बदलू यह कार्य सदा ही एक मचिये पर बैठकर किया करता था जो बहुत ही पुरानी थी। बगल में ही उसका हुक्का रखा रहता जिसे वह बीच-बीच में पीता रहता। गाँव में मेरा दोपहर का समय अधिकतर बदलू के साथ बीतता। वह मुझे 'लला' कहा करता और मेरे पहुँचते ही मेरे लिए तुरंत एक मचिया मँगा देता। मैं घंटों बैठे-बैठे उसे इस प्रकार चूड़ियाँ बनाते देखता रहता। लगभग रोज ही वह चार-छह जोड़े चूड़ियाँ बनाता। पूरा जोड़ा बना लेने पर वह उसे बेलन पर चढ़ाकर कुछ क्षण चुपचाप देखता रहता मानो वह बेलन न होकर किसी नव-वधू की कलाई हो।

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था। उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस-पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था। उसका अभी तक वस्तु-विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा था। मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा। हाँ, शादी-विवाह के अवसरों पर वह अवश्य ज़िद पकड़ जाता था। जीवन भर चाहे कोई उससे मुफ़्त चूड़ियाँ ले जाए परंतु विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता

था। आखिर सुहाग के जोड़े का महत्व ही और होता है। मुझे याद है, मेरे मामा के यहाँ किसी लड़की के विवाह पर ज़रा-सी किसी बात पर बिगड़ गया था और फिर उसको मनाने में लोहे लग गए थे। विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को सारे वस्त्र मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी मिलती और रुपये जो मिलते सो अलग।

यदि संसार में बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो वह थी काँच की चूड़ियों से। यदि किसी भी स्त्री के हाथों में उसे काँच की चूड़ियाँ दिख जातीं तो वह अंदर-ही-अंदर कुढ़ उठता और कभी-कभी तो दो-चार बातें भी सुना देता।

मुझसे तो वह घंटों बातें किया करता। कभी मेरी पढ़ाई के बारे में पूछता, कभी मेरे घर के बारे में और कभी यों ही शहर के जीवन के बारे में। मैं उससे कहता कि शहर में सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उत्तर देता, ''शहर की बात और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाइयाँ नाज़ुक होती हैं न! लाख की चूड़ियाँ पहनें तो मोच न आ जाए।''

कभी-कभी बदलू मेरी अच्छी खासी खातिर भी करता। जिन दिनों उसकी गाय के दूध होता वह सदा मेरे लिए मलाई बचाकर रखता और आम की फसल में तो मैं रोज़ ही उसके यहाँ से दो-चार आम खा आता। परंतु इन सब बातों के अतिरिक्त जिस कारण वह मुझे अच्छा लगता वह यह था कि लगभग रोज़ ही वह मेरे लिए एक-दो गोलियाँ बना देता।

मैं बहुधा हर गर्मी की छुट्टी में अपने मामा के यहाँ चला जाता और एक-आध महीने वहाँ रहकर स्कूल खुलने के समय तक वापस आ जाता। परंतु दो-तीन बार ही मैं अपने मामा के यहाँ गया होऊँगा तभी मेरे पिता की एक दूर के शहर में बदली हो गई और एक लंबी अवधि तक मैं अपने मामा के गाँव न जा सका। तब लगभग आठ-दस वर्ष के बाद जब मैं वहाँ गया तो इतना बड़ा हो चुका था कि लाख की गोलियों में मेरी रुचि नहीं रह गई थी। अतः गाँव में होते हुए भी कई दिनों तक मुझे बदलू का ध्यान न आया। इस बीच मैंने देखा कि गाँव में लगभग सभी स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहने हैं। विरले के ही हाथों में मैंने लाख की चूड़ियाँ देखीं। तब एक दिन सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया। बात यह हुई कि बरसात में मेरे मामा की छोटी लड़की आँगन में फिसलकर गिर पड़ी और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई और उससे खून बहने लगा। मेरे मामा उस समय घर पर न थे। मुझे ही उसकी मरहम-पट्टी करनी पड़ी। तभी सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया और मैंने सोचा कि उससे मिल आऊँ। अतः शाम को मैं घूमते-घूमते उसके घर चला गया। बदलू वहीं चबूतरे पर नीम के नीचे एक खाट पर लेटा था।

नमस्ते बदलू काका! मैं ने कहा।

नमस्ते भइया! उसने मेरी नमस्ते का उत्तर दिया और उठकर खाट पर बैठ गया। परंतु उसने मुझे पहचाना नहीं और देर तक मेरी ओर निहारता रहा।

मैं हूँ जनार्दन, काका! आपके पास से गोलियाँ बनवाकर ले जाता था। मैंने अपना परिचय दिया।

बदलू फिर भी चुप रहा। मानो वह अपने स्मृति पटल पर अतीत के चित्र उतार रहा हो और तब वह एकदम बोल पड़ा, आओ-आओ, लला बैठो! बहुत दिन बाद गाँव आए।

हाँ, इधर आना नहीं हो सका, काका! मैंने चारपाई पर बैठते हुए उत्तर दिया।

कुछ देर फिर शांति रही। मैंने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई। न तो मुझे उनकी मचिया ही नज़र आई, न

SCERT TELANGANA

ही भट्ठी।

आजकल काम नहीं करते काका? मैंने पूछा।

नहीं लला, काम तो कई साल से बंद है। मेरी बनाई हुई चूड़ियाँ कोई पूछे तब तो। गाँव-गाँव में काँच का प्रचार हो गया है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, मशीन युग है न यह, लला! आजकल सब काम मशीन से होता है। खेत भी मशीन से जोते जाते हैं और फिर जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है, लाख में कहाँ संभव है?

लेकिन काँच बड़ा खतरनाक होता है। बड़ी जल्दी टूट जाता है। मैंने कहा।

नाज़ुक तो फिर होता ही है लला! कहते-कहते उसे खाँसी आ गई और वह देर तक खाँसता रहा।

मुझे लगा उसे दमा है। अवस्था के साथ-साथ उसका शरीर ढल चुका था। उसके हाथों पर और माथे पर नसें उभर आई थीं।

जाने कैसे उसने मेरी शंका भाँप ली और बोला, ''दमा नहीं है मुझे। फसली खाँसी है। यही महीने-दो-महीने से आ रही है। दस-पंद्रह दिन में ठीक हो जाएगी।''

मैं चुप रहा। मुझे लगा उसके अंदर कोई बहुत बड़ी व्यथा छिपी है। मैं देर तक सोचता रहा कि इस मशीन युग ने कितने हाथ काट दिए हैं। कुछ देर फिर शांति रही जो मुझे अच्छी नहीं लगी।

आम की फसल अब कैसी है, काका? कुछ देर पश्चात मैंने बात का विषय बदलते हुए पूछा।

''अच्छी है लला, बहुत अच्छी है'' उसने लहककर उत्तर दिया और अंदर अपनी बेटी को आवाज़ दी, ''अरी रज्जो, लला के लिए आम तो ले आ।'' फिर मेरी ओर मुखातिब होकर बोला, ''माफ़ करना लला, तुम्हें आम खिलाना भूल गया था।''

नहीं, नहीं काका आम तो इस साल बहुत खाए हैं।

वाह-वाह, बिना आम खिलाए कैसे जाने दूँगा तुमको?

मैं चुप हो गया। मुझे वे दिन याद हो आए जब वह मेरे लिए मलाई बचाकर रखता था।

गाय तो अच्छी है न काका? मैंने पूछा।

गाय कहाँ है, लला! दो साल हुए बेच दी। कहाँ से खिलाता?

इतने में रज्जो, उसकी बेटी, अंदर से एक डलिया में ढेर से आम ले आयी।

यह तो बहुत हैं काका! इतने कहाँ खा पाऊँगा? मैंने कहा।

वाह-वाह! वह हँस पड़ा, शहरी ठहरे न! मैं तुम्हारी उमर का था तो इसके चौगुने आम एक बखत में खा जाता था।

आप लोगों की बात और है। मैंने उत्तर दिया।

अच्छा, बेटी, लला को चार-पाँच आम छाँटकर दो। सिंदूरी वाले देना।

SCERT TELANGANA

देखो लला कैसे हैं? इसी साल यह पेड़ तैयार हुआ है।

रज्जो ने चार-पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठक गई। गोरी-गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़ियाँ बहुत फब रही थीं।

बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली और बोल पड़ा, यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले आओ।

मैंने आम ले लिए और खाकर थोड़ी देर पश्चात चला आया। मुझे प्रसन्नता हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं मानी थी। उसका व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों जैसा न था कि आसानी से टूट जाए।

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. आधुनिक समाज में हस्तकारीगरों का क्या महत्व है?
2. बाज़ार में बिकनेवाले सामानों की डिज़ाइनों में परिवर्तन होता ही रहता है। उस पर अपने विचार बताइए।

पढ़िए

1. पाठ का पहला चित्र देखिए। इसमें बदलू लाख की चूड़ियाँ बना रहा है। इससे संबंधित वाक्य पाठ में ढूँढिए और बताइए।
2. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था?
3. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?
4. निम्नलिखित अवतरण पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   "उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस-पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से नहीं बेचता था। उसका अभी तक वस्तु-विनिमय का तरीका अलग था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे........ विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को बहुत सारे वस्त्र मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी और रुपये जो मिलते सो अलग।" इस वाक्य से पता चलता है कि वस्तु-विनिमय की पद्धति हमारी संस्कृति का हिस्सा थी। किसान अपने अनाज का कुछ हिस्सा लुहार, बढ़ई, मनिहार, नाई, धोबी, कुम्हार,

SCERT TELANGANA

माली, पनेरी, बँसोर, जुलाहा आदि को देते थे। वे इसके बदले में किसान की सहायता करते थे। विवाह आदि कार्यक्रमों में इनका विशेष महत्व था। हमारी परंपराओं में इन्हें विशेष स्थान दिया गया था। विवाह आदि शुभकार्यों के मौकों पर इन्हें वस्त्र आदि भेंट किए जाते थे। इस प्रकार गाँव के लोग एक-दूसरे से जुड़े रहते। सभी कलाओं का पोषण भी होता रहता। आज भी कुछ गाँवों में यह पद्धति थोड़ी मात्रा में प्रचलित है।

1. वस्तु-विनिमय क्या है?
2. कलाओं का पोषण किस प्रकार होता आ रहा है?
3. हमारी परंपराओं में किसका विशेष स्थान है?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. लाख और काँच की चूड़ियों की तुलना करते हुए पाँच वाक्य लिखिए।
2. हस्तकारीगरों की दुर्दशा के प्रमुख कारण लिखिए।
3. इस पाठ से हमें क्या सीख मिलती है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. आप अपने घर आए मेहमान का अतिथि सत्कार कैसे करेंगे?
2. अपनी दिनचर्या लिखिए।
3. आपके घर में कौन-कौन से काम मशीनों द्वारा किए जाते हैं?

शब्द भंडार

1. वाक्य पढ़िए। इसमें प्रयुक्त मुहावरे का प्रयोग समझिए। इस मुहावरे का पुनः वाक्य प्रयोग कीजिए।

- रंग बिरंगी गोलियाँ जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें।
  - मन मोह लेना
- विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता था।
  - कसर निकालना
- उसको मनाने में लोहे लग गये थे।
  - लोहा लगना

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. बदलू अच्छा आदमी है। उसमें अच्छाई है।
उसका परिवार गाँव में रहता है। वह रोज़ गाय का दूध पीता है।
ऊपर दिये गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए और समझिए। इस तरह किसी व्यक्ति या विशेष नाम, जाति का नाम, भाव का नाम, समूह या द्रव पदार्थ के नाम का बोध करने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।
2. संज्ञा के कुछ उदाहरण पाठ में ढूँढ़िए और लिखिए।

प्रशंसा

घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देने और कारीगरों की भलाई के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आपने मेले, बाज़ार आदि में हाथ से बनी कई वस्तुएँ देखी होंगी। इन वस्तुओं को बनाने की कला जानने के लिए किसी हस्तकारीगर के साक्षात्कार के लिए प्रश्नावली का निर्माण कीजिए।

परियोजना कार्य

घरेलू उद्योग से संबंधित चित्र एकत्र कीजिए। किसी एक घरेलू उद्योग के बारे में लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकतीहूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. घरेलू उद्योग का महत्व बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित संदर्भों के विषय में साक्षात्कार ले सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-I

3. बस की यात्रा

-हरिशंकर परसाई

प्रस्तावना प्रसंग–

कुछ देर बाद ऐसी दशा हो गई कि कोई हमारा सब असबाब ले ले और हमें लेटने का स्थान दे दे। परन्तु वहाँ कहाँ सज्जनकर वासा। थोड़ी देर में पुनः ट्रेन रुकी तो हम फिर झोंके में आगे की ओर गिरे। संभलने के लिए हाथ जो बढ़ाया तो एक महाशय की गर्दन पर गिर पड़े। वह अपनी सीट से लुढ़ककर नीचे और हम उनके ऊपर। लोगों ने खींच-खींच कर हमें उठाया। एक महाशय बोले– "इन्हें बैठने की जगह देनी चाहिए, नहीं तो आज यहाँ फौज़दारी हो जाएगी।" यह राय लोगों को पसंद आ गई और कुछ व्यक्तियों ने अपने शरीर को सिकोड़-सिकोड़ कर हमें केवल इतना स्थान दिया कि हम केवल बैठ सकें और वह भी दोनों घुटनों पर हाथ रखके उनके सहारे।

'रेलयात्रा' से– विश्वंभरनाथ शर्मा "कौशिक"

प्रश्न

1. प्रस्तुत अवतरण में किस चीज़ की यात्रा का वर्णन है?
2. लोगों ने लेखक के मित्र को बैठने के लिए स्थान क्यों दिया?
3. आजकल यात्रा और भी सरल बनाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है।

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा- ''यह बस चलती भी है?'' वह बोले- ''चलती क्यों नहीं है जी अभी चलेगी।'' हमने कहा- ''वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?''

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है?

हम आगा-पीछा करने लगे। डाक्टर मित्र ने कहा- ''डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से लेकर चलेगी।''

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं- ''आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा- राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।''

SCERT TELANGANA

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसा सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन की दौर से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे- ''बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।''

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती- ''निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।''

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत ज़ोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान की भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते- ''वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिये। मर गया, पर टायर नहीं बदला।''

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुज़ारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गये। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गये। चिंता जाती रही। हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. इस प्रकार की बस को यातायात के लिए उपयोग में लाना खतरनाक हो सकता है। ऐसी बसों पर रोक लगाना किसकी ज़िम्मेदारी है? आप इस संदर्भ में क्या कर सकते हैं? चर्चा कीजिए।
2. आप अपनी किसी यात्रा के खट्टे–मीठे अनुभव अपने मित्रों को सुनाइए। उसपर चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"
   - लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गयी?
2. "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शामवाली बस से सफ़र नहीं करते।"
   - लोगों ने यह सलाह क्यों दी?
3. "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।"
   - लेखक को ऐसा क्यों लगा?
4. "गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।
   - लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?
5. "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।"
   - लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?
6. लेखक ने ऐसी बस से यात्रा क्यों की?
7. बस को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा क्यों उमड़ पड़ी?
8. लेखक ने ड्राइवर की तुलना एक क्रांतिकारी नेता से क्यों की?
9. सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप में किया है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. यातायात का कौन-सा साधन आपको सर्वाधिक पसंद है? कारण बताइए।
2. बस के लिए आपके मन में किस प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं?
3. यात्रा के दौरान हमें क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. यदि बस जीवित प्राणी होती, बोल सकती, तो वह अपनी बुरी हालत और भारी बोझ के कष्ट को किन शब्दों में व्यक्त करती?
2. यदि आप इस बस से विहार यात्रा पर जाते तो आपके मन में क्या-क्या विचार उत्पन्न होते?

शब्द भंडार

1. 'बस', 'वश', 'बस' तीन शब्द हैं- इनमें 'बस' सवारी के अर्थ में, 'वश' अधीनता के अर्थ में, और 'बस' पर्याप्त (काफ़ी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे-

   • बस से चलना होगा।

   •मेरे वश में नहीं है।

   •अब बस करो।

   •उपर्युक्त वाक्यों के समान 'वश' और 'बस' शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए।

2. "हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गये। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी।" दिये गये वाक्यों में आयी 'सरकना' और 'रेंगना' जैसी क्रियाएँ दो प्रकार की गतियाँ दर्शाती हैं। ऐसी कुछ और क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं, जैसे- घूमना इत्यादि। इन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. "काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था।"

   इस वाक्य में 'बच' शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है। एक 'शेष' के अर्थ में और दूसरा 'सुरक्षा' के अर्थ में।

   नीचे दिये गये शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिए। ध्यान रहे, एक ही शब्द वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए।

   (क) जल (ख) हार

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. एक मित्र **ने** ड्राइवर **को** देखकर साथियों **से** कहा- बस **के लिए** पेट्रोल चाहिए। अब हम बस **से** उतरें। बस **का** इंजन भी रुका है। बस **में** बैठना ठीक नहीं है। **हे** साथियो! पता नहीं कि बस कब चलेगी।

   रेखांकित शब्दांशों पर ध्यान दीजिये। कारक विभक्तियाँ पहचानिए। उनके नाम लिखिए।

2. बोलचाल में प्रचलित अंग्रेज़ी शब्द 'फर्स्ट क्लास' में दो शब्द हैं- फर्स्ट और क्लास। यहाँ क्लास का विशेषण है- फर्स्ट। चूँकि फर्स्ट संख्या है, फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है। 'महान आदमी' में किसी आदमी की विशेषता है- महान। यह गुणवाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण और गुणवाचक विशेषण के दो-दो उदाहरण लिखिए।

प्रशंसा

किसी एक मशीन का वर्णन करते हुए बताइए कि वह किस प्रकार हमारी सेवा करती है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

पाठ में दी गयी बस की तस्वीर देखकर उसकी आत्मकथा लिखिए।

परियोजना कार्य

अपने घर के किसी बड़े-बुज़ुर्ग से उनके द्वारा की गई किसी यादगार यात्रा के बारे में पूछकर लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. अपने द्वारा की गयी यात्रा के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित वस्तुओं की काल्पनिक आत्मकथा लिखने का प्रयास सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-I

4. दीवानों की हस्ती

-भगवतीचरण वर्मा

प्रस्तावना प्रसंग–

रानी लक्ष्मीबाई

अल्लूरि सीताराम राजु

भगत सिंह

जब शहीदों की अर्थी उठे धूम से
देश वालों तुम आँसू बहाना नहीं।
पर मनाओ जब आज़ाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं।

सुभाषचंद्र बोस

लौटकर आ सके न जहाँ में तो क्या
याद बनके दिलों में तो आ जाएँगे।
ऐ वतन! ऐ वतन! हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जाएँगे।
– प्रेम धवन

अशफ़ाकुल्ला खान

चंद्रशेखर आज़ाद

राजगुरु

रामप्रसाद बिस्मिल

प्रश्न

1. यह गीत किसके बारे में है?
2. चित्र में दिखाये गये लोगों के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. इस गीत में शहीदों ने क्या इच्छा ज़ाहिर की है?

SCERT TELANGANA

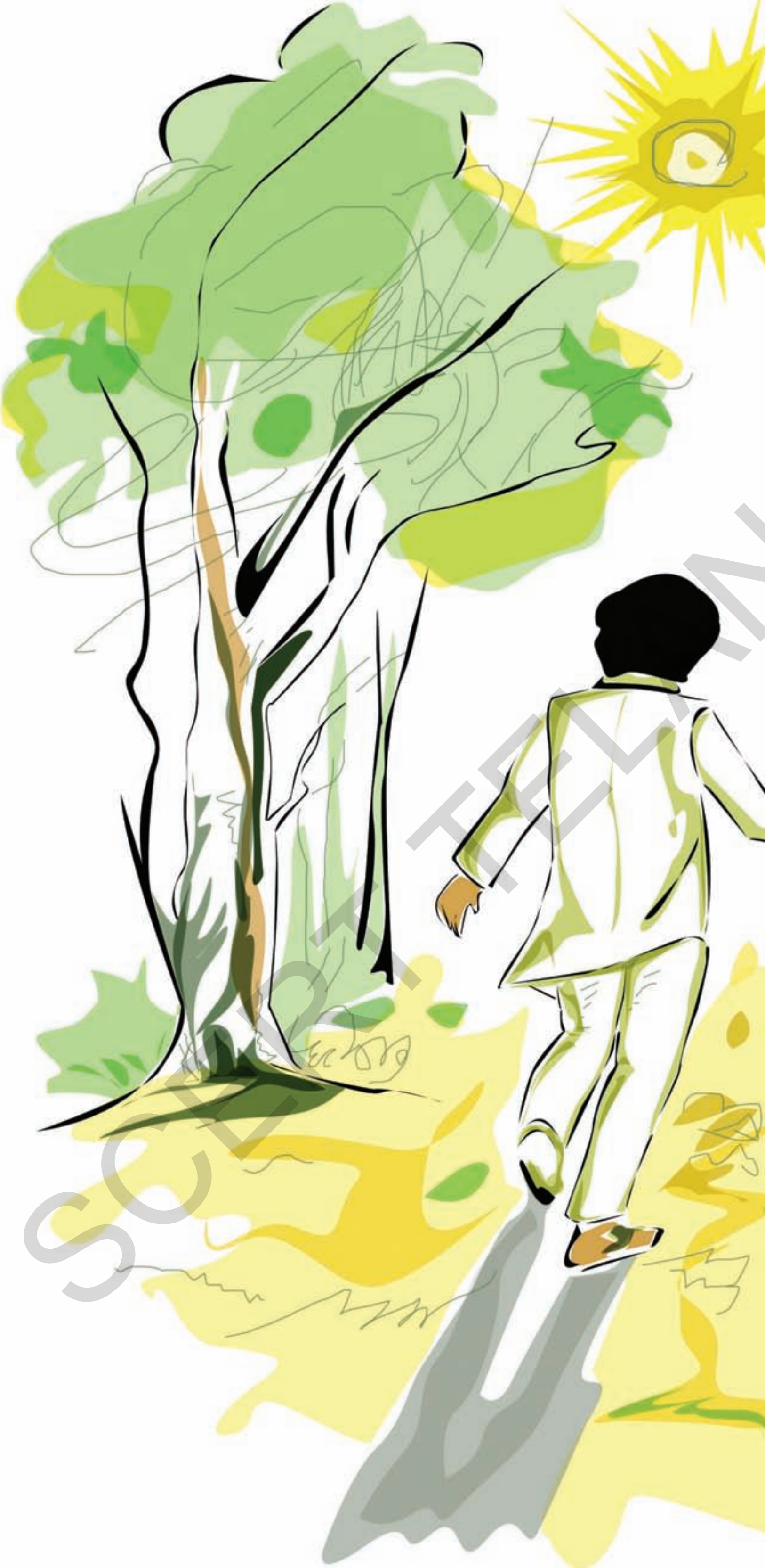

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?

किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,

दो बात कही, दो बात सुनी,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

हम भिखमंगों की दुनिया में,
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निसानी-सी उर पर,
ले असफलता का भार चले।

अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की आँखों में किस प्रकार के भारत का सपना रहा होगा? अपने शब्दों में बताइए।
2. आज़ादी के दीवाने अपने-अपने बंधन कैसे तोड़ चुके?

पढ़िए

1. कवि ने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?
2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न?
3. कविता में ऐसी कौनसी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?
4. एक पंक्ति में कवि ने यह कहकर अपने अस्तित्व को नकारा है कि "हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले।" दूसरी पंक्ति में उसने यह कहकर अपने अस्तित्व को महत्व दिया है कि "मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले" यह फाकामस्ती कही जाती है। कविता में इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ भी हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कविता में परस्पर विरोधी बातें क्यों की गई हैं?
5. इस कविता में आज़ादी के दीवानों का वर्णन है। आइए! अब आज़ादी के दीवाने अमर शहीद भगत सिंह का एक पत्र पढ़ें। पत्र पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

22 मार्च, 1931.

साथियो!

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर ज़िंदा रह सकता हूँ कि मैं क़ैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है- इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता।

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं, अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जायेंगी और क्रांति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जायेगा या संभवतः मिट ही जाय लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

सिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं करा सके, अगर स्वतंत्रता तक जिन्दा रह सकता तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया, मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है, अब तो बड़ी बेताबी से अन्तिम परीक्षा का इन्तज़ार है, कामना है कि यह और नज़दीक हो जाय।

आपका साथी

भगत सिंह

प्रश्न 1. भगत सिंह के पत्र एवं पढ़ी गई कविता 'दीवानों की हस्ती' के भाव में क्या समानता है?

2. भगत सिंह ने स्वयं को सबसे अधिक सौभाग्यशाली क्यों कहा है?

3. भगत सिंह हँसते हुए फाँसी पर क्यों चढ़ना चाहते थे?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आज़ादी के दीवाने चाहते हुए भी अपने बंधु-बांधवों के पास क्यों नहीं रह पाते?
2. वीरों की राह निश्चित क्यों नहीं होती?
3. बलिदानी लोग अपने-पराये का भेदभाव क्यों नहीं रखते?
4. जीवन में मस्ती होनी चाहिए, लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. हमें सांसारिक सुख-दुख के भाव को समान क्यों मानना चाहिए? इससे हमें क्या लाभ होगा?
2. आप अपने देश के लिए क्या-क्या करना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. इस कविता में 'हँसना-रोना', 'कही-सुनी', 'सुख-दुख', 'लिए-दिए', 'अपना-पराया', 'आज-कल' आदि विपरीतार्थक शब्दों का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है। दो विपरीतार्थक शब्दों का एक ही वाक्य में प्रयोग कीजिए, जैसे-

   हँसना-रोना :- दूसरों पर हँसनेवालों को एक दिन अवश्य रोना पड़ता है।
2. संतुष्टि के लिए कवि ने 'छककर', 'जी भरकर', और 'खुलकर' शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव के कुछ अन्य शब्द सोचकर लिखिए।

भाषा की बात

1. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षित बनती है। मुहावरे वाक्य के अंग होकर प्रयुक्त होते हैं। इनका अक्षरशः अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। उदाहरण के लिए इस कविता में मुहावरे का प्रयोग इस पंक्ति में हुआ है-

   "मस्ती का आलम साथ चला
   हम धूल उड़ाते जहाँ चले।" यहाँ 'धूल उड़ाते चलना' मुहावरे का अर्थ है- उत्साह के साथ आगे बढ़ना। 'धूल' शब्द से बने कुछ अन्य मुहावरों का अर्थ शब्दकोश की सहायता से लिखिए। उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

   धूल उड़ना
   धूल चाटना
   धूल चटाना
   धूल छानना
   धूल फाँकना
   धूल में मिलना
   धूल में मिलाना

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

दुनिया में कई प्रकार के लोग बसते हैं। कुछ दूसरों के बंधन में बँधे होते हैं तो कुछ अपने। एक कविता की पंक्ति है–

“जो अपनी हद में रहते हैं
बेहद अपने में होते हैं।
होते आज़ाद वही जो खुद
बंधन में जकड़े होते हैं।”

जीवन में आत्मनियंत्रण के महत्व पर प्रकाश डालिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

कविता आप भी रच सकते हैं। इस कविता के चरणों को आगे बढ़ाने का प्रयास कीजिए।

परियोजना कार्य

किसी स्वतंत्रता सेनानी के संबंध में जानकारी एकत्र कीजिए। उनका संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

खेल जहाँ, मैदान वहाँ

उपवाचक

-ज्ञान चतुर्वेदी

मेरे घर के सामने एक छोटा-सा ऊबड़-खाबड़ मैदाननुमा भूमि का टुकड़ा है, जहाँ प्रतिदिन एक सनसनी खोज टेस्ट मैच हो जाता है। स्कूल के बच्चों की बस आठ बजे आती है। बच्चे सात बजे से ही आकर इस स्थानीय 'ओवल' मैदान में इकट्ठे हो जाते हैं। यह मैदान पचास-साठ फ़ीट चौड़ा और इतना ही लंबा है।

सात-आठ बस्ते, एक के ऊपर एक रखकर विकेट बना लिया जाता है। ऐसा चौड़ा और ऊँचा विकेट रिकार्ड बुक में दर्ज होना चाहिए। ऐसी भीमकाय विकेट होने पर भी यहाँ किसी को क्लीन बोल्ड से आउट करना कठिन है क्योंकि बॉल बस्ते टकराई या नहीं, इस पर बच्चे कभी एकमत नहीं होते। खूब झूमाझटकी के बाद कोई मान जाए तो बात अलग है। कैच आउट मानना पड़ता है। वैसे उसमें भी कई बार इस बात पर लड़ाई होती है कि बॉल बहुत तेज़ करी थी और ऐसी तेज़ बॉलिंग करना कहाँ की इनसानियत है। अभी हमारी बारी आने दो तो बताएँगे। फिर न कहना।

सबसे पहले दो टीमों का चयन होता है। बच्चे अधिक हैं, इसलिए यह करना पड़ता है। जो दादा टाइप के बच्चे हैं, उम्र में कुछ बड़े हैं तथा काठी से मज़बूत हैं, वे चयन करते हैं। इस दौरान दूसरों को चूँ-चपाड़ की हिम्मत नहीं पड़ती।

चयन करने वाले पहले अपने यार-दोस्तों को लेते हैं। फिर पड़ोसियों को और फिर एक-दो अच्छा खेलनेवालों को भी। वे स्वयं तो टीम में आते ही हैं और इस बात में वे राष्ट्रीय चयनकर्ताओं से दो क़दम आगे हैं। उस बच्चे का स्थान तो खैर टीम में पक्का है ही, जो बल्ला तथा गेंद लाता है। कई बार वह ज़िद करके कप्तान तक बन जाता है। बात नहीं मानी तो वह अगले दिन बैट नहीं लाएगा। सब देखना पड़ता है चयनकर्ताओं को। इस चक्कर में कुछ अच्छा खेलनेवाले बच्चे बाहर रह जाते हैं।

ये बाहर रह जानेवाले हल्ला करते हैं, कंकड़ मारते हैं और बार-बार चिल्लाते हैं कि चलो, चलो, बस आ गई। उनमें से एकाध को अंपायर बना दिया जाता है जो गुस्से में किसी को भी आउट दे देता है। यदि आउट करने के लिए बहुत हुल्लड़ मचा, तो वह अपना बल्ला वापस ले लेता है। तब अंपायर अपना ही निर्णय रद्द कर देता है।

मैदान के उत्तरी छोर पर कुछ शेडनुमा गैराज़ बने हैं, जिनकी छत पर अगर बॉल चली गई तो खेल न केवल बहुत देर तक बंद रहता है, बल्कि उस बल्लेबाज़ की हैसियत, उम्र तथा स्वास्थ्य के हिसाब

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

से पिटाई तक की जा सकती है। गैराज़ में सीढ़ियाँ नहीं हैं, सो छत से गेंद उतारना कठिन तथा कलापूर्ण है। यह हर बच्चे के बस की बात नहीं। जो चढ़कर निकाल लाता है, उसे अतिरिक्त चार रन मिलते हैं और जिस बल्लेबाज़ ने मारकर फेंकी, वह आउट माना जाता है।

मैदान के दक्षिणी छोर पर मकान है, जहाँ मैं कमेंटेटर की मुद्रा में प्रतिदिन बैठता हूँ। पूर्वी छोर पर एक बाग़ है, जिसमें चली जाने पर गेंद प्रायः खो जाती है और जिसके खिलाड़ी की गलती से गेंद खोई, वह टीम पराजित मानी जाती है।

इसी मैदान में यहाँ-वहाँ कुत्ते, बकरियाँ, गायें और भैंसे बैठी-लेटी या टहलती रहती हैं। जब किसी बच्चे से कैच गिर जाता है या गेंद हाथ से निकल जाती है, तो वह इन चौपायों पर दोष डाल देता है।

'यह बकरी बीच में आ गई, वरना देखता!'

इस मैदान पर बाधाओं के अलावा बहुत से गड्ढे भी हैं। ज़मीन के इतने से टुकड़े पर इतने सारे गड्ढे मैंने कहीं नहीं देखे। इनके अलावा मैदान पर है थोड़ी-सी घास, सूखा-गीला कीचड़, पत्थरों के छोटे-

बड़े टुकड़े, बजरी के ढेर, जिन्हें बस स्टेंड बनाने के लिए वर्षों पहले डाला गया था।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में बच्चे रोज़ सुबह सात से आठ बजे तक मैच खेलते हैं और बहुत बढ़िया खेलते हैं। सब जानते हैं भारतीय क्रिकेट विपरीत परिस्थितियों में ही चमकती है।

किरमिच की रबरनुमा टप्पेदार गेंद से जितनी खतरनाक गेंदबाज़ी कर सकते हैं, की जाती है।

पहले क्रिकेट की असली कार्क की बॉल से खेलते थे, परंतु पिछले महीने ही, खतरनाक पथरीले पिच से उतारकर वह गेंद सीधे पीछे की तरफ़ गई, जहाँ एक सज्जन झोला लेकर मैदान में थर्ड मैन के आसपास से निकलकर बस पकड़ने के लिए लपके जा रहे थे। वे झोले के साथ ही गिर पड़े। गेंद सिर पर लगी थी। सारे बच्चे बस्ते लेकर भाग गए और अगले दिन भी उधर नहीं फटके। स्कूल बस भी खाली गई।

बाद में धीरे-धीरे सब कुछ फिर पूर्ववत शुरू हो गया, परंतु तय किया गया कि किरमिच की गेंद से खेलेंगे। वे सज्जन अभी भी दूसरा झोला लेकर इसी मैदान से निकलते हैं। पहलेवाला झोला किसी ने उस दिन मार लिया, जब वे बेहोश होकर गिर गए थे। बच्चों को उन्होंने माफ़ कर दिया था।

खिलाड़ियों का चयन होने और दो टीमें बनने में ही रोज़ाना सवा सात बज जाते हैं। आठ बजे स्कूल-बस आ जानी है। पैंतालीस मिनट शेष बचते हैं और दोनों टीमों को बैटिंग करनी होती है। दोनों की एक-एक पारी होनी है। कैसे होगा? पर हो जाता है। पैंतालीस मिनट में ही छक्के से लेकर रन-आउट तक सब कुछ संपन्न हो जाता है। अपने आपको कपिलदेव माननेवाला बॉलर, लंबे रन-अप की गुंजाइश छोटे से मैदान में न होने के कारण दूर सड़क से दौड़कर आता है और बॉल अनाप-सनाप फेंक देता है। गेंद पिच के गड्ढों से टकराकर, आप ही आप लेगब्रेक, बंपर, गुगली, आउटस्विंगर इत्यादि कुछ भी हो सकती है, परंतु क्रेडिट बॉलर को पूरा मिलता है।

''क्या बॉल काटी यार, मान गए।''

''कितने विकेट लिए तूने?''

''मैंने तो आज सात विकेट लिए'' बच्चे पैंतालीस मिनट में सात विकेट निकाल रहे हैं और माँ-बाप हैं कि ''कहाँ से फ़ाड़ लाए यह पैंट? कल से खेले तो खबरदार! टाँगें तोड़ दूँगा!''

पर बच्चे निरुत्साहित नहीं होते। वे सारा रिस्क लेकर भी लगे रहते हैं।

बॉलिंग यानी गेंदबाज़ी चल रही है। खतरनाक। मैदान में यहाँ-वहाँ हॉल, कपिल, मार्शल और एंडी रॉबट्र्स बिखरे पड़े हैं। टीम का हर बच्चा गेंद करना चाहता है। लड़ते हैं सब।

''अब मैं करूँगा।''

''अरे! अभी पाँच ही बॉल तो हुई हैं।''

''उल्लू मत बना। आठ कर चुका।''

''जा-जा.....''

लड़ते हैं आपस में। फिर तय होता है कि सभी को एक-एक ओवर मिलेगा और जल्दी गेंद करनी होगी। लंबा रन-अप नहीं चलेगा क्योंकि बस आनेवाली है। सब बॉलिंग करते हैं। सभी किरमिच की घिसी-पिटी बॉल को स्कूल की सफ़ेद पैंट पर रगड़ते हैं। सबकी गेंदबाज़ी सफल तथा तेज़ है। पिच के गड्ढे, पत्थर, उतार-चढ़ाववाली सतह सब की बराबर मदद करते हैं। सनसनीपूर्ण गेंदबाज़ी चलती रहती है।

इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि बैटिंग झोल खा रहे हैं। नहीं, कभी नहीं। बल्लेबाज़ों के तेवर तो

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

SCERT TELANGANA

देखते ही बनते हैं। उनमें हर बच्चा अपने को गावस्कर या कपिल समझे बैठा है। घुमाकर मारो, यहाँ बल्लेबाज़ी का यही सिद्धांत है। कैसी भी गेंद आए या परिस्थिति हो, मारो घुमा के। यह सिद्धांत सफल भी हो जाता है। जिसका बल्ला गेंद से लग गया, चौके से कम नहीं जाती गेंद। चार क़दम पर ही तो चौके की सीमा रेखा है। सारे बच्चे चौका लगा लेते हैं। किरमिच की गेंद उछलती बहुत है, सो छक्के भी सभी लगा डालते हैं। मिनटों में स्कोर पचास-सौ पहुँचता है।

''आज मैंने तीस बनाए।''

''मैंने भी।''

''और मैंने भी।''

सभी खूब बनाते हैं, परंतु पारी बीस मिनट में समाप्त।

फिर दूसरे आते हैं। वे भी बनाते हैं। एक बच्चा स्कोर याद रखता जाता है। मौखिक स्कोर बोर्ड पर किसी को भरोसा नहीं इसलिए हर बच्चा अपना स्कोर खुद भी याद करता जाता है। इसी चक्कर में सब घालमेल हो जाता है। बाद में सभी झगड़ते हैं कि असली स्कोर क्या रहा। कोई नहीं मानता कि कौन जीता। दोनों टीमें जीत का दावा करती हैं। झगड़ा होता है। सभी शामिल होते हैं इसमें। वे भी जो खेल नहीं रहे थे। हंगामा हो जाता है और सब एक-दूसरे को कहते हैं कि-''देख लेंगे बेटा। हमेशा बेईमानी करते हो तुम।''

''हाँ करते हैं। कर ले क्या करेगा? धाँस किसी और को देना।''

तभी बस आ जाती है।

सारे बच्चे, जो लड़ रहे थे, हँसते-खेलते, हो-हल्ला करते, अपने-अपने बस्ते विकेट से निकालकर बस की तरफ़ बेतहाशा भागते हैं। उस दिन का टेस्ट मैच बिना किसी शिकवे के समाप्त होता है।

चली जाती है बस।

प्रश्न :

१. 'खेल मनोरंजन का साधन है।' अपने विचार बताइए।

२. खेल में कैसी भावनाएँ होनी चाहिए?

३. खेलते समय कैसी सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

SCERT TELANGANA

इकाई-II

5. चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

-अरविंद कुमार सिंह

प्रस्तावना प्रसंग-

पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिये हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी, पहाड़
बाँचते हैं।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न

1. कवि ने पक्षी और बादल को 'भगवान के डाकिये' क्यों कहा है?
2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं?
3. हमारे जीवन में चिट्ठियों का क्या महत्व है?

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

पत्रों की दुनिया भी अजीबो-गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश कहाँ दे सकता है। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नयी घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केंद्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभायी है। पत्रों का भाव सब जगह एक-सा है, भले ही उसका नाम अलग-अलग हो। पत्र को उर्दू में खत, संस्कृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उत्तरम्, जाबू और लेख तथा तमिल में कडिद कहा जाता है। पत्र यादों को सहेजकर रखते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। हर एक की अपनी पत्र लेखन कला है और हर एक के पत्रों का अपना दायरा। दुनिया भर में रोज़ करोड़ों पत्र एक दूसरे को तलाशते तमाम ठिकानों तक पहुँचते हैं। भारत में ही रोज़ साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती हैं जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1953 में सही ही कहा था कि- ''हज़ारों सालों तक संचार का साधन केवल हरकारे (रनर्स) या फिर तेज घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेलों से भी तेज़ गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफोन, वायरलैस और आगे रेडार-दुनिया बदल रहा है।''

पिछली शताब्दी में पत्र लेखन ने एक कला का रूप ले लिया। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में ये प्रयास चले और विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया। यह सही है कि खास तौर पर बड़े शहरों और महानगरों में संचार साधनों के तेज़ विकास तथा अन्य कारणों

SCERT TELANGANA

से पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है पर देहाती दुनिया आज भी चिट्ठियों से ही चल रही है। फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ने चिट्ठियों की तेज़ी को रोका है पर व्यापारिक डाक की संख्या लगातार बढ़ रही है।

जहाँ तक पत्रों का सवाल है, अगर आप बारीकी से उसकी तह में जाएँ तो आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या न लिखाया हो या पत्रों का बेसब्री से जिसने इंतज़ार न किया हो। हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतज़ार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं। एक दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतज़ार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन साधनों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता साधन चिट्ठी ही थी पर आज और भी साधन विकसित हो चुके हैं।

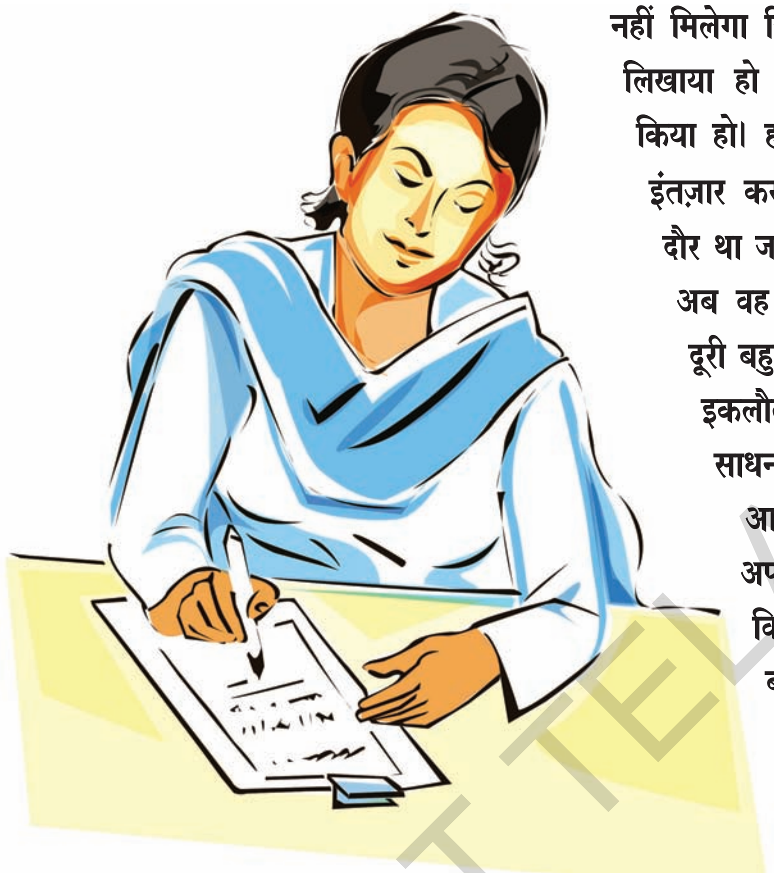

आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं हैं जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों या फिर बड़े-बड़े लेखक, पत्रकारों, उद्यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान, इनकी पत्र रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं। अगर आज जैसे संचार साधन होते तो पंडित नेहरू अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फ़ोन करते, पर तब 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप सहेज कर रख लेते हैं पर एस.एम.एस संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेज कर रख सकते हैं? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है। तमाम पत्र देश, काल और समाज को जानने-समझने का असली पैमाना है। भारत में आज़ादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज़ अफ़सरों ने अपने परिवारजनों को पत्र में लिखे वे आगे चल कर बहुत महत्व की पुस्तक तक बन गए। इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी ज़मीनी मज़बूती लिए हुए था।

महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी-इंडिया लिखे आते थे और वे जहाँ भी रहते थे वहाँ तक पहुँच जाते थे। आज़ादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के साथ

SCERT TELANGANA

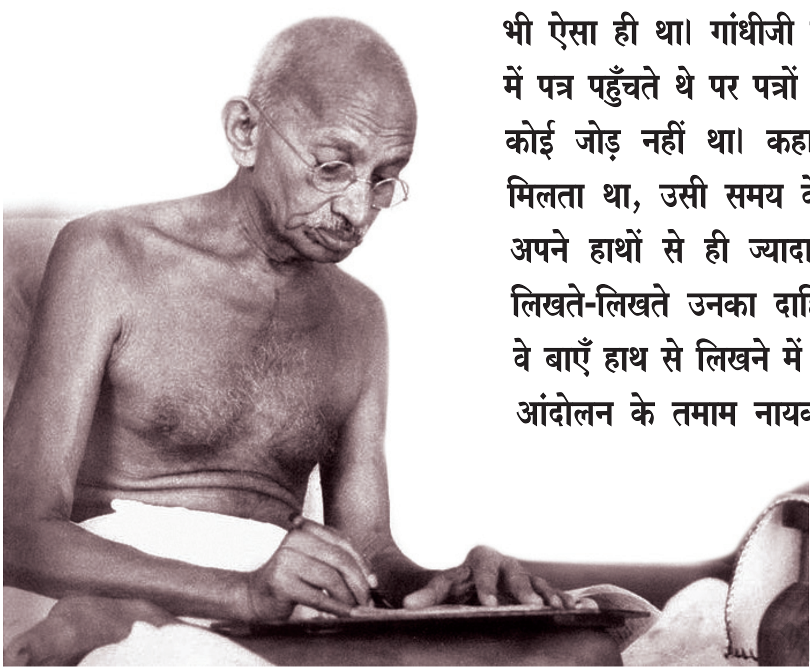

भी ऐसा ही था। गांधीजी के पास देश-दुनिया से बड़ी संख्या में पत्र पहुँचते थे पर पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था। कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे। अपने हाथों से ही ज्यादातर पत्रों का जवाब देते थे। जब लिखते-लिखते उनका दाहिना हाथ दर्द करने लगता था तो वे बाएँ हाथ से लिखने में जुट जाते थे। महात्मा गांधी ही नहीं आंदोलन के तमाम नायकों के पत्र गाँव-गाँव में मिल जाते हैं। पत्र भेजनेवाले लोग उन पत्रों को किसी प्रशस्तिपत्र से कम नहीं मानते हैं और कई लोगों ने तो उन पत्रों को फ्रेम कराकर रख लिया है। यह है पत्रों का जादू। यही नहीं, पत्रों के आधार पर ही कई भाषाओं में जाने कितनी किताबें लिखी जा चुकी हैं।

वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज़ से कम नहीं है। 'पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' और निराला के पत्र 'हम को लिख्यौ है कहा' तथा 'पत्रों के आईने में दयानंद सरस्वती' समेत कई पुस्तकें आपको मिल जाएँगी। कहा जाता है कि प्रेमचंद खास तौर पर नए लेखकों को बहुत प्रेरक जवाब देते थे तथा पत्रों के जवाब में वे मुस्तैद रहते थे। इसी प्रकार नेहरू और गांधी के लिखे गए रवींद्रनाथ टैगोर के पत्र भी बहुत प्रेरक हैं। 'महात्मा और कवि' के नाम से महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सन् 1915 से 1941 के बीच के पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमें बहुत से नए तथ्यों और उनकी मनोदशा का लेखा-जोखा मिलता है।

पत्र व्यवहार की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। पर इसका असली विकास आज़ादी के बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज़्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर-घर तक इसकी पहुँच है। संचार के तमाम उन्नत साधनों के बाद भी चिट्ठी-पत्री की हैसियत बरकरार है। शहरी इलाकों में आलीशान हवेलियाँ हों या फिर झोपड़पट्टियों में रह रहे लोग, दुर्गम जंगलों से घिरे गाँव हों या फिर बर्फबारी के बीच जी रहे पहाड़ों के लोग, समुद्र तट पर रह रहे मछुआरे हों या फिर रेगिस्तान की ढाँणियों में रह रहे लोग, आज भी खतों का ही सबसे अधिक बेसब्री से इंतज़ार होता है। एक दो नहीं करोड़ों लोग खतो और अन्य सेवाओं के लिए रोज भारतीय डाकघरों के दरवाज़ों तक पहुँचते हैं और इसकी बहुआयामी भूमिका नज़र आ रही है। दूर देहात में लाखों गरीब घरों में चूल्हे मनीआर्डर अर्थव्यवस्था से ही जलते हैं। गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर पहुँचनेवाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एस.एम.एस. का संदेश क्यों नहीं दे सकता? चर्चा कीजिए।
2. पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एस.एम.एस. क्यों नहीं? तर्क सहित विचार व्यक्त कीजिए।
3. आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हैं। इन लोगों ने इन्हें सँजोकर क्यों रखा होगा? चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम पाठ पढ़कर बताइए।
2. पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए?
3. लेखक ने डाकिये की तुलना देवदूत से क्यों की है?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफ़ाफ़े पर सही पता लिखकर, पत्र बैरंग भेजने पर कौनसी कठिनाइयाँ आ सकती हैं? पता कीजिए।
2. क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं? कारण सहित लिखिए।
3. पत्र लेखनकला के विकास में किस प्रकार सहायक हैं?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नयी घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं। इसके आधार पर आज के समाज में पत्रों के महत्व पर अपने विचार लिखिए।
2. संचार के क्षेत्र में तकनीकी योगदान पर प्रकाश डालिए।

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. "पत्रों की दुनिया अजीबो-गरीब है।", "इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है।", यहाँ 'अजीबो-गरीब' और 'अनूठी' शब्द का प्रयोग विचित्र के अर्थ में हुआ है। आप इसके इन समानार्थी शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए।

   न्यारा, अनोखा, अद्‌भुत, अनुपम, निराला, विलक्षण

2. "पत्रों का भाव सब जगह एक सा है।" यहाँ भाव शब्द का तात्पर्य है- अर्थ। अब नीचे दिये गये वाक्य पढ़िए और भाव का अलग अर्थ में प्रयोग समझिए।

   1. आज टमाटर का भाव बहुत अधिक है। (यहाँ भाव का अर्थ कीमत है।)
   2. मेरे कहने का भाव समझो। (यहाँ भाव का अर्थ है- अभिप्राय)
   3. अब अधिक भाव मत खाओ। (यहाँ भाव शब्द का मुहावरेदार प्रयोग है।)

   इन तीनों संदर्भों में भाव शब्द का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

भाषा की बात

1. किसी प्रयोजन विशेष से संबंधित शब्दों के साथ शब्द जोड़ने से कुछ नये शब्द बनते हैं, जैसे- प्रशस्ति पत्र, समाचार पत्र। आप भी पत्र के योग से बननेवाले दस शब्द लिखिए।
2. 'व्यापारिक' शब्द 'व्यापार' के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। 'इक' प्रत्यय के योग से बननेवाले शब्दों को पाठ्यपुस्तक में खोजकर लिखिए।
3. दो स्वरों के मेल से होनेवाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे- रवींद्र = रवि + इंद्र। इस संधि में इ + इ = ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। दीर्घ स्वर संधि के और उदाहरण खोजकर लिखिए। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, के बाद ह्रस्व या दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाता है, इसी कारण इस संधि को दीर्घ संधि कहते हैं; जैसे- संग्रह + आलय = संग्रहालय, महा + आत्मा = महात्मा। इस प्रकार के कम से कम दस उदाहरण खोजकर लिखिए।

दो स्वरों के बीच विकार हो तो स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के प्रकार -

1. **दीर्घ संधि**	**जैसे-**	**पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, कवि + इंद्र = कवींद्र, गुरु + उपदेश = गुरूपदेश,**
2. **गुण संधि**	**जैसे-**	**महा + ईश्वर = महेश्वर, पर + उपकार = परोपकार, महा + ऋषि = महर्षि,**
3. **वृद्धि संधि**	**जैसे-**	**एक + एक = एकैक, सुंदर + ओदन = सुंदरौदन महा + औषधि = महौषधि**

SCERT TELANGANA

4. **यण संधि**	**जैसे-**	**प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष, सु +आगत = स्वागत** **मातृ + अनुमति = मात्रनुमति**
5. **अयादि संधि**	**जैसे-**	**ने + अन = नयन,** **भो + अन = भवन**

प्रशंसा

गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर पहुँचने वाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है। बारिश, सर्दी और गर्मी चाहे कितना भी कष्ट हो डाकिया हमारे घर पहुँच जाता है। हमारे जीवन में डाकिये की भूमिका महत्वपूर्ण है। डाकिये की ईमानदारी और कर्मठता की प्रशंसा करते हुए दस वाक्य लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किन्हीं दो त्यौहारों पर अपने मित्रों को बधाई देने के लिए एस.एम.एस. तैयार कीजिए।

परियोजना कार्य

आप अपने मित्रों को संपर्क में रखने के लिए क्या उपाय करना चाहेंगे? अपने मित्रों से चर्चा करते हुए योजना तैयार कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	**हाँ (✓)**	**नहीं (×)**
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. संदेशों का महत्व व संचार साधनों के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. पत्र, एस.एम.एस आदि तैयार कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इकाई-II

6. अरमान

–रामनरेश त्रिपाठी

प्रस्तावना प्रसंग–

अपने लिए जिए तो क्या जिए,
तू जी ऐ दिल ज़माने के लिए।

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. केवल अपने लिए जीना क्यों व्यर्थ है?
2. ज़माने के लिए जीने से क्या तात्पर्य है?
3. इस नीति के बारे में आप के क्या विचार हैं?

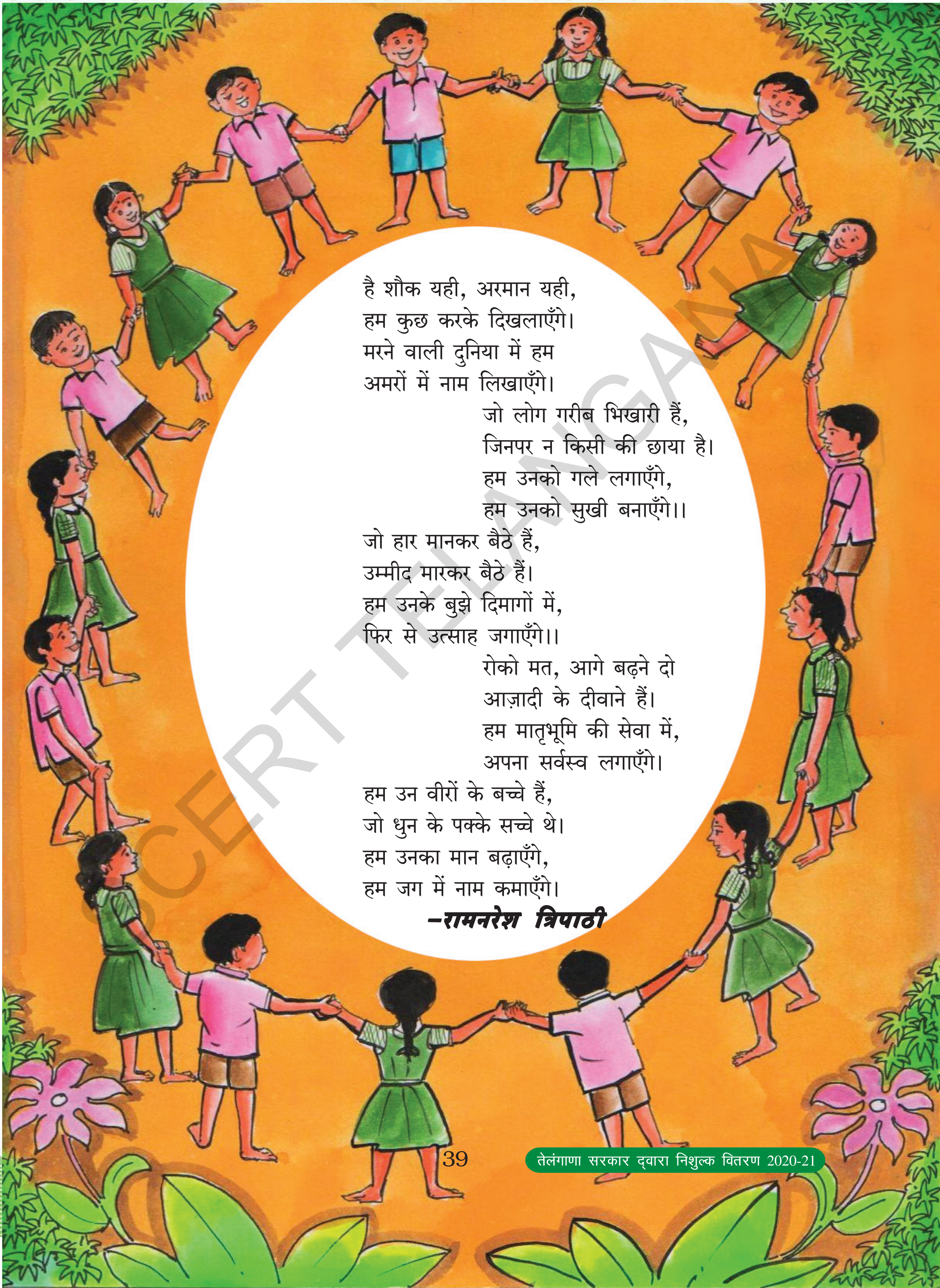

है शौक यही, अरमान यही,
हम कुछ करके दिखलाएँगे।
मरने वाली दुनिया में हम
अमरों में नाम लिखाएँगे।

जो लोग गरीब भिखारी हैं,
जिनपर न किसी की छाया है।
हम उनको गले लगाएँगे,
हम उनको सुखी बनाएँगे।।

जो हार मानकर बैठे हैं,
उम्मीद मारकर बैठे हैं।
हम उनके बुझे दिमागों में,
फिर से उत्साह जगाएँगे।।

रोको मत, आगे बढ़ने दो
आज़ादी के दीवाने हैं।
हम मातृभूमि की सेवा में,
अपना सर्वस्व लगाएँगे।

हम उन वीरों के बच्चे हैं,
जो धुन के पक्के सच्चे थे।
हम उनका मान बढ़ाएँगे,
हम जग में नाम कमाएँगे।

–रामनरेश त्रिपाठी

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. प्रत्येक बच्चा जीवन में कुछ न कुछ बनना चाहता है। सबके मन में कोई न कोई अभिलाषा होती है। आप क्या बनना चाहते हैं? कारण सहित बताइए।
2. जीवन में हम अनेक कार्य करते हैं, कुछ अपने लिए तो कुछ दूसरों के लिए। आप किसके लिए काम करना पसंद करेंगे? क्यों? इस बारे में अपने मित्रों के भी विचार जानिए।

पढ़िए

1. नीचे दी गई पंक्तियाँ पढ़िए। इनमें कविता की जिन पंक्तियों के भाव आए हैं, उन्हें लिखिए।

क. जो लोग निर्धन हैं, गरीब हैं, भीख माँग कर अपना जीवन बिताते हैं। जिनका कोई ध्यान नहीं रखता। जिनकी कोई सहायता नहीं करता। हम उनकी सहायता करेंगे। उनको सुखी बनायेंगे।

ख. हमारे पूर्वज बहुत बहादुर थे। बड़े मेहनती थे। उन्होंने हमें बहुत कुछ सिखाया। विश्व में भारत देश की अलग पहचान बनायी। अब हम उनका नाम और आगे बढ़ाएँगे।

2. 'रोको मत, आगे बढ़ने दो
   आज़ादी के दीवाने हैं।' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

लिखिए

1. अमरों में नाम लिखाने के लिए हमें क्या करना होगा? चर्चा कीजिए।
2. उम्मीद खोने का क्या मतलब है? उम्मीद खो देने वाले लोगों का जीवन कैसा होता है?
3. हमें गरीब लोगों की मदद क्यों करनी चाहिए?
4. हमारा देश आगे कैसे बढ़ सकता है?
5. धुन के पक्के लोग कैसे होते हैं?

शब्द भंडार

नीचे दिए गए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

1. कुछ कर दिखलाना
2. अमर हो जाना
3. किसी की छाया न होना
4. गले लगाना
5. दिमाग बुझ जाना
6. उत्साह जगाना
7. आगे बढ़ना
8. नाम कमाना

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

नीचे दिए गए शब्दों में संज्ञाएँ और उनके विशेषण रूप हैं। इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करें और अंतर समझें।

शौक-शौकीन, नाम - नामी, सुख -सुखी, उत्साह-उत्साही, वीर-वीरता

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आप भी कविता लिखने का प्रयास कर सकते हैं। इस कविता की पंक्तियाँ आगे बढ़ाइए।

प्रशंसा

जीवन में सबका कुछ न कुछ अरमान होता है। कभी-कभी एक की इच्छा दूसरे की इच्छापूर्ति में बाधक बन जाती है। अपनी इच्छा पूरी करते समय दूसरों की इच्छा का ख्याल रखना सज्जन मनुष्य का गुण है। इस संदर्भ में आप अपने विचार लिखिए।

परियोजना कार्य

कोई एक व्यक्ति जिसे आप अमर मानते हैं, उसके बारे में जानकारी एकत्र करके लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	**हाँ** (✓)	**नहीं** (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. सेवाभाव का महत्व बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित विषय पर कविता लिखने का प्रयास कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-II

7. कामचोर

–इस्मत चुगताई

प्रस्तावना प्रसंग–

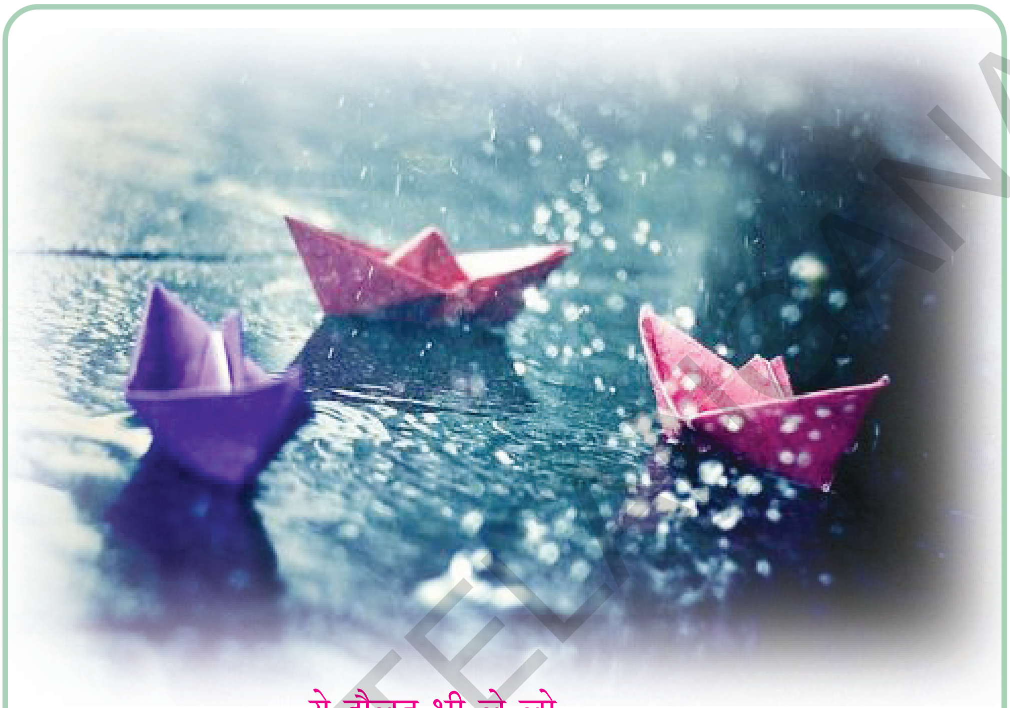

ये दौलत भी ले लो,
ये शोहरत भी ले लो,
भले छीन लो
मुझसे मेरी जवानी।
मगर मुझको लौटा दो
बचपन का सावन,
वो कागज़ की कश्ती
वो बारिश का पानी।

- सुदर्शन फ़ाकिर

प्रश्न

1. बच्चों को सब लोग अधिक पसंद क्यों करते हैं?
2. बचपन सबको क्यों अच्छा लगता है?
3. कवि ने कागज़ की कश्ती और बारिश के पानी की चर्चा क्यों की है?

SCERT TELANGANA

बड़ी देर के वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे-मोटे किस काम के हैं! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के!

" तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।"

और सचमुच हमें खयाल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है? इसलिए हमने तुरंत हिल-हिलाकर पानी पीना शुरू किया।

हिलने में धक्के भी लग जाते है और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएँ। लीजिए, पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध हो गया। सुराहियाँ उधर लुढ़कीं। मटके इधर गए। कपड़े भीगे, सो अलग।

'यह भला काम करेंगे। अम्मा ने निश्चय किया।'

" करेंगे कैसे नहीं! देखो जी! जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा। समझे।"

यह लीजिए बिलकुल शाही फरमान जारी हो रहे हैं।

"हम काम करने को तैयार हैं। काम बताए जाएँ," हमने दुहाई दी।

"बहुत-से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए, यह दरी कितनी मैली हो रही है। आँगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई मुफ़्त तो यह काम करवाए नहीं जाएँगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।"

अब्बा मियाँ ने कुछ काम बताए और दूसरे कामों का हवाला भी दिया-माली को तनख्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पानी डालें, तो....

'ऐ हे! खुदा के लिए नहीं। घर में बाढ़ आ जाएगी।' अम्मा ने याचना की। फिर भी तनख्वाह के सपने देखते हुए हम लोग काम पर तुल गए।

एक दिन फर्शी दरी पर बहुत-से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़कर झटकना शुरू

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

किया। दो-चार ने लकड़ियाँ लेकर धुआँधार पिटाई शुरू कर दी।

सारा घर धूल से अट गया। खाँसते-खाँसते सब बेदम हो गए। सारी धूल जो दरी पर थी, जो फर्श पर थी, सबके सिरों पर जम गई। नाकों और आँखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका। हम लोगों को तुरंत आँगन में निकाला गया। वहाँ हम लोगों ने फौरन झाडू देने का फैसला किया।

झाडू क्योंकि एक थी और तनख्वाह लेनेवाले उम्मीदवार बहुत, इसलिए क्षण-भर में झाडू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींकें जिसके हाथ पड़ी, वह उनसे ही उलटे-सीधे हाथ मारने लगा। अम्मा ने सिर पीट लिया। भई, ये बुजुर्ग काम करने दें तो इंसान काम करे। जब ज़रा-ज़रा सी बात पर टोकने लगे तो बस, हो चुका काम!

असल में झाडू देने से पहले ज़रा-सा पानी छिड़क लेना चाहिए। बस, यह खयाल आते ही तुरंत दरी पर पानी छिड़का गया। एक तो वैसे ही धूल से अटी हुई थी। पानी पड़ते ही सारी धूल कीचड़ बन गई।

अब सब आँगन से भी निकाले गए। तय हुआ कि पेड़ों को पानी दिया जाए। बस, सारे घर की बालटियाँ, लोटे, तसले, भगोने, पतीलियाँ लूट ली गई। जिन्हें ये चीज़े भी न मिलीं, वे ड़ोंगे-कटोरे और गिलास ही ले भागे।

अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहाँ भी वह घमासान मची कि क्या मजाल जो एक बूँद पानी भी किसी के बर्तन में आ सके। ठूसम-ठास! किसी बालटी पर पतीला और पतीले पर लोटा और भगोने और डोंगे। पहले तो धक्के चले। फिर कुहनियाँ और उसके बाद बरतन। फौरन बड़े भाइयों, बहनों, मामुओं और दमदार मौसियों, फूफियों की कुमक भेजी गई, फौज मैदान में हथियार फेंककर पीठ दिखा गयी।

इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड़ में लथपथ हो गए जिन्हें नहलाकर कपड़े बदलवाने के लिए नौकरों की वर्तमान संख्या काफी नहीं थी। पास के बंगलों से नौकर आए और चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से नहलवाए गए।

हम लोग कायल हो गए कि सचमुच यह सफ़ाई का काम अपने बस की बात नहीं और न पेड़ों की देखभाल हमसे हो सकती है। कम-से-कम मुर्गियाँ ही बंद कर दें।

बस, शाम ही से जो बाँस हाथ पड़ी, लेकर मुर्गियाँ हाँकने लगे। "चल दड़बे, दड़बे।"

पर साहब, मुर्गियों को भी किसी ने हमारे विरुद्ध भड़का रखा था। ऊट-पटाँग इधर-उधर कूदने लगीं। दो मुर्गियाँ खीर के प्यालों से जिन पर आया चाँदी के वर्क लगा रही थी, दौड़ती-फड़फड़ाती हुई निकल गयी।

तूफ़ान गुजरने के बाद पता चला कि प्याले खाली हैं और सारी खीर दीदी के कामदानी के दुपट्टे और ताजे धुले सिर पर लगी हुई है। एक बड़ा-सा मुर्गा अम्मा के खुले हुए पानदान में कूद पड़ा और कत्थे-चूने में लुथड़े हुए पंजे लेकर नानी अम्मा की सफ़ेद दूध जैसी चादर पर छापे मारता हुआ निकल गया।

SCERT TELANGANA

एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाक मारकर भागी और सीधी जाकर मोरी में इस तेज़ी से फिसली कि सारी कीचड़ मौसी जी के मुँह पर पड़ी जो बैठी हुई हाथ-मुँह धो रही थीं। इधर सारी मुर्गियाँ बेनकेल का ऊँट बनी चारों तरफ़ दौड़ रही थीं।

एक भी दड़बे में जाने को राजी न थी।

इधर, किसी को सूझी कि जो भेड़ें आई हुई हैं, लगे हाथों उन्हें भी दाना खिला दिया जाए।

दिन-भर की भूखी भेड़ें दाने का सूप देखकर जो सबकी सब झपटीं तो भागकर जाना कठिन हो गया। लश्टम-पश्टम तख्तों पर चढ़ गईं। पर भेड़-चाल मशहूर है। उनकी नज़र तो बस दाने के सूप पर जमी हुई थी। पलंगों को फलाँगती, बरतन लुढ़काती साथ-साथ चढ़ गयीं।

तख्त पर बानी दीदी का दुपट्टा फैला हुआ था जिस पर गोखरी, चंपा और सलमा-सितारे रखकर बड़ी दीदी मुगलानी बुआ को कुछ बता रही थीं। भेड़ें बहुत निःसंकोच सबको रौंदती, मेंगनों का छिड़काव करती हुई दौड़ गयी।

जब तूफ़ान गुजर चुका तो ऐसा लगा जैसे जर्मनी की सेना टैंकों और बमबारों सहित उधर से छापा मारकर गुजर गयी हो। जहाँ-जहाँ से सूप गुजरा, भेड़ें शिकारी कुत्तों की तरह गंध सूँघती हुई हमला करती गयीं।

हज्जन माँ एक पलंग पर दुपट्टे से मुँह ढाँके सो रही थीं। उन पर से जो भेड़ें दौड़ी तो न जाने वह सपने में किन महलों की सैर कर रही थीं, दुपट्टे में उलझी हुई 'मारो-मारो' चीखने लगीं।

इतने में भेड़ें सूप को भूलकर तरकारी वाली की टोकरी पर टूट पड़ी। वह दालान में बैठी मटर की फलियाँ तोल-तोल कर रसोइए को दे रही थी। वह अपनी तरकारी का बचाव करने के लिए सीना तान कर उठ गई। आपने कभी भेड़ों को मारा होगा, तो अच्छी तरह देखा होगा कि बस, ऐसा लगता है जैसे रूई के तकिए को कूट रहे हों। भेड़ को चोट ही नहीं लगती। बिलकुल यह समझकर कि आप उससे मज़ाक कर रहे हैं। वह आप ही पर चढ़ बैठेगी। ज़रा-सी देर में भेड़ों ने तरकारी छिलकों समेत अपने पेट की कड़ाही में झोंक दी।

इधर यह प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे। इतनी बड़ी फौज थी-जिसे रात का खाना न मिलने की धमकी मिल चुकी थी। वे चार भैंसों का दूध दुहने पर जुट गए। धुली-बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। भैंस एकदम जैसे चारों पैर जोड़कर उठी और बालटी

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

को लात मारकर दूर जा खड़ी हुई।

तय हुआ कि भैंस की अगाड़ी-पिछाड़ी बाँध दी जाए और फिर काबू में लाकर दूध दुह लिया जाए। बस, झूले की रस्सी उतारकर भैंस के पैर बाँध दिए गए। पिछले दो पैर चाचा जी की चारपाई के पायों से बाँध, अगले दो पैरों को बाँधने की कोशिश जारी थी कि भैंस चौकन्नी हो गई। छूटकर जो भागी तो पहले चाचा जी समझे कि शायद कोई सपना देख रहे हैं। फिर जब चारपाई पानी के ड्रम से टकराई और पानी छलककर गिरा तो समझे कि आँधी-तूफ़ान में फँसे हैं। साथ में भूचाल भी आया हुआ है। फिर जल्दी ही उन्हें असली बात का पता चल गया और वह पलंग की दोनों पटियाँ पकड़े, बच्चों को छोड़ देनेवालों को बुरा-भला सुनाने लगे।

यहाँ बड़ा मज़ा आ रहा था। भैंस भागी जा रही थी और पीछे-पीछे चारपाई और उस पर बैठे हुए थे चाचा जी।

ओहो! एक भूल ही हो गयी यानी बछड़ा तो खोला ही नहीं, इसलिए तत्काल बछड़ा भी खोल दिया गया।

तीर निशाने पर बैठा और बछड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिए। बछड़ा तत्काल जुट गया। दुहने वाले गिलास-कटोरे लेकर लपके क्योंकि बालटी तो छपाक से गोबर में जा गिरी थी। बछड़ा फिर बागी हो गया।

कुछ दूध जमीन पर और कपड़ों पर गिरा। दो-चार धारें गिलास-कटोरों पर भी पड़ गई। बाकी बछड़ा पी गया। यह सब कुछ, कुछ मिनट के तीन-चौथाई में हो गया।

घर में तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगता था जैसे सारे घर में मुर्गियाँ, भेड़ें, टूटे हुए तसले, बालटियाँ, लोटे, कटोरे और बच्चे थे। बच्चे बाहर किये गये। मुर्गियाँ बाग में हँकाई गयी। मातम-सा मनाती तरकारी वाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं।

"या तो बच्चा-राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। नहीं तो मैं चली मायके," अम्मा ने चुनौती दे दी।

और अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया। "अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज़ को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जाएगा।"

SCERT TELANGANA

ये लीजिए इन्हें किसी करवट शांति नहीं। हम लोगों ने भी निश्चय कर लिया कि अब चाह कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. बड़े होते बच्चे किस प्रकार माँ–बाप के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार? अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. कामचोर कहानी एकल परिवार की कहानी है या संयुक्त परिवार की? इन दोनों तरह के परिवारों में क्या अंतर होते हैं? इसके पक्ष–विपक्ष में चर्चा कीजिए।
3. घरेलू नौकरों को हटाने की बात किन–किन परिस्थितियों में उठ सकती है? विचार कीजिए।

पढ़िए

1. कहानी में मोटे–मोटे किस काम के हैं? किनके बारे में और क्यों कहा गया?
2. बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई?
3. या तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। अम्मा ने कब कहा? और इसका परिणाम क्या हुआ?
4. क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे? क्यों?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. घर के सामान्य काम हों या अपना निजी काम, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार उन्हें करना आवश्यक क्यों है?
2. कहानी में एक समृद्ध परिवार के ऊधमी बच्चों का चित्रण है। आपके अनुमान से उनकी आदत क्यों बिगड़ी होगी? उन्हें ठीक ढंग से रहने के लिए आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

3. भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधार पर निर्णय कीजिए।

शब्द भंडार

1. वाक्य पढ़िए। मुहावरों का प्रयोग समझिए। उनका पुनः वाक्य प्रयोग कीजिए।

क. फौज मैदान में हथियार फेंक कर पीठ दिखा गई।

पीठ दिखाना-

ख. तीर निशाने पर बैठा और बछड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिए।

तीर निशाने पर लगना-

ग. तनख्वाह के सपने देखते हुए हम लोग काम पर तुल गये।

काम पर तुल जाना -

2. इधर यह प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे।

उपर्युक्त वाक्य की तरह इधर-उधर शब्दों का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

धुली-बेधुली बालटी लेकर आट हाथ चार थनों पर पिल पड़े। धुली शब्द से पहले बे लगाकर बेधुली शब्द बना है। जिसका अर्थ है- बिना धुली, बे एक उपसर्ग है। बे उपसर्ग से बननेवाले कुछ और शब्द हैं- बेतुका, बेईमान, बेघर, बेचैन, बेहोश आदि, आप भी नीचे लिखे उपसर्गों से बननेवाले शब्द ढूँढ़िए और लिखिए-

1. प्र 2. आ 3. भर 4. बद

प्रशंसा

बच्चे अपने घर में तरह-तरह का ऊधम मचाते हैं, फिर भी माता-पिता इनको सहते हैं। बच्चे चाहे कितनी भी शरारत करें माँ-बाप के वात्सल्य में कमी नहीं आती। आपके घर में बड़े लोग आपके लिए क्या-क्या करते हैं? आप किस प्रकार उनका आभार प्रकट करना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

अपने बचपन की किसी रोचक घटना का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

परियोजना कार्य

अपने घर के किसी बड़े से उनके बचपन की कोई एक रोचक घटना पूछकर लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. अपने बचपन के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. किसी घटना का रोचक वर्णन करने का प्रयास कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इकाई-II

8. क्या निराश हुआ जाए

–हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रस्तावना प्रसंग–

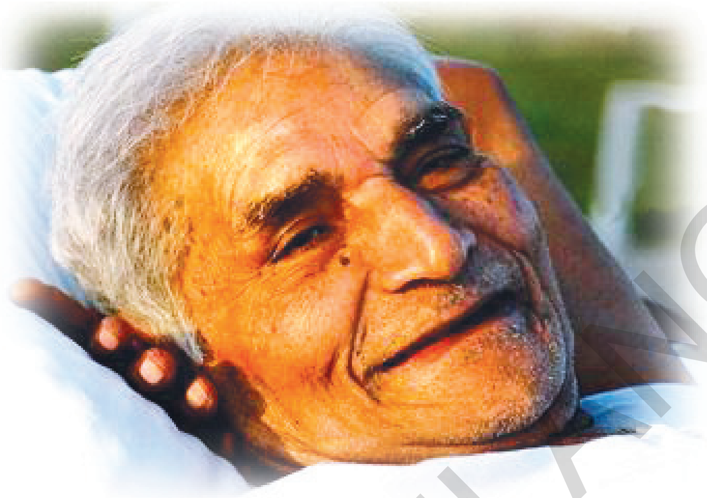

कैसे कहूँ कि मनुष्यता
एकदम समाप्त हो गई।
कैसे कहूँ कि लोगों में
दया–माया रह ही नहीं
गई। जीवन में जाने
कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं
जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

– पाठ से

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. बाबा आम्टे और मदर टेरेसा के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. मानवतापूर्ण कार्यों से ही मानवता को जीवित रखा जा सकता है। स्पष्ट कीजिए।
3. मानव और दानव में भेद मात्र मानवता से ही है। स्पष्ट कीजिए।

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ऊँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिंता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था? रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'मानव महा-समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सचाई केवल भीरू और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है। भारत वर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सचाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, ''यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सचाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुककर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, ''यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।'' परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, ''हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।'' डर तो मेरे मन में था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं हैं। परंतु यात्री इतने घबरा गए कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ''इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को

SCERT TELANGANA

पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।''

मैं भी बहुत भयभीत था पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, ''अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।'' फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, ''पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।'' यात्रियों में फिर जान आयी। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गये।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गयी! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं है।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. अच्छा व्यवहार करने से समाज में भलाई फैलती है। कैसे? स्पष्ट कीजिए।
2. दोषों का पर्दाफाश करना कब बुरा रूप ले सकता है? क्यों?

पढ़िए

1. लेखक ने लेख का शीर्षक क्या निराश हुआ जाये क्यों रखा होगा? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं? अपनी ओर से इस पाठ का एक शीर्षक दीजिए और उसका कारण बताइए।
2. लेखक ने अपने जीवन की दो घटनाओं में रेलवे के टिकट बाबू और बस कंडक्टर की अच्छाई तथा ईमानदारी की बातें बताई हैं। वे क्या हैं?
3. लेखक ने आज के समाज में कौन–कौन सी बुराइयाँ देखीं?
4. आज के समाज में जीवन के महान मूल्यों के प्रति आस्था डगमगा रही है। क्यों?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आज के समाज में मूल्य कम होते जा रहे हैं। इसका आप क्या कारण मानते हैं?
2. भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपना क्रोध व्यक्त करना किस बात को प्रमाणित करता है?
3. 'कर भला तो हो भला।' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. "हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।" आपके विचार से हमारे महान मनीषियों ने किस तरह के भारत के सपने देखे थे?
2. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए?

शब्द भंडार

निम्नलिखित युग्म शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

आरोप–प्रत्यारोप, दिन–रात, लोभ–मोह, मारने–पीटने, गुण–दोष

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

भाषा की बात

1. समास का एक प्रकार है- द्वंद्व समास। इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक दूसरे में द्वंद्व (स्पद्र्धा, होड़) की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता, जैसे- चरम और परम = चरम-परम, भीरु और बेबस = भीरु-बेबस। दिन और रात = दिन-रात। और के साथ आए शब्दों के जोड़े को और हटाकर (-) चिह्न भी लगाया जाता है। कभी-कभी एक साथ भी लिखा जाता है। द्वंद्व समास के बारह उदाहरण ढूँढकर लिखिए।
2. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

प्रशंसा

लेखक ने अपने जीवन में कई बार धोखा खाया। वह ठगा भी गया। किंतु विभिन्न परिस्थितियों में कुछ ईमानदार व सज्जन लोगों के आगमन द्वारा उसके मन का हौंसला बँधा रहा। हमारे सदाचार का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आपने इस लेख में एक बस की यात्रा के बारे में पढ़ा। इससे पहले भी आप एक बस यात्रा के बारे में पढ़ चुके हैं। यदि दोनों बस यात्राओं के लेखक आपस में मिलते तो एक-दूसरे को कौन-कौन सी बातें बताते? अपनी कल्पना से उनकी बातचीत लिखिए।

परियोजना कार्य

समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविज़न पर आपने ऐसी अनेक घटनाएँ देखी-सुनीं होंगी जिनमें लोगों ने बिना किसी लालच के दूसरों की सहायता की हो या ईमानदारी से काम किया हो। ऐसे समाचार तथा लेख एकत्रित करें और कम से कम दो घटनाओं पर अपनी टिप्पणी लिखें।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. ईमानदारी का महत्व बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित विषय पर निबंध लिखने का प्रयास कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

थैंक्यू निकुंभ सर

उपवाचक

-सुरेश उनियाल

पहले आपको बच्चे से मिलवाऊँ। तो ये हैं- ईशान अवस्थी। दस साल के हो गए हैं लेकिन दो साल से तीसरी कक्षा में ही पढ़ रहे हैं। इन्हें अगर आनंद आता है तो रंगों, मछलियों, पतंगों और अपने पालतू कुत्ते की संगत में। क्लास में क्या पढ़ाया जा रहा है, इनकी समझ में नहीं आता था। कुछ पढ़ने की कोशिश में सारे अक्षर आँखों के सामने डाँस करने लगते थे। होमवर्क से इन्हें चिढ़ थी, रिपोर्ट कार्ड इनके लिए कागज़ का टुकड़ा-भर था जिसका इस्तेमाल इनके डॉगी ज़्यादा अच्छी तरह से कर सकते थे, उसे चिंदी-चिंदी करके।

टैस्ट में सवाल था तीन गुणा नौ कितने? सामने आ गए सौर मंडल के नौ ग्राह केतु के पास ले गया। दोनों में टक्कर हुई और नौ हो गया चूर-चूर। बचा क्या तीन। लिख दिया आंसर शीट पर। ईशान का तरीक़ा तो यही था।

पहले पीरियड में क्लास से बाहर कर दिए तो दूसरे पीरियड में इसलिए बंक कर गए कि मैथ्स का होमवर्क तो किया ही नहीं था। निकल गए अकेले सड़क पर। रात को याद आया तो बड़े भैया योहान को जगाकर उनसे एब्सेंट नोट तैयार कराने के लिए खुशामद की। पापा को पता चला तो डाँट पड़ी।

अगले दिन पापा स्कूल में टीचर्स से मिले तो और बहुत-सी बातों का पता चला। तय हुआ कि ईशान को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया जाए क्योंकि बोर्डिंग स्कूलवाले ठोक-पीटकर ठीक कर देते हैं।

ईशान चिल्लाता रह गया कि वह बोर्डिंग स्कूल नहीं जाएगा, माँ से दूर नहीं जाएगा, लेकिन पिता नहीं माने।

वहाँ से पिता को आश्वासन मिला कि यहाँ तो बड़े-बड़े बिगडैल घोड़ों को नाल पहनाई है हमने। और था भी कुछ ऐसा ही। यह टीचर डपटते कुछ इस तरह कि वह डाँट कम और अपमान ज़्यादा होता। ड्राइंग टीचर तो पिटाई करने से भी नहीं चूके। बात करने के लिए था तो साथ बैठनेवाला लड़का राजन दामोदरन जो बैसाखियों के सहारे चलता था।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

परिवार से दूरी और हर बात पर अपमान ने ईशान को तोड़कर रख दिया। वह अपने में ही सिमटकर रह गया। ज़बान जैसे मुँह के अंदर बंद होकर रह गई। लेकिन किसी को इसकी परवाह नहीं थी। माँ का फ़ोन आया तब भी यह ज़बान बंद ही रही। वह बता रही थीं कि इस शनिवार को मिलने नहीं आ पाएँगे क्योंकि भाई योहान का टेनिस मैच था। माँ बात करती जा रही थीं और ईशान फ़ोन नीचे रखकर चला गया था। सिर झुकाए, चुपचाप।

एक दिन एक नए ड्राइंग टीचर आए। राम शंकर निकुंभ। वही गुरु जिनका ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है। आए भी तो एक तूफ़न की तरह। नियम, कायदे, अनुशासन को तोड़ने के संदेश के साथ। जो मन में है, जो आपकी कल्पना में है, उसे कागज़ पर उतारो।

हर बच्चा अपने मन से चित्र बना रहा था। पूरे क्लासरूम में जैसे रंगों का एक कार्निवॉल-सा सज रहा हो। लेकिन कागज़ की एक शीट अब भी कोरी थी। निकुंभ सर की नज़र इस कार्निवॉल पर से घूम-घूमकर उस सफ़ेद शीट की ओर जाती। इस उम्मीद के साथ जाती कि वहाँ रंगों ने अपना खेल शुरू कर दिया होगा। लेकिन शीट तो कोरी ही मिलती। उस चुप्पे से बच्चे से बात करने की कोशिश की, लेकिन ज़बान तो क्या, उसकी उदास आँखें भी कुछ बोलने से इनकार कर रही थीं।

उसके बारे में जानने के लिए ईशान की दूसरे विषयों के होमवर्क की कॉपियाँ देखीं। कुछ और अधिक जानने के लिए मुंबई उसके घर चले गए। ईशान की चीज़े देखी तो पता चला कि उस चुप्पे से बच्चे के भीतर तो एक रंगों का जादूगर छिपा बैठा है। कल्पनाशीलता की जो उड़ान यहाँ है, वह किसी आम बच्चे में तो नहीं होती। नासमझी एक इतनी बड़ी प्रतिभा को बरबाद कर रही है। तय किया कि ऐसा नहीं होने देंगे।

पहले तो पिता को डाँट पिलाई। बताया कि डिसलेक्सिया नाम की एक बीमारी होती है, जिसमें बच्चे को शब्दों और अंकों की जटिल प्रक्रिया को समझने में दिक्कत होती है। जो चीज़े आम बच्चे को आसानी से समझ में आ सकती हैं, उन्हें समझाने के लिए उस पर अतिरिक्त मेहनत की जाने की ज़रूरत है। लेकिन उसकी उस एक अक्षमता को लेकर कोसते रहने से एक कलाकार के रूप में उसकी प्रतिभा को बरबाद किया जा रहा है।

स्कूल में प्रिंसिपल को भी समझाया कि एक होनहार बच्चे को नालायक़ मानकर कोसा जा रहा है और नष्ट किया जा रहा है। उसे डाँट की नहीं, समझे जाने की ज़रूरत है, सहानुभूति की ज़रूरत है।

वह अपने काम पर लग गए। उस चुप्पे बच्चे की पहले तो ज़बान लौटाई, फिर उसकी

SCERT TELANGANA

कल्पनाशक्ति और कुछ कर दिखाने की इच्छा। दूसरे विषयों पर भी वे उसके साथ मेहनत करते रहे।

और फिर एक दिन निकुंभ सर ने एक अनोखा एलान किया। स्कूल में एक ड्राइंग कंपिटीशन का। इसमें सब हिस्सा लेंगे, बच्चे भी और टीचर भी।

नियत दिन पर कांपिटीशन शुरू हुआ। सब आए लेकिन ईशान का कहीं पता ही नहीं था। समय हो गया था। राजन से पूछा तो पता चला कि वह तो सुबह ही उठकर कहीं चला गया था।

वह गया था झील के किनारे, उसके पूरे वातावरण को सुबह की आभा में अपने भीतर समेटने।

एक घंटा बीत गया था। निकुंभ सर निराश हो गए थे लेकिन तभी वह दिखाई दिया और बिना कुछ बात किए काम पर लग गया।

निर्णय के लिए आई थीं प्रख्यात चित्रकार ललिता लाज़मी। प्रिंसपल साहब ने निर्णय की घोषणा की कि दो चित्रों के बीच 'टाई' है। जीतना तो एक को ही था इसलिए गुरु-निकुंभ सर पीछे रह गए और जीत गया शिष्य-ईशान। तालियों का शोर हो रहा था लेकिन ईशान अपने में सिटा बच्चों के पीछे दुबका जा रहा था।

स्कूल की एनुअल रिपोर्ट छपी तो उसके पहले आवरण पर छपी थी- ईशान की पेंटिंग और पीछे के पृष्ठ पर निकुँभ सर की पेंटिंग। ईशान का चेहरा रंगों के अंतरिक्ष के बीच में। खुशी से खिला हुआ।

ईशान को यह खुशी देने के लिए धन्यवाद निकुंभ सर।

फ़िल्म की कथा का पुनर्लेखन

प्रश्न :

१. अपनी मनपसंद कला के बारे में बताइए।

२. ईशान में कैसी प्रतिभा छिपी थी? अपने शब्दों में बताइए।

३. बच्चों के प्रति निकुंभ सर के विचार कैसे थे?

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इकाई-III

9. कबीर की साखियाँ

प्रस्तावना प्रसंग–

पंछी, मानव, फूल, जल, अलग-अलग आकार।
माटी का घर एक ही, सारे रिश्तेदार।।

- निदा फ़ाज़ली

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. प्रस्तुत दोहे में सबको माटी का घर क्यों कहा गया है?
2. पृथ्वी के सारे प्राणी एक–दूसरे के संबंधी हैं। कैसे?
3. इस दोहे का संदेश क्या है?

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।1।।

आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।।2।।

माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि।
मनुवा तो दहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।।3।।

कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ।।4।।

जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय ।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।5।।

संत सुधासार : सं.- वियोगी हरि

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. वर्तमान समय में कबीर के दोहों की सार्थकता पर चर्चा कीजिए।
2. हम जानते हैं कि कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, किन्तु इनके दोहे नीतिपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। इस प्रकार निरक्षर होना साक्षर होने से अधिक महत्वपूर्ण है। चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं। उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं?
2. पाठ की तीसरी साखी, जिसकी एक पंक्ति है- "मनुवा तो दहुँ दिसि फिरै, ये तो सुमिरन नाहिं।" के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?
3. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं? पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेने वाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे में व्यक्त होता है?
5. कबीर ने किस दोहे में अपशब्द का प्रयोग न करने के लिए कहा है?
6. "सभी प्रकार के मनुष्य एक ही प्रकार से देखते-सुनते हैं। पर एक समान विचार नहीं रखते। सभी अपनी-अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार कार्य करते हैं।" पाठ में आये कबीर की किस साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के भाव मिलते हैं।

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. गर्व त्याग करने से क्या लाभ है?
2. ईश्वर भक्ति में आडंबर नहीं होना चाहिए। इससे आप क्या समझते हैं?
3. जिसके पास ज्ञान है उसी की जाति श्रेष्ठ है, क्यों?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. कबीर ने अपने समय की रूढ़ियों व अंधविश्वासों का विरोध किया। आज भी हमारे समाज में अनेक प्रकार की रूढ़ियाँ विद्यमान हैं। वे क्या हैं? सोचकर लिखिए।
2. कबीर ने तत्कालीन रूढ़ियों व अंधविश्वासों को मिटाने के लिए कविताएँ लिखीं। आप आज की रूढ़ियों को दूर करने के लिए क्या करना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. "या आपा को डारि दे, दया करे सब कोय"
   "ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।"
   इन दोनों पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने या खो देने की बात की गई है। 'आपा' किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। क्या 'आपा', 'स्वार्थ' के निकट का अर्थ देता है या 'घमंड' का?
2. 'माला तो कर में फिरै।' इस चरण में आये कर का अर्थ क्या है– ( )
   क. करना ख. हाथ ग. चुंगी
3. 'मनुवा तो दहुँ दिसि फिरै।' इस चरण में आये दिसि का अर्थ है– ( )
   क. देश ख. दिन ग. दिशा

भाषा की बात

बोलचाल की क्षेत्रीय विशेषताओं के कारण शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन होता है, जैसे– **वाणी** शब्द **बानी** बन जाता है। **मन** से **मनवा, मनुवा** आदि हो जाते हैं। उच्चारण के परिवर्तन से वर्तनी भी बदल जाती है। नीचे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं उनका वह रूप लिखिए जिससे आपका परिचय हो– ग्यान, जीभि. पाऊँ. तलि, आँखि, बरी।

प्रशंसा

पहले की कविताएँ अधिक नीतिपरक और उपदेशात्मक होती थीं। हमारे जीवन में साधु, संतों व बुजुर्गों के नीतिपरक संदेशों का क्या महत्व है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आपने कबीर के उपदेशात्मक दोहे पढ़े। इन दोहों को सूक्ति वाक्यों के रूप में लिखिए।

परियोजना कार्य

पाँच अन्य नीतिपरक दोहों का संकलन कीजिए और उनके भावार्थ लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. नीतिपरक बातों का महत्व बता सकता/सकती हूँ।		
5. ज्ञात विषय संबंधी सूक्ति वाक्यों का निर्माण कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-III

10. जब सिनेमा ने बोलना सीखा

–प्रदीप तिवारी

प्रस्तावना प्रसंग–

मैं सिनेमा हूँ
तुम्हारा अतीत कहता हूँ,
तुम्हारे वर्तमान में रहता हूँ,
तुम्हारा भविष्य गढ़ता हूँ,
तुम्हारी कथा से
तुम्हारी व्यथा से
तुम्हीं से
तुम्हारा मन हरता हूँ
कल्पना हूँ
मगर हकीकत कहता हूँ।

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. सिनेमा का संबंध हमारे भूत, भविष्य एवं वर्तमान से है, कैसे?
2. जब सिनेमा नहीं था तो लोग अपना मनोरंजन किस प्रकार करते होंगे?
3. अपने आरंभिक दिनों में सिनेमा कैसे होते होंगे? उन्हें देखकर उस समय के लोग क्या सोचते होंगे?

'वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।' देश की पहली सवाक् (बोलती) फिल्म 'आलम आरा' के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। 14 मार्च 1931 की वह ऐतिहासिक तारीख भारतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था। हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था। पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई, उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनीं। मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था।

पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनानेवाले फिल्मकार थे अर्देशिर एम. ईरानी। अर्देशिर ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर उन्होंने अपनी फिल्म की पटकथा बनाई। इस नाटक के कई गाने ज्यों के त्यों फिल्म में ले लिए गए। एक इंटरव्यू में अर्देशिर ने उस वक्त कहा था- 'हमारे पास कोई संवाद लेखक नहीं था, गीतकार नहीं था, संगीतकार नहीं था।' इन सबकी शुरुआत होनी थी। अर्देशिर ने फिल्म के गानों के लिए स्वयं की धुनें चुनीं। फिल्म के संगीत में महज तीन वाद्य-तबला, हारमोनियम और वायलिन का इस्तेमाल किया गया। आलम आरा में संगीतकार या गीतकार में स्वतंत्र रूप से किसी का नाम नहीं डाला गया। इस फिल्म में पहले पार्श्वगायक बने डब्लू. एम. खान। पहला गाना था-'दे दे खुदा के नाम पर प्यारे, अगर देने की ताकत है।'

आलम आरा का संगीत उस समय डिस्क फॉर्म में रिकार्ड नहीं किया जा सका, फिल्म की शूटिंग शुरू हुई तो साउंड के कारण ही इसकी शूटिंग रात में करनी पड़ती थी। मूक युग की अधिकतर फिल्मों को दिन के प्रकाश में शूट कर लिया जाता था, मगर आलम आरा की शूटिंग रात में होने के कारण इसमें कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था करनी पड़ी। यहीं से प्रकाश प्रणाली बनी जो आगे फिल्म निर्माण का जरूरी हिस्सा बनी।

'आलम आरा' ने भविष्य के कई स्टार और तकनीशियन तो दिए ही, अर्देशिर की कंपनी तक ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अधिक मूक और लगभग सौ सवाक् फिल्में बनाई।

आलम आरा फिल्म 'अरेबियन नाइट्स' जैसी फैंटसी थी। फिल्म ने हिंदी-उर्दू के मेलवाली 'हिंदुस्तानी' भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसमें गीत, संगीत तथा नृत्य के अनोखे संयोजन थे। फिल्म की नायिका जुबैदा थीं। नायक थे विट्ठल। वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पानेवाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विट्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह महबूब को नायक बना दिया गया। विट्ठल नाराज हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

उस दौर में उनका मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा जो तब के मशहूर वकील हुआ करते थे। विट्ठल मुकदमा जीते और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बने। उनकी कामयाबी आगे भी जारी रही। मराठी और हिंदी फिल्मों में वे लंबे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे। इसके अलावा 'आलम आरा' में सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी जैसे अभिनेता भी मौजूद रहे आगे चलकर जो फिल्मोद्योग के प्रमुख स्तंभ बने।

यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित हुई। फिल्म 8 सप्ताह तक 'हाउसफुल' चली और भीड़ इतनी उमड़ती थी कि पुलिस के लिए नियंत्रण करना मुश्किल हो जाया करता था। समीक्षकों ने इसे 'भड़कीली फैंटेसी' फिल्म करार दिया था मगर दर्शकों के लिए यह फिल्म एक अनोखा अनुभव थी। यह फिल्म 10 हज़ार फुट लंबी थी और इसे चार महीनों की कड़ी मेहनत से तैयार किया गया था।

सवाक् फिल्मों के लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम-कथाओं को विषय के रूप में चुना गया। इनके अलावा कई सामाजिक विषयों वाली फिल्में भी बनीं। ऐसी ही एक फिल्म थी-'खुदा की शान।' इसमें एक किरदार महात्मा गांधी जैसा था। इसके कारण सवाक् सिनेमा को ब्रिटिश प्रशासकों की तीखी नज़र का सामना करना पड़ा।

सवाक् सिनेमा के नए दौर की शुरुआत करानेवाले निर्माता-निर्देशक अर्देशिर इतने विनम्र थे कि जब 1956 में 'आलम आरा' के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।"

जब पहली बार सिनेमा ने बोलना सीख लिया, सिनेमा में काम करने के लिए पढ़े-लिखे अभिनेता-अभिनेत्रियों की जरूरत भी शुरू हुई क्योंकि अब संवाद भी बोलने थे, सिर्फ अभिनय से काम नहीं चलनेवाला था। मूक फिल्मों के दौर में तो पहलवान जैसे शरीरवाले, स्टंट करनेवाले और उछल-कूद करनेवाले अभिनेताओं से काम चल जाया करता था। अब उन्हें संवाद बोलना था और गायन की प्रतिभा की कद्र भी होने लगी थी। इसलिए 'आलम आरा' के बाद आरंभिक 'सवाक्' दौर की फिल्मों में कई 'गायक-अभिनेता' बड़े पर्दे पर नज़र आने लगे। हिंदी-उर्दू भाषाओं का महत्व बढ़ा। सिनेमा में देह और तकनीक की भाषा की जगह जन प्रचलित बोलचाल की भाषाओं का दाखिला हुआ। सिनेमा ज़्यादा देसी हुआ। एक तरह की नयी आज़ादी थी जिससे आगे चलकर हमारे दैनिक और सार्वजनिक जीवन का प्रतिबिंब फिल्मों में बेहतर होकर उभरने लगा।

अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर उस दौर के दर्शकों पर भी खूब पड़ रहा था। 'माधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। औरतें अपने केशसज्जा उसी तरह कर रही थीं। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय के अलावा ईरानी कलाकारों ने भी अभिनय किया था। स्वयं 'आलम आरा' भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई।

SCERT TELANGANA

भारतीय सिनेमा के जनक फाल्के को 'सवाक्' सिनेमा के जनक अर्देशिर ईरानी की उपलब्धि को अपनाना ही था, क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

–प्रदीप तिवारी

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. अगर आप किसी मूक फिल्म के दर्शक होते तो आपके मन में क्या–क्या विचार उत्पन्न होते? चर्चा कीजिए।
2. फिल्में समाज का दर्पण हैं। इनमें समाज के भूत, भविष्य एवं वर्तमान के दर्शन होते हैं। एक दौर था जब फिल्मों में नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक समस्याओं का चित्रण होता था। उनमें मनोरंजन के लिए प्रयुक्त संगीत, साहित्य, अभिनय आदि कलाएँ श्रेष्ठ कोटि की होती थीं। "आजकल की फिल्मों में कलाओं की श्रेष्ठता कहीं खो गई है।" इसके पक्ष–विपक्ष में चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया?
2. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन से वाक्य छापे गये? उस फिल्म में कितने चेहरे थे?
3. डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी–कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?
4. जब पहली सवाक् फिल्म के निर्माता–निर्देशक अर्देशिर को सम्मानित किया गया तब
   - सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था?
   - अर्देशिर ने क्या कहा?
   - इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. सिनेमा में पढ़े–लिखे अभिनेता–अभिनेत्रियों की आवश्यकता क्यों पड़ी होगी?

SCERT TELANGANA

2. किसी मूक सिनेमा में बिना आवाज़ के ठहाकेदार हँसी कैसी दिखेगी? अभिनय करके अनुभव कीजिए। इस पर अपने विचार लिखिए।
3. अँग्रेज़ी सिनेमा में गाने नहीं के बराबर होते हैं। यदि हिंदी सिनेमा में भी गाने न हों तो कैसा लगेगा? अपने विचार लिखिए।
4. फिल्में भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, कैसे? लिखिए।

II. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. मूक सिनेमा में संवाददाता नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें परिवर्तन हुए। वे परिवर्तन इनके संबंध में क्या हो सकते हैं?
   • अभिनेता
   • दर्शक
   • तकनीक
2. फिल्में केवल मनोरंजन का साधन मात्र ही नहीं, वे हमसे बहुत कुछ कहना चाहती हैं। इनमें हमारे जीवन, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता आदि की झलक दिखाई देती है। फिल्में सामाजिक परिवर्तन में आजकल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। फिल्मों का समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव के बारे में अपने विचार लिखिए।

शब्द भंडार

1. पाठ में आयी अँग्रेज़ी शब्दावली जैसे- पोस्टरों, इंटरव्यू को हिन्दी ने बड़े प्रेम से स्वीकारा है। पाठ में आये ऐसे ही अन्य शब्दों को छाँटकर, उनके हिन्दी के समानार्थी शब्द जानिए और लिखिए।
2. रेखांकित शब्द का अर्थ जानें और वाक्य प्रयोग करें।
   क. फिल्म खुदा की शान में एक **किरदार** महात्मा गाँधी जैसा था।
   ख. निर्देशक अर्देशिर को भारतीय सवाक् फिल्मों के पिता का **खिताब** दिया गया।

भाषा की बात

1. 'सवाक्' शब्द 'वाक्' के पहले 'स' लगाने से बना है। 'स' उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग के भाँति प्रयोग करके शब्द बनायें और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताएँ। हित, परिवार, विनय, चित्र, बल, सम्मान।
2. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में।

SCERT TELANGANA

हिंदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार हैं- अ/अन, नि, दु, क/कु, स/सु, अध, बिन, औ आदि।

पाठ में आये उपसर्ग और प्रत्यययुक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं-

मूल शब्द	**उपसर्ग**	**प्रत्यय**	**शब्द**
वाक्	स	-	सवाक्
लोचन	सु	आ	सुलोचना
फिल्म	-	कार	फिल्मकार
कामयाब	-	ई	कामयाबी

इस प्रकार के पंद्रह-पंद्रह उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने सहपाठियों को दिखाइए।

प्रशंसा

आपने पढ़ा कि पहले फिल्में मूक होती थीं। इस आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि एक समय ऐसा भी रहा होगा जब इन्सान भी केवल मूक भाषा का प्रयोग करता रहा हो। अनुमान लगाइए कि यदि सवाक् भाषा नहीं होती तो हमें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किसी एक कहानी को रंगमंच पर प्रस्तुत करने हेतु संवाद रूप में परिवर्तित कीजिए।

परियोजना कार्य

मूक फिल्म देखने का एक उपाय यह है कि आप टेलीविज़न की आवाज़ बंद करके फिल्म देखें। आप भी इस प्रकार टी.वी. में एक धारावाहिक देखिए। किसी एक अंक का कथा सार लिखने का प्रयास कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	**हाँ (✓)**	**नहीं (×)**
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. सिनेमा के विकास के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. सामान्य विषयों के बारे में संवाद लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

दो कलाकार

उपवाचक

- मन्नू भंडारी

''ए रूनी, उठ।'' और चादर खींचकर चित्रा ने सोती होती हुई अरुणा को झकझोर कर उठा दिया। ''अरे, क्या है?'' आँखें मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गयी और अपने नये बनाये हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़े कर के बोली, ''देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।''

ओह, तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी।

''अरे, ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गयी पहला इनाम तो नाम बदल देना।''

चित्र को देखकर चारों ओर घुमाते हुए अरुणा बोली, ''किधर से देखूँ, यह तो बता दे? हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनाये, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफहमी न हुआ करे, वरना तू बनाये हाथ ही और समझें उल्लू।'' तस्वीर पर आँखें गड़ाते हुई बोली, ''किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ आखिर यह किस जीव की तस्वीर है।''

''तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।''

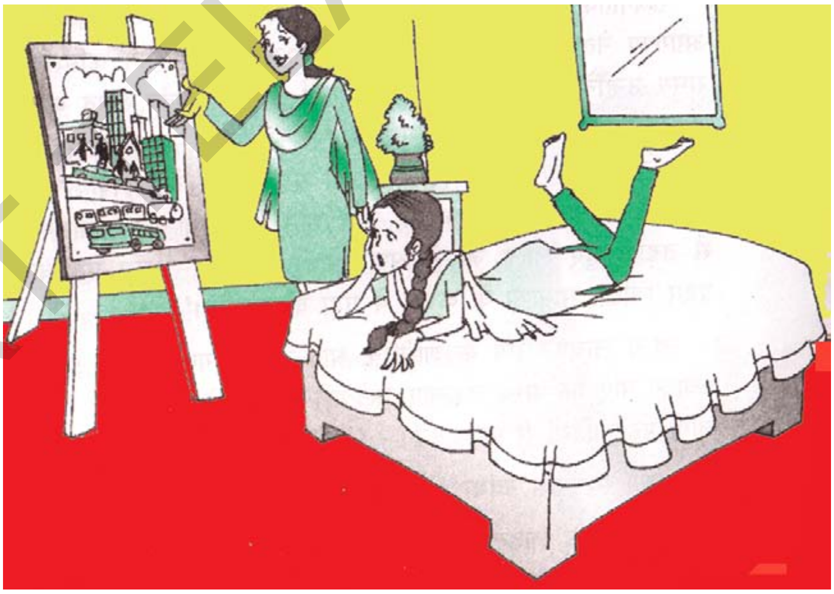

''अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्रैम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?'' यह कहकर अरुणा ने चित्र रख दिया।

''ज़रा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है।''

''तेरी बेवक़ूफी का। आयी है, बड़ी प्रतीक वाली।''

''अरे जनाब, यह चित्र तो आज की दुनिया में 'कन्फ्यूजन' का प्रतीक है, समझी।''

''मुझे तो तेरी दिमाग की कन्फ्यूजन का प्रतीक आ रहा है, बिना मतलब जिंदगी खराब कर रही है।'' और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गयी। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाजे पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोली, '' बच्चो! चलो, मैं अभी आयी।''

SCERT TELANGANA

''क्या यह बंदर पाल रखी है?'' फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, ''एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक मित्र साहिबा थीं जो बस्ती के चौकीदारों, नौकरों, चपरासियों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पंडिताइन और समाज-सेविका समझती थीं।''

चार बजते ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आयीं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

''पता नहीं, कहाँ-कहाँ भटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहो।''

''अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है? ले, मैं आ गयी। चल, बना चाय। मिलकर ही पियेंगे।''

''ये ले कोई चिट्ठी आयी है।''

अरुणा लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चाय पीते-पीते चित्रा बोली, ''पिताजी का पत्र आया है, लिखा है, जैसे ही यहाँ कोर्स समाप्त हो जाये, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी कि, पिताजी कभी मना नहीं करेंगे।''

''हाँ भाई। धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी। तेरी इच्छा कभी खाली जा सकती है? पर सच कहती हूँ मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।'' अरुणा आवेश से बोली।

''तो तुम मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?''

''तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं। बस चौबीस घंटे अपने रंगों और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में कितनी बड़ी घटना घट जाये पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती। हर घड़ी, हर जगह, हर चीज़ में तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है। कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की जगह दो-चार की जिंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।''

''वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।'' और चित्रा हँस पड़ी।

तीन दिनों से मूसलदार वर्षा हो रही थी। रोज़ अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़ पीढ़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती थी। अरुणा सारा दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह दिया, तेरे इंतहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती है नहीं, सारा दिन बस भटकती रहती है। माता-पिता क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।''

''आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है, मैं भी उसके साथ जा रही हूँ।'' चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गयी। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफी ख़राब हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आयी कि मानो छह महीनों से बीमार है। चित्रा उस समय ''गुरुदेव'' के पास गयी हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी। तभी उसकी नज़र चित्रा के नये चित्रों की ओर गयी। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे जो दृश्य अपनी आँखों से देखकर आ रही थी वैसे ही दृश्य यहाँ पर अंकित थे। उसका मन न जाने कैसा-कैसा हो गया।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। ''क्यों चित्रा, तेरा जाने का तय हो गया?''

''हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।'' उल्लास उसके स्वर में से छलका पड़ रहा था।

''सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा, छह साल से साथ रहते-रहते यह बात मैं तो भूल गयी कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?'' उदासी भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। लगा जैसे स्वयंसेवी पूछ रही हो।

कितना स्नेह था दोनों में ''सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की दृष्टि से देखता था।

आज चित्रा को जाना था। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आयी। बस गुरुजी से मिलना रह गया था। सो उनका आशीर्वाद लेने चल पड़ी। तीन बज गये थे, पर वह लौटी नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली थी। अरुणा ने सोचा कि वह खुद जाकर देख आये कि आखिर बात क्या हो गयी। तभी हड़बड़ाती सी चित्रा ने प्रवेश किया। ''बड़ी देर हो गयी न। अरे क्या करूँ कि बस कुछ ऐसा हो गया, कि रुकना ही पड़ा।''

''आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनो तो।'' दो-तीन कंठ एक साथ बोले, ''गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर भिखारिन रहा करती थीं न, लौटी तो देखा कि वह वही मरी पड़ी और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे थे। जाने क्या था पूरे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक रफ सा स्केच बना ही डाला। बस इसी में देर हो गयी।''

साढ़े चार बजे चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गयी, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन तक भी गयीं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थी। पाँच भी बज गये, रेल चल पड़ी पर अरुणा न आयी, सो न आयी।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गयी। उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गयी। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबार के कालम के कालम भर गये। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गयी। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला। फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता चकित रह जाता। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया।

उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गयी। 'रूनी' कहकर चित्रा भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गयी।

''तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी?''

''चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आयी थी। तू तो एकदम भूल ही गयी।''

''अरे, ये बच्चे किसके हैं?'' दो प्यारे से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल

SCERT TELANGANA

की होगी। तो लड़की की उम्र कोई आठ।

"मेरे बच्चे हैं, और किसके। यह तुम्हारी चित्रा मौसी हैं, नमस्ते करो, अपनी मौसी को।" अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़े आदर से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी बच्चों को कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। तभी अरुणा ने टोका।" कैसी मौसी है, प्यार तो कर।" और चित्रा ने दोनों पर हाथ फेरा प्यार से। अरुणा ने कहा, "तुम्हारी यह मौसी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हैं, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनायी हुई है।"

"आप हमें सब तस्वीरें दिखाइए मौसी,"बच्चों ने फरमाइश की। चित्रा उन्हें तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, "यही वह तस्वीर है रूनी,जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धी दी।"

"ये बच्चे रो क्यों रहे हैं मौसी" तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने पूछा।

"उनकी माँ मर गयी है। देखती नहीं, मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती।" बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन और ज्ञान की छाप लगायी।

"ये सचमुच के बच्चे थे, मौसी?" बालिका का स्वर करुण से करुणतर होता जा रहा था।

"अरे, सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनायी थी यह तस्वीर।"

"मौसी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की।"

उन तस्वीरों को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। साधारण बातचीत के पश्चात अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, "आप ज़रा बच्चों को प्रदर्शिनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।"

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, "सच-सच बता रूनी, ये प्यारे-प्यारे बच्चे किनके हैं?"

"कहा तो, मेरे।" अरुणा ने हँसते हुए कहा।

"अरे बता न, मुझे ही बेवकूफ बनाने चली है।" एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, "बता दूँ?" और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, "यही वह दोनों बच्चे हैं।"

"क्या..........." चित्रा की आँखें विस्मय से फैली रह गयीं?

"क्या सोच रही चित्रा?"

कुछ नहीं......... मैं........ सोच रही थी कि.........। पर शब्द शायद उसके विचारों में खो गये।............

प्रश्न :

१. अरुणा व चित्रा दोनों के स्वभाव के बारे में अपने विचार बताइए।

२. चित्रा ने विदेश जाकर क्या किया? आप के विचार में उसका विदेश जाना सही था? क्यों?

३. अरुणा की ममता पर अपने विचार बताइए।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

इकाई-III

11. सुदामा चरित

–नरोत्तमदास

प्रस्तावना प्रसंग–

अरे द्वारपालो! कन्हैया से कह दो,
कि दर पे सुदामा गरीब आ गया है।
भटकते-भटकते, न जाने कहाँ से,
तुम्हारे महल के करीब आ गया है।

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. इन पंक्तियों में किस घटना का वर्णन है?
2. कृष्ण-सुदामा की मित्रता के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. अपने मित्रों के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है?

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम बतावत आपनो नाम सुदामा।।

ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न किते दिन खोए।।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।

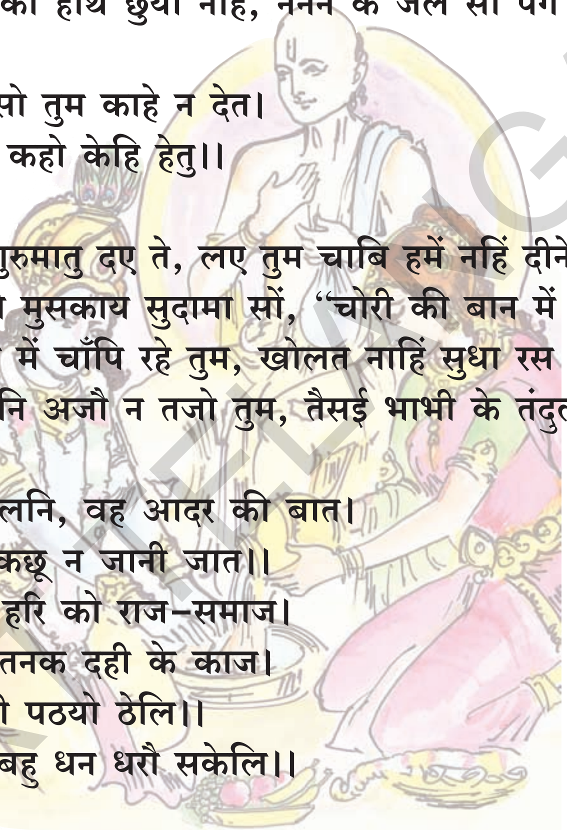

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु।।

आगे चना गुरुमातु दए ते, लए तुम चाबि हमें नहिं दीने।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।।
पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने।
पाछिलि बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हे।।"

वह पुलकनि, वह उठि मिलनि, वह आदर की बात।
वह पठवनि गोपाल की, कछू न जानी जात।।
कहा भयो जो अब भयो, हरि को राज-समाज।
घर-घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज।
हौं आवत नाहीं हुतौ, वाही पठयो ठेलि।।
अब कहिहौं समुझाय कै, बहु धन धरौ सकेलि।।

वैसोई राज-समाज बने, गज, बाजि घने मन संभ्रम छायो।
कैधों परयो कहुँ मारग भूलि, कि फैरि कै मैं अब द्वारका आयो।।
भौन बिलोकिबे को मन लोचत, सोचत ही सब गाँव मझायो।
पूँछत पाडे फिरे सब सों पर, झोपरी को कहुँ खोज न पायो।

कै वह टूटी-सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत।
कै पग में पनही न हती, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत।।
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत।।
कै जुरतो नहिं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भावत।।

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. सच्चा मित्र बड़ी मुश्किल से मिलता है। सच्चे मित्र में क्या-क्या गुण होने चाहिए? मित्रों से चर्चा कीजिए।
2. दो व्यक्तियों में अच्छी मित्रता हो सकती है-
   - यदि दोनों के गुण आपस में मिलते हों
   - यदि दोनों के गुण आपस में नहीं मिलते हों

   दोनों के पक्ष में मत दीजिए और चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।
2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सों पग धोए।" भाव स्पष्ट कीजिए।
3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

   क. उपर्युक्त पंक्तियाँ कौन किससे कह रहा है?

   ख. इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

   ग. इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौनसी पौराणिक कथा है?
4. द्वार से खाली लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वे कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।
5. अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाये तब उनके मन में क्या-क्या विचार आये?
6. निर्धनता के बाद मिलनेवाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।
7. "कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।

   विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।"

   इस दोहे में रहीम ने सच्चे मित्र की पहचान बताई है। इस दोहे और सुदामा चरित में किस प्रकार की समानता दिखाई पड़ती है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. यदि आपका कोई अत्यंत प्रिय मित्र आपसे बहुत वर्षों बाद मिलने आये तो आप को कैसा अनुभव होगा?
2. कृष्ण ने सुदामा की सहायता उनके समक्ष नहीं की। उन्होंने उनके जाने के बाद अप्रत्यक्ष रूप से उनकी सहायता की। कृष्ण ने ऐसा क्यों किया होगा?
3. आपका सबसे अच्छा मित्र कौन है? आप उसको क्यों पसंद करते हैं?

II. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. उच्च पद पर पहुँच कर या अधिक समृद्ध होकर व्यक्ति अपने निर्धन माता-पिता-भाई-बंधुओं से नज़र फेरने लगता है। ऐसे लोग सुदामा चरित पढ़कर क्या सोचते होंगे?
2. एक अच्छी पुस्तक व्यक्ति का सच्चा मित्र होती है। ऐसा क्यों कहा जाता है?

शब्द भंडार

1. पुलकनि - पुलकित होना

   लोचत - ललचाता है

   उपर्युक्त शब्द तथा उनके प्रचलित रूप भाव को उजागर करते हैं। पाठ में आये ऐसे ही अन्य शब्दों एवं उनके प्रचलित रूपों की सूची बनाइए।

2. 'करुनानिधि' अर्थात् 'करुणानिधि' दो शब्दों के योग- करुणा + निधि से बना है। इन शब्दों के अर्थबोध भी अलग-अलग हैं। कविता में आये ऐसे ही अन्य शब्द ढूँढ़ें और लिखें।

भाषा की बात

'पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।'

ऊपर लिखी गई पंक्ति ध्यान से पढ़िए। इसमें बात को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर चित्रित किया गया है। जब किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। आप कविता में से एक अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण छाँटिए।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता। समाज में उसके अनेक मित्र समय-समय पर बनते ही रहते हैं। वे एक-दूसरे का सहयोग कर आगे बढ़ते हैं। अब आप बताइए कि मित्रों का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

क. इस कविता को एकांकी रूप में लिखिए। उसका अभिनय कक्षा में मित्रों के साथ कीजिए।
ख. इस कविता का गायन प्रस्तुत कीजिए।
ग. अपने मित्र को किसी अवसर पर बधाई देने के लिए एक ग्रीटिंग कार्ड तैयार कीजिए।

परियोजना कार्य

द्रुपद और द्रोणाचार्य भी सहपाठी थे, इनकी मित्रता और शत्रुता की कथा के बारे में पता लगाइए और उसे संक्षिप्त में लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. मित्रता का महत्व बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित कथारूपी कविता संवाद के रूप में प्रस्तुत कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-III

12. जहाँ पहिया है

–पी. साईनाथ

प्रस्तावना प्रसंग–

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. चित्र में कौन–कौन दिखाई दे रहे हैं?
2. इनके बारे में आप क्या जानते हैं?
3. महिला प्रगति के लिए क्या–क्या किया जाना चाहिए?

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

पुडुकोट्टई (तमिलनाडु): साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है। कुछ अजीब-सी बात है-है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोट्टई ज़िले की हज़ारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने, अपना विरोध व्यक्त करने और उन ज़ंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई-न-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं। कभी-कभी ये तरीके अजीबो-गरीब होते हैं।

भारत के सर्वाधिक गरीब ज़िलों में से एक है पुडुकोट्टई। पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता, आज़ादी और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीक के रूप में साइकिल को चुना है। उनमें से अधिकांश नवसाक्षर थीं। अगर हम दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें तो इसका अर्थ यह होगा कि यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक-चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख लिया है और इन महिलाओं में से सत्तर हज़ार से भी अधिक महिलाओं ने 'प्रदर्शन एवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े गर्व के साथ अपने नए कौशल का प्रदर्शन किया और अभी भी उनमें साइकिल चलाने की इच्छा जारी है। वहाँ इसके लिए कई 'प्रशिक्षण शिविर' चल रहे हैं।

ग्रामीण पुडुकोट्टई के मुख्य इलाकों में अत्यंत रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आईं युवा मुस्लिम लड़कियाँ सड़कों से अपनी साइकिलों पर जाती हुई दिखाई देती हैं। जमीला बीवी नामक एक युवती ने जिसने साइकिल चलाना शुरू किया है, मुझसे कहा-"यह मेरा अधिकार है, अब हम कहीं भी जा सकते हैं। अब हमें बस का इंतजार नहीं करना पड़ता। मुझे पता है कि जब मैंने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग फ़ब्तियाँ कसते थे। लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।"

फातिमा एक माध्यमिक स्कूल में पढ़ाती हैं और उन्हें साइकिल चलाने का ऐसा चाव लगा है कि हर शाम आधा घंटे के लिए किराए पर साइकिल लेती हैं। एक नयी साइकिल खरीदने की उनकी हैसियत नहीं है। फातिमा ने बताया कि-"साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। मैं कभी इसे नहीं छोड़ूँगी।" जमीला, फातिमा और उनकी मित्र अवकन्नी-इन सबकी उम्र 20 वर्ष के आसपास है और इन्होंने अपने समुदाय की अनेक युवतियों को साइकिल चलाना सिखाया है।

SCERT TELANGANA

इस ज़िले में साइकिल की धूम मची हुई है। इसकी प्रशंसकों में हैं महिला खेतिहर मज़दूर, पत्थर खदानों में मज़दूरी करनेवाली औरतें और गाँवों में काम करनेवाली नर्सें। बालवाड़ी और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, बेशकीमती पत्थरों को तराशनेवाली औरतें और स्कूल की अध्यापिकाएँ भी साइकिल का जमकर इस्तेमाल कर रही हैं। ग्राम सेविकाएँ और दोपहर का भोजन पहुँचानेवाली औरतें भी पीछे नहीं हैं। सबसे बड़ी संख्या उन लोगों की है जो अभी नवसाक्षर हुई हैं। जिस किसी नवसाक्षर अथवा नयी-नयी साइकिल चलानेवाली महिला से मैंने बातचीत की, उसने साइकिल चलाने और अपनी व्यक्तिगत आज़ादी के बीच एक सीधा संबंध बताया।

साइकिल आंदोलन की एक अगुआ का कहना है, मुख्य बात यह है कि इस आंदोलन ने महिलाओं को बहुत आत्मविश्वास प्रदान किया। महत्वपूर्ण यह है कि इसने पुरुषों पर उनकी निर्भरता कम कर दी है। अब हम प्रायः देखते हैं कि कोई औरत अपनी साइकिल पर चार किलोमीटर तक की दूरी आसानी से तय कर पानी लाने जाती है। कभी-कभी साथ में उसके बच्चे भी होते हैं। यहाँ तक कि साइकिल से दूसरे स्थानों से सामान ढोने की व्यवस्था भी खुद ही की जा सकती है। लेकिन यकीन मानिए, जब इन्होंने साइकिल चलाना शुरू किया तो इन पर लोगों ने जमकर प्रहार किया जिसे इन्हें झेलना पड़ा। गंदी-गंदी टिप्पणियाँ की गई लेकिन धीरे-धीरे साइकिल चलाने को सामाजिक स्वीकृति मिली। इसलिए महिलाओं ने इसे अपना लिया।

साइकिल प्रशिक्षण शिविर देखना एक असाधारण अनुभव है। किलाकुरुचि गाँव में सभी साइकिल सीखनेवाली महिलाएँ रविवार को इकट्ठी हुई थीं। साइकिल चलाने के आंदोलन के समर्थन में ऐसे आवेग देखकर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। उन्हें इसे सीखना ही है। साइकिल ने उन्हें पुरुषों द्वारा थोपे गए दायरे के अंदर रोज़मर्रा की घिसी-पिटी चर्चा से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। ये नव-साइकिल चालक गाने भी गाती हैं। उन गानों में साइकिल चलाने को प्रोत्साहन दिया गया है। इनमें से एक गाने की पंक्ति का भाव है - ओ बहिना, आ सीखें साइकिल, घूमें समय के पहिए संग ....

SCERT TELANGANA

जिन्हें साइकिल चलाने का प्रशिक्षण मिल चुका है उनमें से बहुत बड़ी संख्या में साइकिल सीख चुकी महिलाएं अभी नयी-नयी साइकिल सीखनेवाली महिलाओं को भरपूर सहयोग देती हैं। उनमें यहाँ न केवल सीखने-सिखाने की इच्छा दिखाई देती है; बल्कि उनके बीच यह उत्साह भी दिखाई देता है कि सभी महिलाओं को साइकिल चलाना सीखना चाहिए।

1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह ज़िला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता। हैंडल पर झंड़ियाँ लगाए, घंटियाँ बजाते हुए साइकिल पर सवार 1500 महिलाओं ने पुडुकोट्टई में तूफ़ान ला दिया। महिलाओं की साइकिल चलाने की इस तैयारी ने यहाँ रहनेवालों को हक्का-बक्का कर दिया।

इस सारे मामले पर पुरुषों की क्या राय थी? इसके पक्ष में 'आर. साइकिल्स' के मालिक को तो रहना ही था। इस अकेले डीलर के यहाँ लेडीज़ साइकिल की बिक्री में साल भर के अंदर काफी वृद्धि हुई। माना जा सकता है कि इस आँकड़े को दो कारणों से कम करके आँका गया। पहली बात तो यह है कि-ढेर सारी महिलाओं ने जो लेड़ीज साइकिल का इंतज़ार नहीं कर सकती थीं, जेंट्स साइकिलें खरीदने लगीं। दूसरे, उस डीलर ने बड़ी सतर्कता के साथ यह जानकारी मुझे दी थी-उसे लगा कि मैं बिक्री कर विभाग का कोई आदमी हूँ।

कुदिमि अन्नामलाई की चिलचिलाती धूप में एक अद्‌भुत दृश्य की तरह पत्थर के खदानों में दौड़ती-भागती बाईस वर्षीय मनोरमनी को लोगों ने साइकिल सिखलाते देखा। उसने मुझे बताया- "हमारा इलाका मुख्य शहर से कटा हुआ है। यहाँ जो साइकिल चलाना जानते हैं उनकी गतिशीलता बढ़ जाती है।"

साइकिल चलाने के बहुत निश्चित आर्थिक निहितार्थ थे। इससे आय में वृद्धि हुई है। यहाँ की कुछ महिलाएँ अगल-बगल के गाँवों में कृषि संबंधी अथवा अन्य उत्पाद बेच आती है। साइकिल की वजह से बसों के इंतज़ार में व्यय होनेवाला उनका समय बच जाता है। खराब परिवहन व्यवस्था वाले स्थानों के लिए तो यह बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरे, इससे इन्हें इतना समय मिल जाता है कि ये अपने सामान बेचने पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित कर पाती हैं। तीसरे, इससे ये और अधिक इलाकों में जा पाती हैं। अंतिम बात यह है कि अगर आप चाहें तो इससे आराम करने का काफ़ी समय मिल सकता है।

जिन छोटे उत्पादकों को बसों का इंतज़ार करना पड़ता था, बस स्टॉप तक पहुँचने के लिए भी पिता, भाई, पति या बेटों पर निर्भर रहना पड़ता था। वे अपना सामान बेचने के लिए कुछ गिने-चुने गाँवों तक ही जा पाती थीं। कुछ को पैदल ही चलना पड़ता था। जिनके पास साइकिल नहीं है वे अब भी पैदल ही जाती हैं। फिर उन्हें बच्चों की देखभाल के लिए या पीने का पानी लाने जैसे घरेलू कामों के लिए भी जल्दी ही भागकर घर पहुँचना पड़ता था। अब जिनके पास साइकिलें हैं वे सारा काम बिना किसी दिक्कत के कर लेती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अब आप किसी सुनसान रास्ते

SCERT TELANGANA

पर भी देख सकते हैं कि कोई युवा–माँ साइकिल पर आगे अपने बच्चे को बैठाए, पीछे कैरियर पर सामान लादे चली जा रही है। वह अपने साथ पानी से भरे दो या तीन बर्तन लिए अपने घर या काम पर जाती देखी जा सकती है।

अन्य पहलुओं से ज़्यादा आर्थिक पहलू पर ही बल देना गलत होगा। साइकिल प्रशिक्षण से महिलाओं के अंदर आत्मसम्मान की भावना पैदा हुई है यह बहुत महत्वपूर्ण है। फातिमा का कहना है–"बेशक, यह मामला केवल आर्थिक नहीं है।" फातिमा ने यह बात इस तरह कही जिससे मुझे लगा कि मैं कितनी मूर्खतापूर्ण ढंग से सोच रहा था। उसने आगे कहा–"साइकिल चलाने से मेरी कौन सी कमाई होती है। मैं तो पैसे ही गँवाती हूँ। मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं साइकिल खरीद सकूँ। लेकिन हर शाम मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और खुशहाली का अनुभव कर सकूँ।" पुडुकोट्टई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में कभी इस तरह सोचा ही नहीं था। मैंने कभी साइकिल को आज़ादी का प्रतीक नहीं समझा था।

एक महिला ने बताया–"लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण महिलाओं के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज़ उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धि है। लोग इस पर हँस सकते हैं लेकिन केवल यहाँ की औरतें ही समझ सकती हैं कि उनके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है। जो पुरुष इसका विरोध करते हैं, वे जाएँ और टहलें क्योंकि जब साइकिल चलाने की बात आती है, वे महिलाओं की बराबरी कर ही नहीं सकते।"

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. "लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण औरतों के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज उड़ाने जैसी उपलब्धि है।" साइकिल चलाना ग्रामीण महिलाओं के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? समूह बनाकर चर्चा कीजिए।
2. अगर दुनिया के सभी पहिये हड़ताल करें तो क्या होगा? चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. पुडुकोट्टई में महिला अगर चुनाव लड़ती तो अपना पार्टी–चिह्न क्या बनाती और क्यों?
2. "उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई–न–कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं...।" आपके विचार से लेखक जंजीरों द्वारा किन समस्याओं की ओर इशारा करता है?
3. शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर. साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्यों?
4. साइकिल आन्दोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन–कौन से बदलाव आये हैं?
5. आइए! केदारनाथ अग्रवाल की 'वीरांगना' कविता पढ़ें।

मैंने उसको
जब–जब देखा
लोहा देखा
लोहे जैसा–
तपते देखा–
गलते देखा
ढलते देखा
मैंने उसको
गोली जैसा
चलते देखा।

जी, बिल्कुल ठीक समझा आपने, एक नारी कभी किसी की बेटी, किसी की बहन, किसी की बहू, किसी की पत्नी, किसी की माँ, किसी की मित्र– इस प्रकार अनेक उत्तरदायित्व निभाती है। इन्हें निभाते समय वे अनेक रूपों में ढलती हैं, जैसा कि कविता में देखा जा सकता है।

प्रश्न 1. नारी का समाज के विकास में क्या योगदान है?
2. कवि ने नारी की तुलना लोहे से क्यों की होगी?
3. नारी को गोली जैसा चलते देखा कहने का तात्पर्य क्या हो सकता है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं। कोई न कोई तरीका लोग निकाल ही लेंगे। क्या आप लेखक की इस बात से सहमत हैं? अपने उत्तर का कारण बताइए।
2. आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम जहाँ पहिया है। क्यों रखा होगा?
3. अपने मन से इस पाठ का कोई दूसरा शीर्षक सुझाइए। अपने शीर्षक के पक्ष में तर्क दीजिए।
4. "पुडुकोट्टई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में इस तरह सोचा ही नहीं था।" साइकिल को विनम्र सवारी क्यों कहा गया है?

II. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. 1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह जिला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता। इस कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

शब्द भंडार

1. वाक्य पढ़िए। रेखांकित शब्दों का अर्थ समझिए। इन दोनों शब्दों का एक ही वाक्य में प्रयोग कीजिए।

क. अपना विरोध **व्यक्त** करने और इन जंजीरों को तोड़ने के लिए कोई न कोई **तरीका** लोग निकाल ही लेते हैं।

ख. **आज़ादी** और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए **प्रतीक** के रूप में साइकिल को चुना है।

ग. महिलाओं ने अपने नये **कौशल** का **प्रदर्शन** किया।

घ. इस **आंदोलन** ने महिलाओं को बहुत **आत्मविश्वास** प्रदान किया।

2. वाक्य पढ़िए। मुहावरे का अर्थ लिखिए। पुनः एक वाक्य प्रयोग कीजिए।

क. जब मैंने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग फब्तियाँ कसते थे।

फब्तियाँ कसना –

ख. महिलाओं की साइकिल चलाने की तैयारी ने यहाँ रहनेवालो को हक्का-बक्का कर दिया।

हक्का-बक्का होना –

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

उपसर्गों और प्रत्ययों के बारे में आप जान चुके हैं। इस पाठ में आये उपसर्ग युक्त शब्दों को छाँटिए। उनके मूल शब्द भी लिखिए। आपकी सहायता के लिए इस पाठ में प्रयुक्त कुछ उपसर्ग और प्रत्यय इस प्रकार हैं–

अभि, प्र, अनु, परि, वि (उपसर्ग) इक, वाला, ता, ना (प्रत्यय)

प्रशंसा

पुडुकोट्टई में साइकिल आंदोलन हुआ। ग्रामीण महिलाओं ने इसमें भाग लिया। इससे उन्हें विकास की प्रेरणा मिली। नई जागरूकता हासिल हुई। आज के समाज में महिलाओं का जागरूक होना क्यों आवश्यक है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

मान लीजिए आप एक संवाददाता हैं। आपको 8 मार्च, 1992 के दिन पुडुकोट्टई में हुई घटना का समाचार तैयार करना है, पाठ में दी गई सूचनाओं और अपनी कल्पना के आधार पर एक समाचार तैयार कीजिए।

परियोजना कार्य

महिला जागरूकता के महत्व के संबंध में कुछ लोगों से प्रश्न पूछिए। उनके दिए गए उत्तर का सार लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. महिला जागरूकता का महत्व बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित विषय संबंधी समाचार व सूचनाएँ तैयार कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

13. पानी की कहानी

–रामचंद्र तिवारी

प्रस्तावना प्रसंग–

सावन, भादो साधु हो गए,
बादल सब संन्यासी।
पछुआ चूस गई पुरबा को,
धरती रह गई प्यासी।

फसलों ने बैराग ले लिया
जोगी हो गई धानी,
राम जाने कब बरसेगा पानी।

- बेकल उत्साही

प्रश्न

1. इन पंक्तियों में कैसे समय का वर्णन है?
2. अकाल में लोगों को क्या-क्या समस्याएँ होती होंगी?
3. पानी हम लोगों तक कैसे पहुँचता है?

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

मैं आगे बढ़ा ही था कि बेर की झाड़ी पर से मोती-सी एक बूँद मेरे हाथ पर आ पड़ी । मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि ओस की बूँद मेरी कलाई पर से सरककर हथेली पर आ गई। मेरी दृष्टि पड़ते ही वह ठहर गई। थोड़ी देर में मुझे सितार के तारों की-सी झंकार सुनाई देने लगी। मैंने सोचा कि कोई बजा रहा होगा। चारों ओर देखा। कोई नहीं। फिर अनुभव हुआ कि यह स्वर मेरी हथेली से निकल रहा है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि बूँद के दो कण हो गए हैं और वे दोनों हिल-हिलकर यह स्वर उत्पन्न कर रहे हैं मानो बोल रहे हों।

उसी सुरीली आवाज़ में मैंने सुना-"सुनो, सुनो...।"

मैं चुप था।

फिर आवाज़ आई, "सुनो, सुनो।"

अब मुझसे न रहा गया। मेरे मुख से निकल गया, "कहो, कहो।"

ओस की बूँद मानो प्रसन्नता से हिली और बोली-"मैं ओस हूँ।"

"जानता हूँ"-मैंने कहा।

"लोग मुझे पानी कहते हैं, जल भी।"

"मालूम है।"

"मैं बेर के पेड़ में से आई हूँ।"

"झूठी," मैने कहा और सोचा, 'बेर के पेड़ से क्या पानी का फव्वारा निकलता है'?

बूँद फिर हिली। मानो मेरे अविश्वास से उसे दुख हुआ हो।

"सुनो। मैं इस पेड़ के पास की भूमि में बहुत दिनों से इधर-उधर घूम रही थी। मैं कणों का हृदय टटोलती फिरती थी कि एकाएक पकड़ी गई।"

"कैसे," मैंने पूछा।

"वह जो पेड़ तुम देखते हो न वह ऊपर ही इतना बड़ा नहीं है, पृथ्वी में भी लगभग इतना ही बड़ा है। उसकी बड़ी जड़ें, छोटी जड़ें और जड़ों के रोएँ हैं। वे रोएँ बड़े निर्दयी होते हैं। मुझ जैसे असंख्य जल-कणों को वे बलपूर्वक पृथ्वी में से खींच लेते हैं। कुछ को तो पेड़ एकदम खा जाते हैं और अधिकांश का सब कुछ छीनकर उन्हें बाहर निकाल देते हैं।"

क्रोध और घृणा से उसका शरीर काँप उठा।

"तुम क्या समझते हो कि वे इतने बड़े यों ही खड़े हैं। उन्हें इतना बड़ा बनाने के लिए मेरे असंख्य बंधुओं ने अपने प्राण-नाश किए हैं।" मैं बड़े ध्यान से उसकी कहानी सुन रहा था।

"हाँ तो मैं भूमि के खनिजों को अपने शरीर में घुलाकर आनंद से फिर रही थी कि दुर्भाग्यवश एक रोएँ से मेरा शरीर छू गया। मैं काँपी। दूर भागने का प्रयत्न किया परंतु वे पकड़कर छोड़ना नहीं जानते। मैं रोएँ में खींच ली गई।"

"फिर क्या हुआ?" मैंने पूछा। मेरी उत्सुकता बढ़ चली थी।

"मैं एक कठरी में बंद कर दी गई। थोड़ी देर बाद ऐसा जान पड़ा कि कोई मुझे पीछे से धक्का दे रहा है और कोई मानो हाथ पकड़कर आगे को खींच रहा हो। मेरा एक भाई भी वहाँ लाया गया। उसके लिए स्थान बनाने के कारण मुझे दबाया जा रहा था। आगे एक और बूँद मेरा हाथ पकड़कर ऊपर खींच रही थी। मैं उन दोनों के बीच पिस चली।"

"मैं लगभग तीन दिन तक यह साँसत भोगती रही। मैं पत्तों के नन्हें-नन्हें छेदों से होकर जैसे-तैसे जान बचाकर भागी। मैंने सोचा था कि पत्ते पर पहुँचते ही उड़ जाऊँगी। परंतु, बाहर निकलने पर ज्ञात हुआ कि रात होनेवाली थी और सूर्य जो हमें उड़ने की शक्ति देता है, जा चका है, और वायुमंडल में इतने जल कण उड़ रहे हैं कि मेरे लिए वहाँ स्थान नहीं है तो मैं अपने भाग्य पर भरोसा कर पत्तों पर ही सिकुड़ी पड़ी रही। अभी जब तुम्हें देखा तो जान में जान आई और रक्षा पाने के लिए तुम्हारे हाथ पर कूद पड़ी।"

इस दुख तथा भावपूर्ण कहानी का मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मैंने कहा- "जब तक तुम मेरे पास हो कोई पत्ता तुम्हें न छू सकेगा।"

"भैया, तुम्हें इसके लिए धन्यवाद है। मैं जब तक सूर्य न निकले तभी तक रक्षा चाहती हूँ। उनका दर्शन करते ही मुझमें उड़ने की शक्ति आ जाएगी। मेरा जीवन विचित्र घटनाओं से परिपूर्ण है। मैं उसकी कहानी तुम्हें सुनाऊँगी तो तुम्हारा हाथ तनिक भी न दुखेगा।"

"अच्छा सुनाओ।"

"बहुत दिन हुए, मेरे पुरखे हद्रजन (हाइड्रोजन) और ओषजन (ऑक्सीजन) नामक दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्‌यमान थीं।"

"सूर्यमंडल अपने निश्चित मार्ग पर चक्कर काट रहा था। वे दिन थे जब हमारे ब्रह्मांड में उथल-पुथल हो रही थी। अनेक ग्रह और उपग्रह बन रहे थे।"

"ठहरो, क्या तुम्हारे पुरखे अब सूर्यमंडल में नहीं हैं"

"हैं, उनके वंशज अपनी भयावह लपटों से अब भी उनका मुख उज्जवल किए हुए हैं। हाँ, तो मेरे पुरखे बड़ी प्रसन्नता से सूर्य के धरातल पर नाचते रहते थे। एक दिन की बात है कि दूर एक प्रचंड प्रकाश- पिंड दिखाई पड़ा। उनकी आँखे चौंधियाने लगीं। यह पिंड बड़ी तेज़ी से सूर्य की ओर बढ़ रहा था। ज्यों-ज्यों पास आता जाता था, उसका आकार बढ़ता जाता था। यह सूर्य से लाखों गुना बड़ा था। उसकी महान आकर्षण-शक्ति से हमारा सूर्य काँप उठा। ऐसा ज्ञात हुआ कि उस ग्रहराज

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

से टकराकर हमारा सूर्य चूर्ण हो जाएगा। वैसा न हुआ। वह सूर्य से सहस्रों मील दूर से ही घूम चला, परंतु उसकी भीषण आकर्षण-शक्ति के कारण सूर्य का एक भाग टूटकर उसके पीछे चला। सूर्य से टूटा हुआ भाग इतना भारी खिंचाव सँभाल न सका और कई टुकड़ों में टूट गया। उन्हीं में से एक टुकड़ा हमारी पृथ्वी है। यह प्रारंभ में एक बड़ा आग का गोला थी।"

"ऐसा? परंतु उन लपटों से तुम पानी कैसे बनी।"

"मुझे ठीक पता नहीं। हाँ, यह सही है कि हमारा ग्रह ठंडा होता चला गया और मुझे याद है कि अरबों वर्ष पहले मैं हद्रजन और ओषजन के रासायनिक क्रिया के कारण उत्पन्न हुई हूँ। उन्होंने आपस में मिलकर अपना प्रत्यक्ष अस्तित्व गँवा दिया है और मुझे उत्पन्न किया है। मैं उन दिनों भाप के रूप में पृथ्वी के चारों ओर घूमती फिरती थी। उसके बाद न जाने क्या हुआ? जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को ठोस बर्फ़ के रूप में पाया। मेरा शरीर पहले भाप-रूप में था वह अब अत्यंत छोटा हो गया था। वह पहले से कोई सत्रहवाँ भाग रह गया था। मैंने देखा मेरे चारों ओर मेरे असंख्य साथी बर्फ़ बने पड़े थे। जहाँ तक दृष्टि जाती थी बर्फ़ के अतिरिक्त कुछ दिखाई न पड़ता था। जिस समय हमारे ऊपर सूर्य की किरणें पड़ती थीं तो सौंदर्य बिखर पड़ता था। हमारे कितने साथी ऐसे भी थे जो बड़ी उत्सुकता से आँधी में ऊँचा उड़ने, उछलने-कूदने के लिए कमर कसे तैयार बैठे रहते थे।"

"बड़े आनंद का समय रहा होगा वहाँ।"

"बड़े आनंद का।"

"कितने दिनों तक?"

"कई लाख वर्षों तक?"

"कई लाख!"

"हाँ, चौंको नहीं। मेरे जीवन में सौ-दो सौ वर्ष दाल में नमक के सामान भी नहीं हैं।"

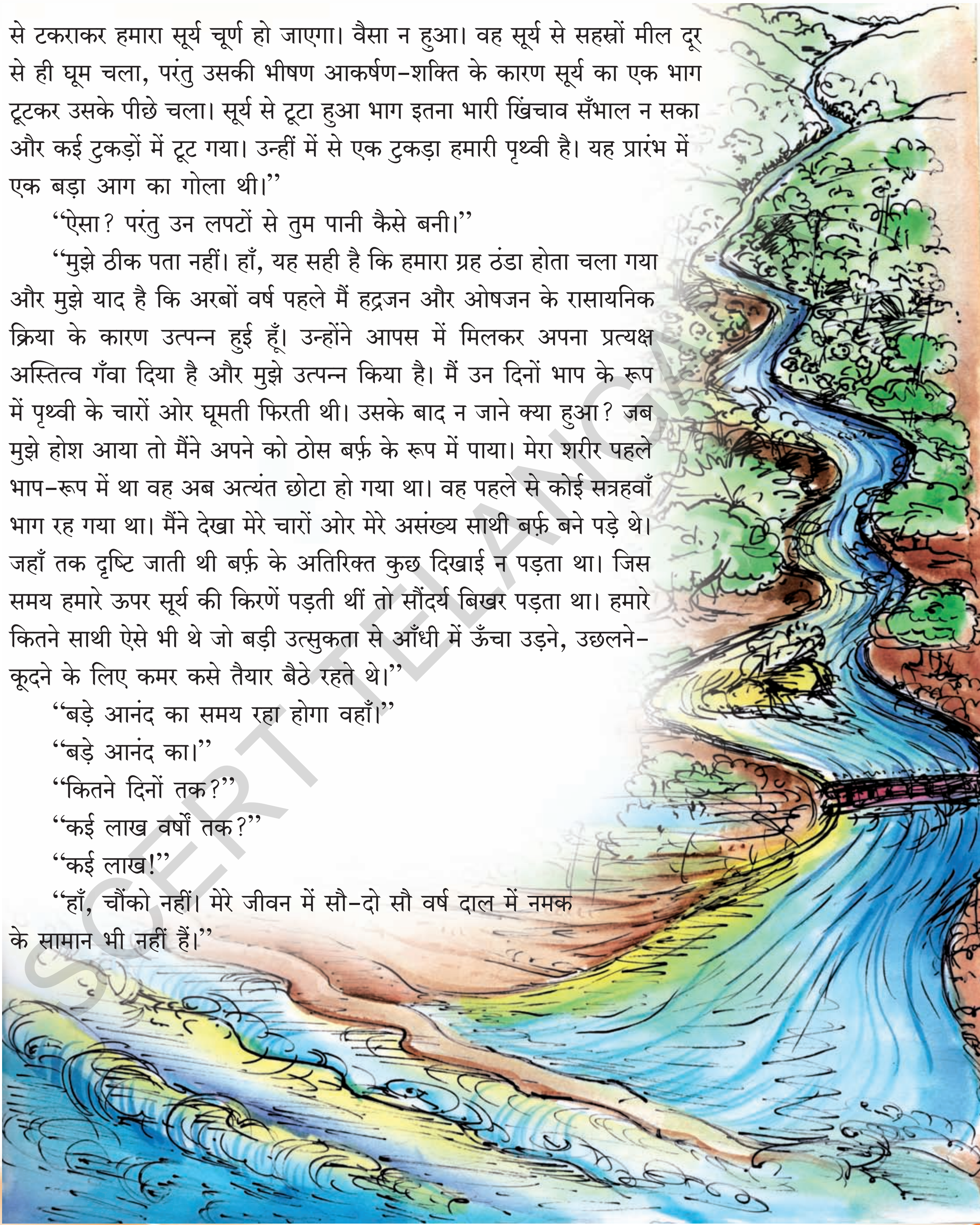

SCERT TELANGANA

मैंने ऐसे दीर्घजीवी से वार्तालाप करते जान अपने को धन्य माना और ओस की बूँद के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ चली।

"हम शांति से बैठे एक दिन हवा से खेलने की कहानियाँ सुन रहे थे कि अचानक ऐसा अनुभव हुआ मानो हम सरक रहे हों। सबके मुख पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। अब क्या होगा?

इतने दिन आनंद से काटने के पश्चात् अब दुख सहन करने का साहस हममे न था। बहुत पता लगाने पर हमें ज्ञात हुआ कि हमारे भार से ही हमारे नीचेवाले भाई दबकर पानी हो गए हैं। उनका शरीर ठोसपन को छोड़ चुका है और उनके तरल शरीर पर हम फिसल चले हैं।

मैं कई मास समुद्र में इधर-उधर घूमती रही। फिर एक दिन गर्म-धारा से भेंट हो गई। धारा के जलते अस्तित्व को ठंडक पहुँचाने के लिए हमने उसकी गरमी सोखनी प्रारंभ कर दी और इसके फलस्वरूप मैं पिघल पड़ी और पानी बनकर समुद्र में मिल गई।

समुद्र का भाग बनकर मैंने जो दृश्य देखा वह वर्णनातीत है। मैं अभी तक समझती थी कि समुद्र में केवल मेरे बंधु-बांधवों का ही राज्य है, परंतु अब ज्ञात हुआ कि समुद्र में चहल-पहल वास्तव में दूसरे ही जीवों की है और उसमें निरा नमक भरा है। पहले-पहल समुद्र का खारापन मुझे बिलकुल नहीं भाया, जी मचलाने लगा। पर धीरे-धीरे सब सहन हो चला।

एक दिन मेरे जी में आया कि मैं समुद्र के ऊपर तो बहुत घूम चुकी हूँ, भीतर चलकर भी देखना चाहिए कि क्या है? इस कार्य के लिए मैंने गहरे जाना प्रारंभ कर दिया।

मार्ग में मैंने विचित्र-विचित्र जीव देखे। मैंने अत्यंत धीरे-धीरे रेंगने वाले घोंघे, जालीदार मछलियाँ, कई-कई मन भारी कछुवे और हाथोंवाली मछलियाँ देखीं। एक मछली ऐसी देखी जो मनुष्य से कई गुना लंबी थी। उसके आठ हाथ थे। वह इन हाथों से अपने शिकार को जकड़ लेती थी।

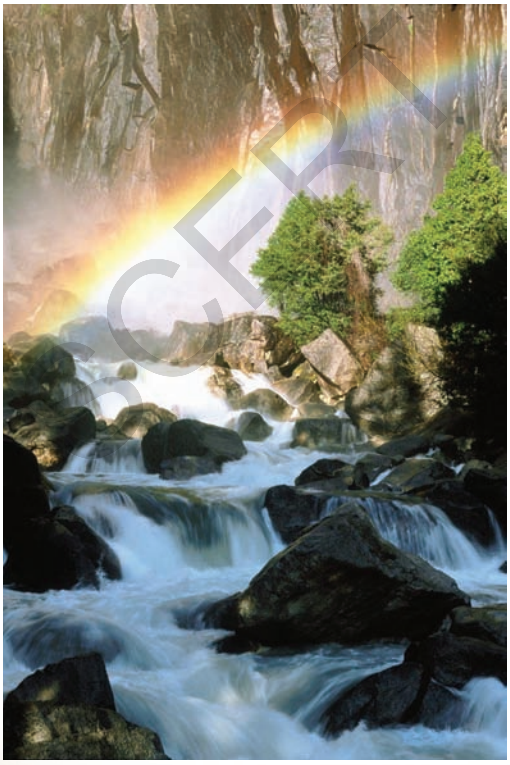

" मैं और गहराई की खोज में किनारों से दूर गई तो मैंने एक ऐसी वस्तु देखी कि मैं चौंक पड़ी। अब तक समुद्र में अँधेरा था, सूर्य का प्रकाश कुछ ही भीतर तक पहुँच पाता था और बल लगाकर देखने के कारण मेरे नेत्र दुखने लगे थे। मैं सोच रही थी कि यहाँ पर जीवों को कैसे दिखाई पड़ता होगा कि सामने ऐसा जीव दिखाई पड़ा मानो कोई लालटेन लिए घूम रहा हो। यह एक अत्यंत सुंदर मछली थी। इसके शरीर से एक प्रकार की चमक निकलती थी जो इसे मार्ग दिखलाती थी। इसका प्रकाश देखकर कितनी छोटी-छोटी अनजान मछलियाँ इसके पास आ जाती थीं और यह जब भूखी होती थी तो पेट भर उनका भोजन करती थी।"

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

" विचित्र है!"

" जब मैं और नीचे समुद्र की गहरी तह में पहुँची तो देखा कि वहाँ भी जंगल है। छोटे ठिंगने, मोटे पत्ते वाले पेड़ बहुतायत से उगे हुए हैं। वहाँ पर पहाड़ियाँ हैं, घाटियाँ हैं। इन पहाड़ियों की गुफ़ाओं में नाना प्रकार के जीव रहते हैं जो निपट अँधे तथा महा आलसी हैं।

यह सब देखने में मुझे कई वर्ष लगे। जी में आया कि ऊपर लौट चलें। परंतु प्रयत्न करने पर जान पड़ा कि यह असंभव है। मेरे ऊपर पानी की कोई तीन मील मोटी तह थी। मैं भूमि में घुसकर जान बचाने की चेष्टा करने लगी। यह मेरे लिए कोई नयी बात न थी। करोड़ों जल-कण इसी भाँति अपनी जान बचाते हैं और समुद्र का जल नीचे धँसता जाता है।

मैं अपने दूसरे भाइयों के पीछे-पीछे चट्टान में घुस गई। कई वर्षो में कई मील मोटी चट्टान में घुसकर हम पृथ्वी के भीतर एक खोखले स्थान में निकले और एक स्थान पर इकट्ठा होकर हम लोगों ने सोचा कि क्या करना चाहिए। कुछ की सम्मति में वहीं पड़ा रहना ठीक था। परंतु हममें कुछ उत्साही युवा भी थे। वे एक स्वर में बोले-हम खोज करेंगे, पृथ्वी के हृदय में घूम-घूम कर देखेंगे कि भीतर क्या छिपा हुआ है।"

"अब हम शोर मचाते हुए आगे बढ़े तो एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ ठोस वस्तु का नाम भी न था। बड़ी-बड़ी चट्टानें लाल-पीली पड़ी थीं और नाना प्रकार की धातुएँ इधर-उधर बहने को उतावली हो रही थीं।

इसी स्थान के आस-पास एक दुर्घटना होते-होते बची। हम लोग अपनी इस खोज से इतने प्रसन्न थे कि अंधा-धुँध बिना मार्ग देखे बढ़े जाते थे। इससे अचानक एक ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँ तापक्रम बहुत ऊँचा था। यह हमारे लिए असह्य था। हमारे अगुवा काँपे और देखते-देखते उनका शरीर ओषजन और हद्रजन में विभाजित हो गया। इस दुर्घटना से मेरे कान खड़े हो गए। मैं अपने और बुद्धिमान साथियों के साथ एक ओर निकल भागी।

हम लोग अब एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ पृथ्वी का गर्भ रह-रहकर हिल रहा था। एक बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। हम बड़ी तेज़ी से बाहर फेंक दिए गए। हम ऊँचे आकाश में उड़ चले। इस दुर्घटना से हम चौंक पड़े थे। पीछे देखने से ज्ञात हुआ कि पृथ्वी फट गई है और उसमें धुआँ, रेत, पिघली धातुएँ तथा लपटें निकल रही हैं। यह दृश्य बड़ा ही शानदार था और इसे देखने की हमें बार-बार इच्छा होने लगी।"

"मैं समझ गया। तुम ज्वालामुखी की बात कह रही हो।"

"हाँ, तुम लोग उसे ज्वालामुखी कहते हो। अब जब हम ऊपर पहुँचे तो हमें एक और भाप का बड़ा दल मिला। हम गरजकर आपस में मिले और आगे बढ़े। पुरानी सहेली आँधी के भी हमें यहाँ दर्शन हुए। वह हमें पीठ पर लादे कभी इधर ले जाती कभी उधर। वह दिन बड़े आनंद के थे। हम आकाश में स्वच्छंद किलोलें करते फिरते थे।

बहुत से भाप जल-कणों के मिलने के कारण हम भारी हो चले और नीचे झुक आए और एक दिन बूँद बनकर नीचे कूद पड़े।"

SCERT TELANGANA

"मैं एक पहाड़ पर गिरी और अपने साथियों के साथ मैली-कुचैली हो एक ओर को बह चली। पहाड़ों में एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदने और किलकारी मारने में जो आनंद आया वह भूला नहीं जा सकता।

हम एक बार बड़ी ऊँची शिखर पर से कूदे और नीचे एक चट्टान पर गिरे। बेचारा पत्थर हमारे प्रहार से टूटकर खंड-खंड हो गया। यह जो तुम इतनी रेत देखते हो पत्थरों को चबा-चबा कर हमीं बनाते हैं। जिस समय हम मौज में आते हैं तो कठोर से कठोर वस्तु हमारा प्रहार सहन नहीं कर सकती।

अपनी विजयों से उन्मत्त होकर हम लोग इधर-उधर बिखर गए। मेरी इच्छा बहुत दिनों से समतल भूमि देखने की थी इसलिए मैं एक छोटी धारा में मिल गई।

सरिता के वे दिवस बड़े मजे के थे। हम कभी भूमि को काटते, कभी पेड़ों को खोखला कर उन्हें गिरा देते। बहते-बहते मैं एक दिन एक नगर के पास पहुँची। मैंने देखा कि नदी के तट पर एक ऊँची मीनार में से कुछ काली-काली हवा निकल रही है। मैं उत्सुक हो उसे देखने को क्या बढ़ी कि अपने हाथों दुर्भाग्य को न्यौता दिया। ज्योंही मैं उसके पास पहुँची अपने और साथियों के साथ एक मोटे नल में खींच ली गई। कई दिनों तक मैं नल-नल घूमती फिरी। मैं प्रति क्षण उसमें से निकल भागने की चेष्टा में लगी रहती थी। भाग्य मेरे साथ था। बस, एक दिन रात के समय मैं ऐसे स्थान पर पहुँची जहाँ नल टूटा हुआ था। मैं तुरंत उसमें होकर निकल भागी और पृथ्वी में समा गई। अंदर ही अंदर घूमते-घूमते इस बेर के पेड़ के पास पहुँची।"

वह रुकी, सूर्य निकल आए थे।

" बस? मैंने कहा।"

" हाँ, मैं अब तुम्हारे पास नहीं ठहर सकती। सूर्य निकल आए हैं। तुम मुझे रोककर नहीं रख सकते।"

वह ओस की बूँद धीरे-धीरे घटी और आँखों से ओझल हो गई।

-रामचंद्र तिवारी

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. अन्य पदार्थो के समान जल की भी तीन अवस्थाएँ होती हैं। अन्य पदार्थों से जल की इन तीन अवस्थाओं में विशेष अंतर होता है कि जल की तरल अवस्था की तुलना में ठोस अवस्था (बर्फ) हल्की होती है। इसके कारण पर चर्चा कीजिए।
2. यदि आपको मौका दिया जाये तो आप किस प्रदेश में (पर्वतीय/मैदानी भाग/समुद्र तटीय प्रदेश) रहना पसंद करेंगे? क्यों? अपने मित्रों के उत्तर भी जानिए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

पढ़िए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लेखक को ओस की बूँद कहाँ मिली?
2. ओस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी?
3. हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज/पुरखा क्यों कहा?
4. पानी की कहानी के आधार पर पानी के जन्म और जीवन-यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
5. कहानी के अंत और आरंभ के हिस्से को स्वयं पढ़कर देखिए और बताइए कि ओस की बूँद लेखक को आपबीती सुनाते हुए किसकी प्रतीक्षा कर रही थी?

लिखिए

I. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और अधिक गर्मी क्यों नहीं पड़ती?
2. जल, इंसान के लिए कभी-कभी खतरा भी बन जाता है। ऐसी परिस्थिति कब और क्यों आती है? लिखिए।

II. नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर कम से कम दस वाक्यों में लिखिए।

1. जल को प्रकृति एवं जीवन का संरक्षक कहा जा सकता है। जल हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है?
2. प्रकृति का प्रत्येक तत्व एक-दूसरे पर आधारित है। सिद्ध करते हुए अपने विचार लिखिए।

शब्द भंडार

1. 'पानी' का साधारण अर्थ जल होता है। किन्तु जिस प्रकार पानी का जीवन में अत्यंत महत्व है, उसी प्रकार भाषा में भी इस शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में होता है। इससे संबंधित अनेक मुहावरे भी है। इनमें से कुछ नीचे दिए जा रहे हैं। इनका वाक्य प्रयोग कीजिए।

   पानी-पानी होना = शर्मा जाना
   पानी के मोल = बहुत सस्ता
   पानी पर नींव होना = टिकाऊ न होना
   पानी फेरना = चौपट कर देना
   पानी में आग लगाना = असंभव कार्य कर डालना

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

किसी भी **क्रिया** को पूरी करने में जो संज्ञा आदि शब्द संलग्न होते हैं, वे अपनी अलग-अलग भूमिकाओं के अनुसार अलग-अलग **कारकों** में वाक्य में दिखाई पड़ते हैं; जैसे- वह हाथों से शिकार को जकड़ लेती थी। 'जकड़ना' क्रिया तभी संपन्न हो पायेगी जब कोई व्यक्ति **(वह)** जकड़नेवाला हो, कोई वस्तु **(शिकार)** हो, जिसे जकड़ा जाये। इन भूमिकाओं की प्रकृति अलग-अलग है। व्याकरण में ये भूमिकाएँ कारकों के अलग-अलग भेदों, जैसे- कर्ता, कर्म, करण आदि से स्पष्ट होती हैं। अपनी पाठ्यपुस्तक से इस प्रकार के पाँच और उदाहरण खोजकर लिखिए और उन्हें भलीभाँति परिभाषित कीजिए।

प्रशंसा

जल का जीवन में अत्यधिक महत्व है। कहा जाता है- जल ही जीवन है, जल जीवन का आधार है। जल संरक्षण के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

'पानी की कहानी' पाठ में ओस की बूँद अपनी कहानी स्वयं सुना रही है और लेखक केवल श्रोता है। इस आत्मकथात्मक शैली में आप भी किसी वस्तु का चुनाव करके कहानी लिखिए।

परियोजना कार्य

अपने आसपास के भूगर्भ जल स्तर का पता लगाइए। अपने घर के बुजुर्गों से पूछिए कि उनके समय पर यह जल स्तर कितना था? इसके कारणों का पता लगाइए और लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. जल का महत्व व उसके संरक्षण के उपाय बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित वस्तु की आत्मकथा लिखने का प्रयास कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इकाई-IV

14. हमारा संकल्प

प्रस्तावना प्रसंग–

जगह–जगह हरियाली होगी।
तब ही तो खुशहाली होगी।
फल–फूलों की डाली होगी।
भारत–भूमि निराली होगी।

SCERT

प्रश्न

1. हरियाली से क्या तात्पर्य है?
2. हरियाली किस प्रकार खुशहाली लाती है?
3. हरियाली बढ़ाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

पात्र :

वृक्ष : बरगद, आम, पीपल, नारियल

पशु : बंदर

बच्चे : शशांक, आकाश, दिव्या

वेशभूषा : अभिनय करने वाले पात्र अपनी वेषभूषा धारण करते समय वृक्ष विशेष के पत्ते अपने आप पर चिपका लें।

(आम, पीपल, नारियल के वृक्षों का एक साथ प्रवेश)

सभी : प्रणाम! बरगद बाबा, प्रणाम।

बरगद : खुश रहो बेटा। खूब फूलो-फलो! तुम सब चिरायु बनो!

आम : आप चिरायु होने की बात कर रहे हैं। आज तो हम सबका जीवन संकट में है। आप तो जानते हैं। वृक्ष कितनी तेजी से कट रहे हैं।

पीपल : हाँ, बाबा। यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह पृथ्वी वृक्षहीन हो जायेगी। मनुष्य अपने स्वार्थ में यह भी भूल गया कि वह हमें काटकर अपना ही अहित कर रहा है।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

SCERT TELANGANA

नारियल	:	बाबा! मैं भी कई दिनों से इस चिंता में डूबा हुआ हूँ। इसीलिए तो हम सब मिलकर आप के पास आये हैं।
बरगद	:	बेटा! मेरी इन विशाल जटाओं ने मानव की न जाने कितनी पीढ़ियाँ देखी हैं। देखते ही देखते यहाँ मनुष्य न जाने क्या से क्या हो गया। जिस देश में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती हो। उसी देश में उनपर ऐसे अत्याचार।
पीपल	:	लेकिन बाबा, मुझे आश्चर्य तो इस बात का है कि हम वृक्ष इनके लिए इतने उपयोगी हैं, फिर भी ये हमें काटने में ज़रा भी नहीं झिझकते। ज़रा यह भी नहीं सोचते कि हम इनके जीवन रक्षक हैं।
आम	:	हाँ बाबा, अब तो हमारा अस्तित्व ही खतरे में है। तुरंत ही इसका कोई समाधान सोचना चाहिए। (एक बंदर का खों-खों करते हुए प्रवेश)
बंदर	:	बरगद बाबा! बरगद बाबा! हमें रहने का स्थान दो।
बरगद	:	क्या हुआ बेटा? तुम इतने घबराये हुए क्यों हो?
बंदर	:	बाबा! वनों में मनुष्य द्वारा पेड़ काटे जा रहे हैं। हम पशु-पक्षियों पर बड़ा संकट आ पड़ा है। सभी चिंतित हैं कि यदि वृक्ष नहीं रहे तो हम क्या खायेंगे? हम कहाँ रहेंगे?
आम, पीपल और नारियल (एक साथ)	:	बाबा देखा आपने, मनुष्य ने सारे प्राणी-जगत में त्राहि-त्राहि मचा दी है।
बरगद	:	मेरे बच्चो! थोड़ा धैर्य रखो। यदि मनुष्य की यही आदत बनी रही तो शीघ्र ही मनुष्य जाति के समक्ष गहन संकट की स्थिति खड़ी हो जायेगी। तब वह स्वयं वृक्षों के महत्व को समझेगा। (आपस में बात करते हुए तीन बच्चों का प्रवेश। उन्हें आते हुए देख वृक्ष चुप हो जाते हैं।)
शशांक	:	ओफ! कितनी गर्मी है। धूल और धुएँ से मेरा दम घुटा जा रहा है। जहाँ देखो, वहाँ मोटर, स्कूटर, गाड़ियों का धुआँ और शोर।
दिव्या	:	(बरगद के पेड़ के पास जाकर) आओ भैया! इस बरगद के नीचे बैठें। कितनी ठंडक हैं इसकी छाया में।
आकाश	:	सचमुच, अब जाकर शांति मिली। इसीलिए तो आजकल जगह-जगह लिखा रहता है- पेड़ लगाइए और अपने वातावरण को हरा-भरा और शुद्ध बनाइए।
दिव्या	:	मुझे तो हरे-भरे पेड़-पौधे, बाग-बगीचे बहुत अच्छे लगते हैं। मैंने अपने आँगन में भी अमरूद, नींबू, गुलाब और चमेली लगा रखे हैं।

SCERT TELANGANA

आकाश : हमारे घर के आसपास भी सड़क के किनारे आम, नीम, पीपल के पेड़ लगे हुए हैं। मेरे दादाजी तो नीम की ही दातुन करते हैं। वे कहते हैं कि नीम का वृक्ष बड़ा गुणकारी है।

शशांक : हमारे मुहल्ले में एक वर्षों पुराना नीम का पेड़ था। लेकिन अभी कुछ दिन पूर्व जब मैं मामा के घर से लौटा तो देखा– नीम का पेड़ कटा पड़ा है। मुझे बहुत दुःख हुआ।

दिव्या : हाँ भैया! मेरी दादी जी कहती हैं कि वृक्षों में भी प्राण होते हैं। वे भी साँस लेते हैं, पानी पीते हैं। उन्हें भी भोजन चाहिए। काटने से उन्हें भी दुःख होता है।

बरगद : तुम्हारी बातें सुनकर हमने संतोष की साँस ली। अब तो हम तुम लोगों से कुछ भी आशा कर सकते हैं। आज सबके हित में यही है कि वृक्षों को काटने से रोका जाये और नये वृक्ष लगाये जायें।

आम : ज़रा सोचो बेटा! हम वृक्ष मनुष्य जाति के लिए अपने अंगों का सहर्ष दान करते हैं और उसने हमें ही काटना शुरू कर दिया। हम पर क्या गुजरती होगी?

शशांक, दिव्या, आकाश (एक साथ) : आप चिन्ता न करें। हम सब बच्चे मिलकर यह संकल्प करते हैं कि आपका संदेश जन–जन तक पहुँचायेंगे।

शशांक : हम प्रण करते हैं कि वृक्षों का संरक्षण करेंगे और नये पेड़–पौधे भी लगायेंगे।

दिव्या : जंगल तो जंगल, घर–आँगन में भी पेड़–पौधे लगाकर गाँव शहरों को हरा–भरा रखेंगे।

वृक्ष और बच्चे एक स्वर में : आओ मिलकर वृक्ष लगायें।
धरती पर हरियाली लायें।
वातावरण को शुद्ध बनाकर,
जीवन में खुशहाली लायें।

(परदा गिरता है)

–साभार पंजाब शिक्षा बोर्ड

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. वृक्ष मनुष्य, पशु–पक्षियों के जीवन के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं? चर्चा कीजिए।
2. वृक्षों के संरक्षण एवं नये वृक्ष लगाने के लिए आप अपने मित्रों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए। आपके सामने किस प्रकार की कठिनाइयाँ आ सकती हैं? चर्चा कीजिए।
3. तुम अपने घर–आँगन में कौन–कौन से पौधे लगाना पसंद करोगे और क्यों?

पढ़िए

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. सभी वृक्ष बरगद के पास क्यों गये?
2. शशांक, दिव्या, आकाश आदि बच्चों ने कहा – 'हम सब बच्चे मिलकर संकल्प करते हैं कि आपका संदेश जन–जन तक पहुँचाएँगे।' वे संदेश क्या थे?
3. 'हमारा संकल्प' पाठ से हमें क्या सीख मिलती है?

क्या–किसने कहा?

1. खुश रहो बेटा! खूब फूलो–फलो! तुम सब चिरायु बनो।
2. यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह पृथ्वी वृक्षहीन हो जायेगी।
3. हम पशु–पक्षियों पर बड़ा संकट आ पड़ा है।
4. मनुष्य ने सारे प्राणी–जगत में त्राहि–त्राहि मचा दी है।
5. ओफ! कितनी गर्मी है। धूल और धुएँ से मेरा दम घुटा जा रहा है।
6. आओ भैया! इस बरगद के नीचे बैठें। कितनी ठंडक हैं इसकी छाया में।
7. मैंने अपने आँगन में भी अमरूद, नींबू, गुलाब और चमेली लगा रखे हैं।
8. वे कहते हैं कि नीम का वृक्ष बड़ा गुणकारी है।
9. मेरी दादी जी कहती हैं कि वृक्षों में भी प्राण होते हैं।
10. अब तो हम तुम लोगों से कुछ भी आशा कर सकते हैं।

लिखिए

1. वृक्षों के तेजी से कटने के क्या कारण हो सकते हैं?
2. वृक्षों के प्रति किसकी क्या जिम्मेदारी है?
   - आप की
   - विद्यालय की
   - सरकार की
   - जनता की

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. ऐसे वृक्षों के नाम लिखिए जिनके पत्ते आप पहचान सकते हैं?
2. आपके विद्यालय में ऐसी कौन-कौनसी वस्तुएँ हैं, जो वृक्षों की सूखी लकड़ियों से बनी हैं?

भाषा की बात

क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे 'मारना' से 'मार', 'काटना' से 'काट', 'हारना' से 'हार', सीखना से सीख आदि भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। नीचे दी गयी क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ।

भागना से	दौड़ना से	पहचानना से ....
हड़पना से	बोलना से	मुस्कराना से ....

प्रशंसा

वृक्ष हमारे जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। इसी प्रकार प्रकृति के अनेक तत्व हमारे लिए उपयोगी हैं। कुछ अत्यंत उपयोगी तत्वों के नाम लिखिए और आप किसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं? क्यों?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

वृक्षारोपण एवं वृक्षों के संरक्षण के लिए प्रेरित करते हुए कुछ नारे लिखिए।

परियोजना कार्य

किसी एक वृक्ष के पत्ते, फल, फूल, लकड़ी का टुकड़ा, उसकी छाल आदि एकत्र कीजिए और उसकी उपयोगिता के बारे में पता करके लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. वृक्षों का महत्व एवं उनके संरक्षण के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. परिचित विषय संबंधी प्रेरणादायक नारों का सृजन कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इकाई-IV

15. सूरदास के पद

प्रस्तावना प्रसंग–

चिंतारहित खेलना–खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद।।

–सुभद्रा कुमारी चौहान

प्रश्न

1. यह चित्र किस त्यौहार से संबंधित है?
2. इस चित्र में बच्चे क्या कर रहे हैं?
3. कृष्ण को माखनचोर क्यों कहा जाता है?

(1)

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनी सी भुइँ लोटी।
काँचौ दूध पियावत पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।
सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

(2)

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही आयौ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध-दही सब सखनि खवायौ।
ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ।
सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ।

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. ऐसा हुआ हो कभी कि माँ के मना करने पर भी घर में उपलब्ध किसी स्वादिष्ट वस्तु को आपने चुपके–चुपके थोड़ा बहुत खा लिया हो और चोरी पकड़े जाने पर कोई बहाना भी बनाया हो। यह बहाना बनाना उचित था या अनुचित? कारण सहित बताइए।
2. कृष्ण माखन बड़े चाव से खाते थे। आज के बच्चे क्या खाना पसंद करते हैं? इनमें क्या लाभदायक हैं और क्या हानिकारक? चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?
2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या सोच रहे थे?
3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं? इसका कारण क्या रहा होगा?
4. तैं ही पूत अनोखौ जायौ– पंक्ति में ग्वालन के मन के कौन से भाव मुखरित हो रहे हैं?
5. माखन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा सा माखन बिखरा क्यों देते हैं?
6. दोनों पदों में से आपको कौनसा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?
7. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कृष्ण की बाललीला से सामान्य बालकों की बाललीला की तुलना कीजिए और बताइए कि उनमें क्या–क्या समानताएँ हैं?
2. सभी बच्चों को अपना बचपन बिना बोझ के जीने का अधिकार है। लेकिन कुछ ऐसे भी बच्चे हैं जिन्हें खेलने–कूदने–पढ़ने की उम्र में काम करना पड़ता है। आप जानते हैं कि बाल मज़दूरी करवाना अपराध भी है। ऐसे बच्चों के लिए आप क्या करना चाहेंगे?
3. बच्चे देश का भविष्य होते हैं। ऐसा क्यों कहा जाता है?

II. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. यदि आप श्रीकृष्ण की टोली में होते तो उनसे क्या–क्या बातें करते?
2. बालकृष्ण की विशेषताएँ बताइए।

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. कविता में सूर ने दुपहर शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द का प्रचलित रूप दोपहर है। ऐसे ही कुछ शब्द पाठ से छाँटिये और उनके प्रचलित रूप लिखिए।
2. पाठ से कोई पाँच शब्द जिसे आप कठिन मानते हैं उनका अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़कर लिखिए।

भाषा की बात

कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे-

पर्यायवाची - चंद्रमा-शशि, इंदु, राका

विपरीतार्थक - दिन-रात, श्वेत-श्याम, शीत-उष्ण

आप भी इसी प्रकार कुछ पर्यायवाची व विपरीतार्थक शब्द लिखिए।

प्रशंसा

कहा जाता है कि बचपन के दिन बड़े सुहाने होते हैं। इसे जीवन का स्वर्णकाल माना गया है। ऐसा क्यों कहा गया होगा?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

सूर के पदों को संगीतबद्ध कीजिए। उनका गायन कक्षा में मित्रों की सहायता से प्रस्तुत कीजिए।

परियोजना कार्य

सूरदास के दो अन्य पदों का संकलन कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. बाल सौंदर्य के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. कविताओं को संगीतबद्ध करने का प्रयत्न कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इकाई-IV

16. बाज और साँप

–निर्मल वर्मा

प्रस्तावना प्रसंग–

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को दहलाती है।
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,

विघ्नों को गले लगाते हैं
काँटों में राह बनाते हैं।

–रामधारी सिंह दिनकर

SCERT TELANGANA

प्रश्न

1. विपत्ति में कौन परेशान होता है?
2. दुनिया साहसी लोगों का गुणगान क्यों करती है?
3. आप कौन-सा साहसपूर्ण कार्य करना चाहेंगे?

समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत की अँधेरी गुफा में एक साँप रहता था। समुद्र की तूफ़ानी लहरें धूप में चमकतीं, झिलमिलातीं और दिन भर पर्वत की चट्टानों से टकराती रहती थीं।

पर्वत की अँधेरी घाटियों में एक नदी भी बहती थी। अपने रास्ते पर बिखरे पत्थरों को तोड़ती, शोर मचाती हुई यह नदी बड़े ज़ोर से समुद्र की ओर लपकती जाती थी। जिस जगह पर नदी और समुद्र का मिलाप होता था, वहाँ लहरें दूध के झाग-सी सफ़ेद दिखाई देती थीं।

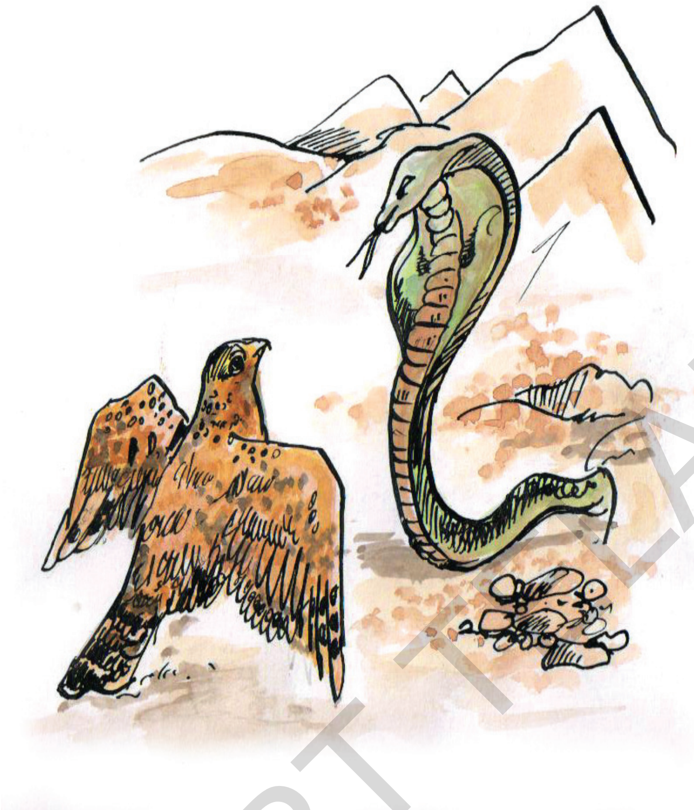

अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता-लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी-मेढ़ी बल खाती हुई नदी की गुस्से से भरी आवाज़ें। वह मन ही मन खुश होता था कि इस गर्जन-तर्जन के होते हुए भी वह सुखी और सुरक्षित है। कोई उसे दुख नहीं दे सकता। सबसे अलग, सबसे दूर, वह अपनी गुफा का स्वामी है। न किसी से लेना, न किसी से देना। दुनिया की भाग-दौड़, छीना-झपटी से वह दूर है। साँप के लिए यही सबसे बड़ा सुख था।

एक दिन एकाएक आकाश में उड़ता हुआ खून से लथपथ एक बाज साँप की उस गुफा में आ गिरा। उसकी छाती पर कितने ही ज़ख्मों के निशान थे, पंख खून से सने थे और वह अधमरा-सा ज़ोर-शोर से हाँफ रहा था। ज़मीन पर गिरते ही उसने एक दर्द भरी चीख मारी और पंखों को फड़फड़ाता हुआ धरती पर लोटने लगा। डर से साँप अपने कोने में सिकुड़ गया। किन्तु दूसरे ही क्षण उसने भाँप लिया कि बाज जीवन की अंतिम साँसें गिन रहा है और उससे डरना बेकार है। यह सोचकर उसकी हिम्मत बँधी और वह रेंगता हुआ उस घायल पक्षी के पास जा पहुँचा। उसकी तरफ़ कुछ देर तक देखता रहा, फिर मन ही मन खुश होता हुआ बोला- "क्यों भाई, इतनी जल्दी मरने की तैयारी कर ली?"

बाज ने एक लंबी आह भरी "ऐसा ही दिखता है कि आखिरी घड़ी आ पहुँची है लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है। मेरी ज़िंदगी भी खूब रही भाई, जी भरकर उसे भोगा है। जब तक शरीर में ताक़त रही, कोई सुख ऐसा नहीं बचा जिसे न भोगा हो। दूर-दूर तक उड़ानें भरी हैं, आकाश की असीम

SCERT TELANGANA

ऊँचाइयों को अपने पंखों से नाप आया हूँ। तुम्हारा बड़ा दुर्भाग्य है कि तुम जिंदगी भर आकाश में उड़ने का आनंद कभी नहीं उठा पाओगे।''

साँप बोला– ''आकाश! आकाश को लेकर क्या मैं चाटूँगा! आकाश में आखिर रखा क्या है? क्या मैं तुम्हारे आकाश में रेंग सकता हूँ। ना भाई, तुम्हारा आकाश तुम्हें ही मुबारक, मेरे लिए तो यह गुफा भली। इतनी आरामदेह और सुरक्षित जगह और कहाँ होगी?''

साँप मन ही मन बाज़ की मूर्खता पर हँस रहा था। वह सोचने लगा कि आखिर उड़ने और रेंगने के बीच कौन-सा भारी अंतर है। अंत में तो सबके भाग्य में मरना ही लिखा है-शरीर मिट्टी में ही मिल जाएगा।

अचानक बाज ने अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया और उसकी दृष्टि साँप की गुफा के चारों ओर घूमने लगी। चट्टानों में पड़ी दरारों से पानी गुफा में टपक रहा था। सीलन और अँधेरे में डूबी गुफा में एक भयानक दुर्गंध फैली हुई थी, मानो कोई चीज़ वर्षों से पड़ी-पड़ी सड़ गई हो।

बाज के मुँह से एक बड़ी ज़ोर की करुण चीख फूटी पड़ी– '' आह! काश, मैं सिर्फ़ एक बार आकाश में उड़ पाता।''

बाज की ऐसी करुण चीख सुनकर साँप कुछ सिटपिटा-सा गया। एक क्षण के लिए उसके मन में उस आकाश के प्रति इच्छा पैदा हो गई जिसके वियोग में बाज इतना व्याकुल होकर छटपटा रहा था। उसने बाज से कहा– ''यदि तुम्हें स्वतंत्रता इतनी प्यारी है तो इस चट्टान के किनारे से ऊपर क्यों नहीं उड़ जाने की कोशिश करते। हो सकता है कि तुम्हारे पैरों में अभी इतनी ताकत बाकी हो कि तुम आकाश में उड़ सको। कोशिश करने में क्या हर्ज़ है?''

बाज में एक नयी आशा जग उठी। वह दूने उत्साह से अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान के किनारे तक खींच लाया। खुले आकाश को देखकर उसकी आँखें चमक उठीं। उसने एक गहरी, लंबी साँस ली और अपने पंख फैलाकर हवा में कूद पड़ा।

किंतु उसके टूटे पंखों में इतनी शक्ति नहीं थी कि उसके शरीर का बोझ सँभाल सकें। पत्थर-सा उसका शरीर लुढ़कता हुआ नदी में जा गिरा। एक लहर ने उठकर उसके पंखों पर जमे खून को धो दिया, उसके थके-माँदे शरीर को सफ़ेद फेन से ढक दिया, फिर अपनी गोद में समेटकर उसे अपने साथ सागर की ओर ले चली।

लहरें चट्टानों पर सिर धुनने लगीं मानो बाज की मृत्यु पर आँसू बहा रही हों। धीरे-धीरे समुद्र के असीम विस्तार में बाज आँखों से ओझल हो गया।

चट्टान की खोखल में बैठा हुआ साँप बड़ी देर तक बाज की मृत्यु और आकाश के लिए उसके प्रेम के विषय में सोचता रहा।

''आकाश की असीम शून्यता में क्या ऐसा आकर्षण छिपा है जिसके लिए बाज ने अपने प्राण गँवा दिए? वह खुद तो मर गया लेकिन मेरे दिल का चैन अपने साथ ले गया। न जाने आकाश में क्या खजाना रखा है? एक बार तो मैं भी वहाँ जाकर उसके रहस्य का पता लगाऊँगा चाहे कुछ देर

SCERT TELANGANA

के लिए ही हो। कम से कम उस आकाश का स्वाद तो चख लूँगा।''

यह कहकर साँप ने अपने शरीर को सिकोड़ा और आगे रेंगकर अपने को आकाश की शून्यता में छोड़ दिया। धूप में क्षण भर के लिए साँप का शरीर बिजली की लकीर-सा चमक गया।

किंतु जिसने जीवन भर रेंगना सीखा था, वह भला क्या उड़ पाता? नीचे छोटी-छोटी चट्टानों पर छप्प से साँप जा गिरा। ईश्वर की कृपा से बेचारा बच गया, नहीं तो मरने में क्या कसर बाकी रही थी। साँप हँसते हुए कहने लगा-

''सो उड़ने का यही आनंद है-भर पाया मैं तो! पक्षी भी कितने मूर्ख हैं। धरती के सुख से अनजान रहकर आकाश की ऊँचाइयों को नापना चाहते थे। किंतु अब मैंने जान लिया कि आकाश में कुछ नहीं रखा। केवल ढेर-सी रोशनी के सिवा वहाँ कुछ भी नहीं, शरीर को सँभालने के लिए कोई स्थान नहीं, कोई सहारा नहीं। फिर वे पक्षी किस बूते पर इतनी डींगें हाँकते हैं, किसलिए धरती के प्राणियों को इतना छोटा समझते हैं। अब मैं कभी धोखा नहीं खाऊँगा, मैंने आकाश देख लिया और खूब देख लिया। बाज़ तो बड़ी-बड़ी बातें बनाता था, आकाश के गुण गाते थकता नहीं था। उसी की बातों में आकर मैं आकाश में कूदा था। ईश्वर भला करे, मरते-मरते बच गया। अब तो मेरी यह बात और भी पक्की हो गई है कि अपनी खोखल से बड़ा सुख और कहीं नहीं है। धरती पर रेंग लेता हूँ, मेरे

लिए यह बहुत कुछ है। मुझे आकाश की स्वच्छंदता से क्या लेना-देना? न वहाँ छत है, न दीवारें हैं, न रेंगने के लिए ज़मीन है। मेरा तो सिर चकराने लगता है। दिल काँप-काँप जाता है। अपने प्राणों को खतरे में डालना कहाँ की चतुराई है?"

साँप सोचने लगा कि बाज अभागा था जिसने आकाश की आज़ादी को प्राप्त करने में अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी।

किंतु कुछ देर बाद साँप के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने सुना, चट्टानों के नीचे से एक मधुर, रहस्यमय गीत की आवाज़ उठ रही है। पहले उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। किंतु कुछ देर बाद गीत के स्वर अधिक साफ़ सुनाई देने लगे। वह अपनी गुफा से बाहर आया और चट्टान से नीचे झाँकने लगा। सूरज की सुनहरी किरणों में समुद्र का नीला जल झिलमिला रहा था। चट्टानों को भिगोती हुई समुद्र की लहरों में गीत के स्वर फूट रहे थे। लहरों का यह गीत दूर-दूर तक गूँज रहा था।

साँप ने सुना, लहरें मधुर स्वर में गा रही हैं।

हमारा यह गीत उन साहसी लोगों के लिए है जो अपने प्राणों को हथेली पर रखे हुए घूमते हैं।

चतुर वही है जो प्राणों की बाज़ी लगाकर ज़िंदगी के हर ख़तरे का बहादुरी से सामना करे।

ओ निड़र बाज! शत्रुओं से लड़ते हुए तुमने अपना कीमती रक्त बहाया है। पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक-एक बूँद ज़िंदगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।

तुमने अपना जीवन बलिदान कर दिया किंतु फिर भी तुम अमर हो। जब कभी साहस और वीरता के गीत गाए जाएँगे, तुम्हारा नाम बड़े गर्व और श्रद्धा से लिया जाएगा।

"हमारा गीत ज़िंदगी के उन दीवानों के लिए है जो मर कर भी मृत्यु से नहीं डरते।"

-निर्मल वर्मा

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. लेखक ने इस कहानी का शीर्षक कहानी के दो पात्रों के नाम पर रखा है। लेखक ने बाज और साँप को ही क्यों चुना होगा? आपस में चर्चा कीजिए।
2. क्या पक्षियों को उड़ते समय सचमुच आनंद का अनुभव होता होगा या स्वाभाविक कार्य में आनंद का अनुभव होता ही नहीं? अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. मानव ने भी हमेशा पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा की है। आज मनुष्य उड़ने की इच्छा किन साधनों से पूरी करता है? इन साधनों की उपयोगिता पर चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

पढ़िए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहा, मुझे कोई शिकायत नहीं है?
2. बाज ज़िन्दगी भर आकाश में ही उड़ता रहा फिर घायल होने के बाद भी वह उड़ना क्यों चाहता था?
3. साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उड़ने की कोशिश क्यों की?
4. बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गाया था?
5. कहानी में से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखिए जिनसे स्वतंत्रता की प्रेरणा मिलती हो?
6. "ओ निडर बाज! शत्रुओं से लड़ते हुए तुमने अपना कीमती रक्त बहाया है। पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक-एक बूँद ज़िन्दगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।" इस पंक्ति में 'प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करने' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
7. जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरै पानी पैठ।
   मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।। इस दोहे और इस कहानी के सार में क्या समानता है?

लिखिए

I. नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा?
2. लहरों का गीत सुनने के बाद साँप ने क्या सोचा होगा? क्या उसने फिर से उड़ने की कोशिश की होगी? अपनी कल्पना से आगे की कहानी पूरी कीजिए।
3. साहस की परीक्षा विपरीत परिस्थितियों में होती है। ऐसा क्यों कहा जाता है?

II. नीचे दिये गये प्रश्न का उत्तर कम से कम दस वाक्यों में लिखिए।

1. स्वतंत्रता के दीवानों में साहस अनिवार्य रूप से पाया जाता है। किन्तु यही साहस जब दूसरों की स्वतंत्रता छीनने का प्रयास करता है तो दुस्साहस कहलाता है। आपकी समझ से साहस का काम क्या है? उदाहरण सहित लिखिए।
2. अपने घर में आराम से रहने में जीवन का आनंद है या स्वछंदता से भ्रमण करने में। कारण सहित अपने विचार लिखिए।

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

कहानी में से अपनी पसंद के मुहावरे चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

भाषा की बात

'आरामदेह' शब्द में 'देह' 'देनेवाला' के अर्थ में प्रयुक्त है। देनेवाला के अर्थ में **द, प्रद, दाता, दाई** आदि का प्रयोग भी होता है, जैसे– **सुखद, सुखदाता, सुखदाई, सुखप्रद।** उपर्युक्त समानार्थी प्रत्ययों को लेकर दो–दो शब्द बनाइए।

प्रशंसा

समाज को साहसी लोगों का अमूल्य योगदान रहा है। बच्चे भी इसमें पीछे नहीं हैं। प्रत्येक गणतंत्र दिवस के अवसर पर साहसी व बहादुर बालकों को राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जाता है। साहसी लोगों का सम्मान करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

यदि इस कहानी के पात्र बाज और साँप न होकर कोई और होते तब कहानी कैसी होती? अपनी कल्पना से लिखिए।

परियोजना कार्य

पशु–पक्षियों से संबंधित कोई अन्य कहानी संकलित कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. साहस का महत्व बता सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

पहाड़ से ऊँचा आदमी

उपवाचक

– सुभाष गाताड़े

तीन सौ साठ फीट लंबा और तीस फीट चौड़ा पहाड़ काटने के लिए कितना वक्त लग सकता है? निश्चित ही टैक्नोलॉजी के इस युग में इस सवाल का जवाब इस बात पर निर्भर करेगा कि आप पहाड़ का सीना चीरने के लिए किस मशीन का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन अगर यह पूछा जाए कि इसी काम को एक ही शख्स को अंजाम देना हो तो कितना वक्त लगेगा?

शायद यह चकरा देनेवाला सवाल होगा लेकिन बिहार के गया ज़िले के गेलौर गाँव में एक मज़दूर परिवार में जन्मे एक शख्स ने इसका जवाब अपने बाजुओं और अपनी मेहनत से दिया। पहाड़ को हिला देनेवाले उन दशरथ माँझी ने राजधानी दिल्ली में 2007 में अंतिम साँस ली। उनका जन्म 1934 में हुआ था।

वर्ष 1966 की किसी अलसुबह जब छनी हथौड़ा लेकर दशरथ माँझी अपने गाँव के पास स्थित पहाड़ के पास पहुँचे तो बहुत कम लोगों को इस बात का पता था कि इस शख्स ने अपने दिल में क्या ठान लिया है। मज़दूरी और कभी कभार इधर-उधर काम करनेवाले दशरथ माँझी ने जब पहाड़ पर छेनी हथौड़ा चलाना शुरू किया तो आने-जाने वाले राहगीरों के लिए ही नहीं, गाँव के लोगों के लिए भी वह एक हँसी के पात्र बन गए थे।

जीवन संगिनी फागुनी देवी का समय पर इलाज न करा पाने से उसे खो चुके दशरथ माँझी को इससे

कोई फर्क नहीं पड़ा। धुन के पक्के दशरथ की अथक मेहनत बाईस साल बाद तब रंग लाई जब उस पहाड़ से एक रास्ता दूसरे गाँव तक निकल आया।

आखिर ऐसी क्या बात हुई कि दशरथ को पहाड़ चीरने की धुन सवार हुई। दरअसल पहाड़ को जब तक चीरा नहीं गया था तब तक दशरथ के गाँव से सबसे नज़दीकी वजीरगंज अस्पताल 90 किलोमीटर पड़ता था। दशरथ की पत्नी की तबीयत खराब होने पर उसे वहाँ ले जाने के दौरान ही उसने

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21
SCERT TELANGANA

दम तोड़ दिया था। उन्हें लगा कि पहाड़ से कोई रास्ता होता तो मैं अपनी पत्नी को वक्त पर अस्पताल ले जाता और उसका इलाज करा पाता।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की एक कविता हैः 'दुख तुम्हें क्या तोड़ेगा तुम दुख को तोड़ दो। बस अपनी आँखें औरों के सपनों से जोड़ दो।'

ज़िंदगी का तीसवाँ वसंत पार कर चुके दशरथ माँझी ने शायद शेष गाँव के निवासियों के मन में दबी छोटी-सी हसरत को अपनी ज़िंदगी का मिशन बना डाला और अपनी पत्नी की असामयिक मौत से उपजे प्रचंड दुख को एक नई संकल्प शक्ति में तब्दील कर दिया। पाँच-छह साल तक दशरथ अकेले ही मेहनत करते रहे। धीरे-धीरे और लोग भी जुड़ते चले गए। वहाँ एक दानपात्र भी रखा गया था जिसमें लोग चंदा डाल देते थे। कई लोग अपने घर से अनाज भी देते थे।

आज की तारीख में आप कह सकते हैं कि गेलौर से 'वजीरगंज' जाने की अस्सी किलोमीटर की दूर को 13 किलोमीटर ला देने वाला यह रास्ता एक श्रमिक के प्यार की निशानी है। एक अंग्रेज पत्रकार ने लिखा : 'पूअरमैंस ताजमहल।'

कुछ साल पहले एक पत्रकार उनसे मिलने गया, तब एक फक्कड़ कबीरपंथी की तरह यायावरी कर रहे दशरथ माँझी ने उन्हें अपनी एक प्रिय कहानी सुनाई थी जो उस चिड़िया के बारे में थी जिसका घोंसला समुद्र बहाकर ले गया था। कहानी उस चिड़िया की प्रचंड जिजीविषा और संकल्प को बयाँ कर रही थी जिसके तहत समुद्र द्वारा घोंसला न लौटाने पर चिड़िया ने अकेले ही समंदर को सुखा देने का संकल्प लिया। शुरूआत में उसे पागल करार देने वाली बाकी चिड़ियाँ भी उसके साथ जुड़ गई और फिर विष्णु का वाहन गरुड़ भी इन कोशिशों का हिस्सा बन गया। फिर बीच-बचाव करने के लिए खुद विष्णु को आना पड़ा जिन्होंने समुद्र को धमकाया कि अगर उसने चिड़िया का घोंसला नहीं लौटाया तो पल भर में उसे सुखा दिया जाएगा। तब पत्रकार ने जब उनसे पूछा कि कहानी की चिड़िया क्या आप ही हैं। इसके जवाब में आँखों में शरारत भरी मुसकान लिए दशरथ माँझी ने बात टाल दी थी।

पिछले कुछ सालों से दशरथ माँझी कबीरपंथी साधु बन गए थे और यायावर बने हुए थे लेकिन कबीर का उनका स्वीकार महज ऊपरी नहीं था। उनके विचारों में भी कबीर जैसी प्रखरता थी। गरीब और मेहनतकशों का ईश्वर पूजा में उलझे रहना और तमाम अंधश्रद्धाओं का शिकार होना उन्हें कचोटता था। वे कहते थे कि ज़िंदगी भर फाकाकशी करते रहे आदमी की मौत के बाद मृत्युभोज में अच्छे-अच्छे पकवान खिलाए जाते हैं। इसके लिए लोग कर्जा क्यों लेते हैं. ?

दशरथ माँझी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन क्या वे हमें उन मिथकीय पात्रों की याद दिलाते प्रतीत नहीं होते, जैसे पात्र हमें पुराणों में मिलते हैं, फिर वह चाहे प्रोमेथियस हो या भगीरथ। ऐसी शख्सियतें, जो मनुष्य की उद्दाम जिजीविषा को प्रतिबिंबित कर रही होती हैं और अपनी कोशिशों से प्रकृति की दानव शक्तियों और इन्सानियत के दुश्मनों से लड़ रही होती हैं।

अपने जीवन का फलसफा बयान करते हुए उन्होंने एक पत्रकार को शायद इसलिए बताया था कि पहाड़ मुझे उतना ऊँचा कभी नहीं लगा जितना लोग बताते हैं। मनुष्य से ज़्यादा ऊँचा कोई नहीं होता।

प्रश्न :

१. 'पहाड़ से ऊँचा आदमी' शीर्षक से आपका क्या अभिप्राय है?

२. दशरथ माँझी सामान्य होकर भी असामान्य था। कैसे?

३. मनुष्य की इच्छाशक्ति के सामने असंभव भी संभव बन जाता है? अपने विचार बताइए।

SCERT TELANGANA

शब्दकोश

इस शब्दकोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक पर्याय भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं-

अ.	-	अव्यय	अ. क्रि.	-	अकर्मक क्रिया
क्रि.	-	क्रिया	क्रि. वि.	-	क्रिया विशेषण
पु.	-	पुल्लिंग	फा.	-	फारसी
मु.	-	मुहावरा	वि.	-	विशेषण
सं	-	संज्ञा	स.क्रि.	-	सकर्मक क्रिया
सर्व.	-	सर्वनाम	स्त्री.	-	स्त्रीलिंग

इस शब्दकोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना शुरू करने से पहले यह उचित होगा कि शब्दकोश देखने की सही विधि आप जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा-

- जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके प्रारंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढ़ा जाता है।
- शब्दकोश में शब्दों को इस वर्ण-अनुक्रम में दिया जाता है- **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ** के पश्चात् **क** से **ह** तक के सही वर्ण क्रम के अनुसार।
- **क्ष, त्र, ज्ञ** को **ह** के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए। **क्ष, क्** और **ष** का संयुक्त रूप है। अतः **क** से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर **क्ष** से प्रारंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
- **त्र, त्** और **र** का संयुक्त रूप है। अतः **त्र** से शुरू होने वाले शब्द **त** से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़े जाने चाहिए। **त्य** से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब **त्र** से आरंभ होनेवाले शब्द देखे जा सकते हैं।
- **ज्ञ, ज्** और **ञ** का संयुक्त रूप है। अतः **ज्ञ** से शुरू होने वाले शब्दों को **ज** से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। **ज** से संयुक्त होकर बनने वाला पहला वर्ण **ज्ञ** ही है। अतः जौहरी के बाद ही **ज्ञ** से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। **ज्ञ** के बाद **ज्य** से बनने वाले शब्द आते हैं।

SCERT TELANGANA

शब्दार्थ

अंत्येष्टि – स्त्री.(सं) मृतक कर्म, दाह कर्म
अकबकाना – वि. भौंचक्का होना, घबराना
अजीबो-ग़रीब – वि. अनोखा
अपन – सर्व. अपना
असीम – वि. जिसकी कोई सीमा न हो, अपार
अहमियत – वि. (अ.) महत्व
आँकना –ह्क्रि. अनुमान लगाना
आपा – पु.(सं.) अहं
आलम – पु.(अ.) दुनिया, माहौल
आलीशान – (वि.) शानदार
आवाजाहीह् – (स्त्री.) आना-जाना, आवागमन
आहि – अ.क्रि. है
इत्ते-सारे – वि. इतने सारे
ईज़ाद – क्रि. खोज, अन्वेषण
उजरत – वि.(अ.) मजदूरी, मेहनत का बदला, पारिश्रमिक
उजागर – वि. प्रकट करना
उपानह – पु. जूता
एसएमएस – अ. लघु संदेश सेवा
कर – पु.(सं.) हाथ
कसर –स्त्री.(अ.) घाटा पूरा करना, कमी
काढ़त –अ. क्रि. बाल बनाना
किरदार –पु. अभिनेता की भूमिका, चरित्र
कुमक –स्त्री.(फा.) फौजी टुकड़ी
कोर्ट मार्शल –पु. फौजी अदालत
खपत –स्त्री. माल की बिक्री, आपूर्ति
खमा –स्त्री. क्षमा
खयाल –पु.(फा.) विचार
खिताब –पु.(अ.) उपाधि, सम्मान
खुराफाती –वि. शरारती
खोंते –पु. घोंसले
गंतव्य –वि.(सं.) स्थान जहाँ किसी का जाना हो
गफ्फ़श –वि. गफ्स, घना बुना हुआ
गात –पु. शरीर
गारी –स्त्री. गाली, अपशब्द
गुडविल –अ. सुनाम, अच्छी छवि
गुहत –स.क्रि. गूँथना
गोता – पु.(अ.) पानी में डूबना
गोरस – पु. दूध, दही मक्खन, घी आदि
घमासान – पु. घोर, भयानक
घिसीपिटी – वि. जो बहुत दिनों से चली आ रही, पुरानी
घूरा – पु. कूड़े-करकट का ढेर
चकिसों – वि. चकित, विस्मित
चाम – पु. त्वचा, चमड़ा
चाव – पु. चाह, तीव्र इच्छा
चारपाई – स्त्री. खाट, छोटा पलंग
चिहाकर – स.क्रि. चौंककर, चकित होकर
जायजा – पु.(अ.) जाँच-परख
जुगाड़ – पु. उपाय
जुरत (जुरअत) – स्त्री. बहादुरी, साहस
जुरतो (जुरत) – अ.क्रि. जुटना, एकत्र होना, प्राप्त होना
जोए – पु. ढूँढ़ना, देखना, खोजना
जोटी – स्त्री. जोड़ी
झँगा – पु. ढीला कुरता
झुटपुटा – पु. सबेरे या शाम का समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज़ साफ़ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो
टहलुआ –पु. नौकर
डलिया – स्त्री. बाँस का बना एक छोटा पात्र
डामलफाँसी –पु. आजीवन कारावास का दंड, देश निकाला
डिस्क फॉर्म –रिकॉर्डिंग का एक रूप
ढरकी –स्त्री. कपड़ा बुनते हुए जुलाहे जिससे बाने का सूत फेंकते हैं, भरनी
ढँढोरि –स.क्रि. ढूँढ़ना
ढाँणी –स्त्री. (सं.) अस्थायी निवास, कच्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो

SCERT TELANGANA

ढाँढ़स	– पु. दिलासा, धीरज	पठवनि	–स.क्रि. भेजना, विदाई
ढोपा	– पु. लड़का	पनही	–स्त्री.जूता
तंद्रालस	– स्त्री. (सं.), वि.(सं.) नींद से अलसाया हुआ	परात	–स्त्री. थाली की तरह का पीतल आदि धातु से बना एक बड़ा और गहरा बरतन
तनख्वाह	– स्त्री. (फा.) वेतन, पगार	पर्दाफ़ाश	–पु. भेद खोलना, दोष प्रकट करना
तरकारी	– स्त्री. सब्जी	पाँख	–पु. पंख, पर
तह	– स्त्री. (फा.) गहराई	पाखी	–पु. पक्षी. चिड़िया
ताउम्र	– प्र.(सं.) स्त्री.(अ.) उम्र भर	पाछिली	–वि. पिछला
दड़बे	– पु. मुर्गियों के रहने की जगह	पात	–पु. पत्ता
दबीज	– वि. (फा.)मोटा, मजबूत	पार्श्वगायक	–वि.(सं.), पु.(सं.) पर्दे के पीछे से गाने वाला
दबैल	– वि. दब्बू		
दस्तावेज़	–स्त्री.(फा.) प्रमाण संबंधी कागजात, प्रमाण पत्र	पैतृक	–वि.(सं.) पूर्वजों का, पिता से प्राप्त
		प्रत्यूष	–पु.(सं.) प्रातःकाल, भोर
दहुँ	–पु. दस	प्रयाण	–पु.(सं.) प्रस्थान, मरना
दालान	–पु. बरामदा	प्रशस्ति पत्र	–स्त्री.(सं.) पु. प्रशंसा पत्र
दुपटी	–स्त्री. अंगोछा, गमछा	फकत	–वि.(अ.) केवल
दुहेली	–स्त्री. दुख, दुख में पड़ा हुआ, कष्ट साध्य	फबना	–अ.क्रि. सजना, शोभा देना
		फब्ती	–स्त्री. चोट करने वाली या चुभती बात
दिसि	–स्त्री. दिशा	फरमान	–पु.(फा.) राजाज्ञा
द्विज	–पु.(सं.) ब्राह्मण	फिकर	–स्त्री. चिंता, फिक्र
धर्मभीरु	–पु.(वि.) जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरने वाला	फैंटेसी	–वि. काल्पनिक
		फोकट	–वि. मूल्यरहित, मुफ्त
धींगा-मुश्ती	–वि.(स्त्री.)धक्का-मुक्की, लड़ना-भिड़ना, शरारत	बटालियन	–स्त्री.(सं.) पलटन
		बाँचना	–स.क्रि. पढ़ना, अवलोकन करना
धुआँधार	–पु.(वि.) ताबड़तोड़	बियाबान	–पु. जंगल, उजाड़खंड, निर्जन
नगीना	–सं.(पु.) नग, रत्न	बिलोकना	–स.क्रि. देखना, अवलोकन करना
नफासत	–स्त्री. सज्जा, सजा-सँवरा	बिवाइन	–स्त्री. पाँव की ऐड़ी का फटना
न्योता	–पु. निमंत्रण	बेगार	–स्त्री.(फा) बिना मजदूरी का काम
नाजुक	–वि. (फा.) कोमल	बेनी	–स्त्री.(सं.) चोटी
नायाब	–वि. बहुमूल्य, बेशकीमती	बैरी	–पु. दुश्मन
निद्रित	–वि.(सं.) सोया हुआ	भगोने-डोंगे	–पु. भोजन पकाने के बर्तन
निमित्त	–पु.(सं.) कारण	भिनसार	–पु. प्रातःकाल, सवेरा
पखने	–पु. पंख	भुई	–स्त्री.(सं.) पृथ्वी, भूमि
पगड़ी	–स्त्री. सिर पर लपेटकर बाँधा जाने वाला लम्बा कपड़ा	मिचया	–स्त्री. बैठने के उपयोग में आने वाली सुतली से बुनी छोटी/चौकोर खाट
पगा	–पु. पगड़ी	मनुहार	–पु. मनाना
पचि-पचि	–पु. बार-बार	मरहम-पट्टी	–पु.(अ.) स्त्री. जख्म का इलाज, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँधना
पटकथा	–पु. फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी		

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

SCERT TELANGANA

मल्लार	– पु.(अ.) मल्हार, संगीत का एक राग
मशगूल	–वि.(अ.) व्यस्त
महावत	–पु. हाथीवान
मातम	–पु. (अ.) शोक मनाना
मानि	–वि.(फा.) जैसा, अनुरूप, सरीखा
मामूल	–वि.(अ.) वह बात जो रोज की जाए, हमेशा की तरह
मुँगरी	–सं. गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने-पीटने के काम आती है
मुँडेर	–पु.(सं.) छत के आस-पास बनाई जाने वाली दीवार
मुखातिब	–वि.(अ.) देखकर बात करना
मुलुक	–पु. मुल्क, देश
मुस्तैद	–वि. तत्पर, तैयार रहना
म्यान	–पु. (फा.) तलवार रखने का कोष
मोरी	–स्त्री. नाली, गंदे पानी की नाली
यकीन	–पु.(अ.) विश्वास
लगुए-भगुए	–वि. पीछे चलने वाले, मेल-जोल के व्यक्ति
लटजीरा	–पु. चिचड़ा, एक पौधा
लटी	–स्त्री. लटकी हुई, लटकना
लथपथ	–वि. सना हुआ, तर
लफड़ा	–पु. उलझन, झंझट
लवाजिमा	–पु.(अ.) यात्रा आदि में साथ रहने वाला सामान
लशकरी	–पु.(फा.) पलटन, सेना
लस्टम-पश्टम	–अ. अंट-शंट, अव्यस्थित रूप
लोटी	–क्रि. लोटने वाली
वर्णनातीत	–वि. जिसका वर्णन न किया जा सके
वसुधा	–स्त्री. पृथ्वी
वाकई	–क्रि. वि. बिलकुल, सचमुच
वस्तु विनिमय	–पु. (सं.) पैसों से न खरीदकर एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना
शिखर	–पु. पहाड़ की चोटी
संवाद	–पु.(सं.) फिल्म में की जाने वाली बातचीत
सकत	–स्त्री. शक्ति, सामर्थ्य
सरापा	–अ.(फा.) सिर से पाँव तक पहना जाने वाला वस्त्र
सलाख	– स्त्री. सलाई, धातु की छड़
सवाक् फिल्म	–पु.(सं) मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म
साँसत	–कठिनाई में पड़ना, बड़ा कष्ट
सांगोपांग	–वि.(सं.) पूरी तरह, ऊपर से नीचे तक
सिटपिटाना	–अ.क्रि. भय या घबड़ाहट से सहम जाना
सिलसिला	–वि. संबंध, कड़ी
सिवा	–अ. (अ.) सिवाय, अलावा, अतिरिक्त
सींके	–पु. छींका जिस पर दूध-दही आदि रखा जाता है
सुमिरन	–क्रि. ईश्वर के नाम का जप (भक्ति का एक प्रकार), स्मरण
सुहावत	–वि. सुंदर/भला, सुहाना लगना
सेंत-मेंत का काम	– स्त्री.(अ.) वह काम जिसके लिए कुछ देना न पड़ा हो, बिना लाभ का काम
सौरभ	–पु. सुगंध, सुबास
स्वच्छंद	–पु. अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला
हटकि	–स्त्री. मनाही
हरकारा	–पु. दूत, डाकिया, संदेश पहुँचाने वाला
हरि-हलधर	–पु.(सं.) कृष्ण-बलराम
हस्ती	–वि.(सं.) अस्तित्व
हवाला	–पु.(सं.) उल्लेख करना, उद्धरण
हुलस	–अ. क्रि. उल्लास
हुनरमंद	–पु. (फा.) वि.कुशल, गुणी कारीगर
हैसियत	–स्त्री. (सं.) दरजा
हौले से	–अ. धीरे से

SCERT TELANGANA